कर्क लग्नफल

अनुक्रमणिका

ज्योतिषशास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागों में विभाजित ज्योतिषशास्त्र को वेदभगवान् का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगो में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिषशास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालविद्, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिष के लिए किया गया है।[5] स्वयं सायणाचार्य ने **'ऋग्वेदभाष्यभूमिका'** में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ 'कृत्तिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें।[7] कृत्तिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना संभव नहीं। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवे, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवे[8] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

---

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकंम्।
   वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तो कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।--पाणिनी शिक्षा, श्लोक/41
   मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्र. यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम्-फ. ज्यो. वि. बृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि सस्थितम् इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद व्रतमीमांसक ''ज्योतिषविवेक (पृ. 4) गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक सन् 1976
7. कृत्तिकास्वग्निमाधीत–तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1
8. एकाष्टकामां दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन्–तैत्तरीय संहिता 6/4/8/1

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुतिवाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अत: वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिषशास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतों में बीज कब बोना चाहिए? फसलें कैसी होंगी? वगैरा-वगैरा। हिन्दू षोडश-संस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल-मुहूर्त में ही किए जाते हैं। श्रुति कहती है।

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्रा:।
यच्च किंचित् कुर्वत सतां कृत्यामेवा कुर्वत॥1॥[1]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देवरहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्ररहित हो जाते हैं। शास्त्र आगे कहते हैं कि ऐसे यज्ञ यज्ञमान को नष्ट कर देते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय-लगाकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)
ज्युत + इस् =ज्योत् + इस्
ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार "ज्योतिष" सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिंग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।

'ज्योतिस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा करके ज्योतिषी और ज्योतिषिक: तीनों शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिषशास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्योतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[2]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र है। अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[3]

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[4]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[5]

1. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
2. ज्योतिषग्नौ दिवाकरं 'पुमान्नपुसंक-दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयो: इति मेदिनीकोष-1929, पृ. सं. 536
3. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ, सन् 1967 (पृ. सं. 321)
4. शब्द कल्पद्रुम खण्ड-2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550
5. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिषशास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिषशास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिषं की पुस्तक नहीं हैं तथापि ज्योतिष-सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया।[1] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक-सम्पत्ति'** में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[2]

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध-सिद्धांतों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक परिचय हमे **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ में मिलता है।[3] यह ग्रन्थ सम्भवत: ईसा पूर्व 1200 का है।

तब से लेकर अब तक ज्योतिषशास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।[4] इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक) कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है-**यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्**[5]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम् ।
उषरे वापितं बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[6]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत्, स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुआं, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत-अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अत: सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

---

1. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162
2. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ. गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
3. वैदिक सम्पति, पं. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, बम्बई पृ. 90
4. **छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽ पठ्यते**
   ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
   शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्
   तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते।।--पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41-42
5. Vedic Chronology and Vedanga Jyotisa&(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada, POONA CITY, page-3
6. ज्योतिर्निबन्ध-श्री शिवराज, (पृ. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालये पूना, पृ. 1

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ॥3॥[1]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चन्द्रमा घूम-घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चन्द्र-ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चन्द्रोदय, चन्द्रास्त, ग्रहों की शृंगोन्नति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम्॥4॥[2]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है व जन्म-मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार मे ज्ञान-विज्ञान की जितनी भी विद्याएं हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़तीं, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देतीं, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥5॥[3]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्रों व शुभचिन्तकों की लम्बी शृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिषशास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा मित्र नहीं है। क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जन सम्पर्क बनाता है। स्वयं वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[4] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलट-पुलट हो जाए।[5] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि **दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन**

---

1. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृष्ठ 2
2. जातकसार दीप-चन्द्रशेखरन् (पृष्ट 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज, मद्रास
3. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ 550
4. सुगम ज्योतिष-पं. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन 1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृष्ट 17
5. बृहत्संहिता, सांवत्सर सूत्राध्याय 1/37
6. बृहत्संहिता, सांवत्सर सूत्राध्याय 1/24

के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।[6] अत: जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान् व श्रेष्ठ ज्योतिषी को अपने पास रखना चाहिए।[1]

ज्योतिषशास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वर वादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसंधान परीक्षणों में संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल-तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुत: सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ों रुपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो बरसात तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक बरसात के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे में प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने में हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए। क्योंकि घड़ी की सुई के साथ-साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते हैं।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों में ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणों में, विपत्ति की घड़ियों में, या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर-मस्जिद या गिरजाघरों में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर अपने दु:ख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर-मस्जिद और गिरजाघरों में पड़े निर्जीव पत्थर तो बोलते नहीं, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध

---

1. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यं यथा नभ:।
   तथा सांवत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि।।-बृहत्संहिता, अ.1/24

ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उस ईश्वर तुल्य सम्मान देते हैं। भविष्यवक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्यवक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिषशास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है–

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥1॥[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र-म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो। इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली-भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो जाता है। इस दिव्य-ज्ञान की गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है। फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है।

इस श्लोक में 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारों के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्मय में गुरु का बड़ा महत्त्व है। अत: ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नहीं, अपितु सही समय (काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[2]

मेरे निजी शब्दों में '**ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।**'

अत: इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिषशास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निर्वीर्य (निष्प्राण) कहलाता है।[3]

❑❑❑

---

1. बृहत्संहिता, सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30
2. वक्री ग्रह (प्रकाशन-1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 140
3. यथा काष्ठमयः सिंहो यथा चित्रमयो नृपः।
तथा वेदावधीतोपिज्योतिशास्त्र बिना द्विजा:॥–वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध 20/ पृ. 2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी लग्नं ज्योतिः परं मतम्।
लग्नं दीपो महान लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरुः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि गुरु ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिर्थिन च नक्षत्रं न योगो नैन्दवं बलम्।
लग्नमेव प्रशंसन्ति गर्गनारदकश्यपाः॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चन्द्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है।।5।।

इन्दुः सर्वत्र बीजाम्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।
फलेन सदृशो अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चन्द्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान अभीष्ट फल को देने वाले होते हैं।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरितो यथा॥

ज्योतिविवरण में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है। वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं।।

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके फलादेश करना चाहिए।।

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिंत्यम्।
अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः॥

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में सम्पूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है।।

❑❑❑

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. मगदत्त जी राज व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में संकलित है जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो मेष लग्न में, क्रोध युक्त .और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता वृषभ लग्न।
तरह-तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण
मिथुन लग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्क लग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंह लग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्या लग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुला लग्न के तस्कर बालक, खेले जुआ और अपनी नारी।
वृश्चिक लग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेला खाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत् वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता धनु लग्न

मकर लग्न मन्द बुद्दि के, अपने धुन में वो भी मगन।
कुम्भ लग्न के पूत बड़े अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीन लग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? और लग्न का महत्त्व

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेंडेन्ट (Ascendant) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक "समय" विशेष के परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्मकुण्डली कहते हैं वह वस्तुतः 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते हैं। क्योंकि "लग्न" का गणितागणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुतः आकाश में दीखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है और दिन और रात में 60 घटी होती हैं। 60 घटी में बारह लग्न होते हैं। 60 में बारह का भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य

आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही "द्वादश घर" या "बारह भाव" कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखलाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली का सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा

में उदित होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे ''लग्न'' कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

9
7 रा.
10
प्रथम स्थान 8 लग्न
6
11
5
12
2 चं. शु.
4 गु.
1 के.
3 सू. बु.

मिथुन सु. बु. / वृष चं.शु.	प्रथम स्थान मेष केतु	मीन / कुम्भ
कर्क. गुरु	बंगाल	मकर
सिंह शनि / कन्या मं.	तुला राहु	धनु / वृश्चिक लग्न

मीन	मेष के.	वृष चं. शु.	मिथुन सु. बु.
कुम्भ	चेन्नई		कर्क गु.
मकर			सिंह श.
धनु	वृश्चिक लग्न	तुला रा.	कन्या मं.

चन्द्र 3 शुक्र 5 सूर्य 5 बुध 6	प्रथम स्थान के. 2	
गुरु 9	बंगाल	
श. 11 मं. 14	रा. 16	लग्न 17

पाश्चात्य मत

8 प्रथम स्थान
9
7 रा.
10
6 मं.
11
5
12
4 गु.
2 चं. शु.
1 के.
3 शु. बु.

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घं. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.12	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है। 1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।

विभिन्न पंचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न-भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय मानक समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का विशेष महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने ''लग्नं देहो वर्ग षट्कोऽगांनि'' लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार-

यथा तनुत्वादनभन्तरैव

परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।

बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः

ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

जैसे वृक्ष के बिना फल-पुष्प-पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः

जन्मपत्रिका निर्माण में ''बीजरूप लग्न'' ही प्रधान है तभी कहा गया है कि–''**लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्**''

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक **''ज्योतिष और आकृति विज्ञान''** पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन–उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता–जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित है। अतः अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

कर्क लग्न एक परिचय

1.	लग्नेश	–	चंद्रमा
2.	धनेश	–	सूर्य
3.	पराक्रमेश, खर्चेश	–	बुध
4.	सुखेश, लाभेश	–	शुक्र
5.	पंचमेश, राज्येश	–	मंगल
6.	षष्ठेश, भाग्येश	–	गुरु
7.	सप्तमेश, अष्टमेश	–	शनि
8.	त्रिकोणाधिपति	–	5–मंगल, 9–गुरु
9.	दुःस्थान के स्वामी	–	6–गुरु, 8–शनि, 12–बुध
10.	केन्द्राधिपति	–	1–चंद्र, 4–शुक्र, 7–शनि, 10–मंगल
11.	पणफर के स्वामी	–	2–सूर्य, 5–मंगल, 8–शनि, 11–शुक्र
12.	आपोक्लिम	–	3–बुध, 6 व 9–गुरु, 12–बुध
13.	त्रिकेश	–	6–गुरु, 8–शनि, 12–बुध
14.	उपचय के स्वामी	–	3–बुध, 6–गुरु, 10–मंगल, 11–शुक्र
15.	शुभ योग	–	1. मंगल, 2. गुरु
16.	अशुभ योग	–	1. शुक्र, 2. बुध, 3. शनि 4. सूर्य कुछ शुभफल भी
17.	निष्फल योग	–	1. गुरु+शुक्र, 2. गुरु+शनि
18.	सफल योग	–	1. चंद्र+मंगल, 2. चंद्र+गुरु, 3. मंगल+शुक्र, निकृष्ट है, 4. मंगल+गुरु, 5. मंगल+शनि
19.	राजयोगकारक	–	मंगल व गुरु
20.	मारकेश	–	शनि और सूर्य

21.	**पापफलद**	–	गुरु और शनि
22.	**शुभयुति**	–	?
23.	**अशुभयुति**	–	?
24.	**परमपापी**	–	बुध

विशेष-कर्क लग्न में मंगल पूर्ण योगकारक होता है। शनि मारक और साहचर्य से फल देता है।

❑❑❑

कर्क लग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

भार्गविन्दुसुतौ पापौ भूसुतांगिरसौ शुभौ।
एक एव ग्रह: साक्षाद्भूसुतो योगकारक:।।11।।
निहन्ता रविज्योऽन्ये-तु मानिनो मारकव्हया:।
(पापिनो)
कुलीरसंभवस्यैवं फलान्युक्तानि सूरिभि:।।12।।

दूसरा पाठ

शुक्रमंदबुधा: पापा: विदुर्धिषणभास्करौ।
राजयोगकर: साक्षात् एक एव धरासुत:।।13।।
भवेतां राजयोगस्य कारकौ गुरुभूमिजौ।
रवि: साक्षान्न हन्ता स्यान्-मारकत्वेन लक्षित:।।14।।
शुक्रादयो निहन्तारो भवेयु: पापिनो ग्रहा:।
कुलीरसंभवस्यैवं फलान्यूह्यानि सूरिभि:।।15।।

तीसरा पाठ

शुक्रमंदबुधा: पापा: शुभौ घिषणभूसुतौ।।16।।

पहला पाठ:—शुक्र और बुध ये अशुभ हैं कारण शुक्र केन्द्र और एकादश का स्वामी होता है और बुध तृतीय और द्वादश स्थान का स्वामी होता है, उसी प्रकार शनि मारक है कारण वह मारकेश और अष्टमाधिम है। मंगल और गुरु शुभ फल उत्पन्न करने वाले होते हैं। पाप ग्रह यदि केन्द्र के अधिपति हों तो वे अशुभ फल नहीं देते। ऐसा पूर्व में कहा गया है इसलिए

मंगल शुभ है क्योंकि त्रिकोण और दशम स्थान का अधिपति होने से राजयोग उत्पन्न: करता है इस प्रकार कर्क लग्न का शुभाशुभ फल समझना चाहिए।

दूसरा पाठ—कर्क लग्न हो तो शुक्र, शनि, बुध, गुरु और रवि अशुभ फल देते हैं। अकेला मंगल मात्र राजयोग कारक होता है। गुरु मंगल का योग हो तो वह राजयोग होता है। रवि मारक लक्षणों से युक्त हो फिर भी वह स्वयं मारक नहीं बनता है। शुक्र आदि करके अशुभ ग्रह मारक हो सकते हैं। कर्क लग्न में जन्म हो तो ज्ञातों से इस प्रकार शुभाशुभ फल जानना चाहिए।

स्पष्टीकरण—कर्क लग्न हो तो मंगल दशमाधिपति और पंचमाधिपति होता है। अर्थात् वह प्रबल राजयोग का कारक होता है। गुरु षष्ठ स्थान का भाग्य स्थान का स्वामी होता है। षष्ठ स्थान अशुभ और भाग्य स्थान शुभ ऐसी स्थिति में गुरु भाग्यधीश होने के कारण से उसका मंगल योग हो तो वह राजयोग कारक होता है।

इन तीनों ही पाठों में शुक्र और बुध को अशुभ फल देने वाले जो कहा है उसमें दो मत नहीं हो सकते। दूसरे और तीसरे पाठ में अशुभ ग्रहों में शनि को भी अशुभ ग्रह में डाला है। पहले और तीसरे पाठों में शुभ फल देने वाले ग्रहों में मंगल और गुरु की योजना की है। और दूसरे पाठ में गुरु और रवि लिए हैं। इनमें से मंगल को उड़ा दिया है और उसकी जगह रवि मारक स्थान मंगल योग यदि हो तो विशेष फलदायक होता है। बुध मारक लक्षणों से युक्त हो तो भी स्वयं मारक नहीं होता। कुछ स्थानों में बुध की जगह मंद: याने शनि ऐसा पाठ है। मारक लक्षणों से युक्त ऐसे बुधादि ग्रह मारक होते हैं। सिंह लग्न में जन्म हो तो ज्ञाताओं को इस प्रकार शुभाशुभ फल जानना चाहिए।

स्पष्टीकारण—वास्तविक कर्क और सिंह लग्न के शुभाशुभ ग्रह एक ही हैं। परन्तु पहले पाठ में शुक्र यदि मंगल से युति करे तो शुभ फल नहीं देते ऐसा कहा है यह बराबर है, कारण चतुर्थेश और भाग्येश मंगल को त्रिषडायपति (और दशमेश) शुक्र मिलता है। वैसे ही शुक्र दशम स्थान (केन्द्र का) का अधिपति है ''केन्द्राधिपत्य दोषस्तु बलवान गुरु शुक्रयो'' इस नियम के अनुसार शुक्र को दुययम (डबल) अशुभत्व का अधिकार प्राप्त हुआ। इसके अलावा शुक्र मंगल का शत्रु है। ''भावार्थरत्नाकर'' ग्रंथ में श्री रामानुजाचार्य ने कहा है कि सिंह लग्न को शुक्र और मंगल ये दशमेश-नवमेश होने पर भी इनका योग राजयोग के फल नहीं देते। पहले पाठ में शनि का विचार ही नहीं किया गया है और दूसरे पाठ में कुछ प्रतियों में बुध मारक लक्षणों से युक्त होने पर भी स्वयं मारक नहीं होता तो कुछ प्रतियों में शनि मारक लक्षणों से युक्त होने पर भी स्वयं मारक नहीं होता। वास्तविक बुध एकादश और द्वितीय स्थान का अधिपति है और शनि षष्ठ और सप्तम स्थानों का स्वामी है। द्वितीय और सप्तम ये मारक स्थान हैं। उसी प्रकार षष्ट और एकादश ये त्रिषडाय स्थान हैं। रवि और चन्द्रमा की विवेचन में से पूर्णत: स्थान नहीं है। मंगल भाग्याधिपति और चतुर्थाधिपति होने से श्लोक 11 के अनुसार अकेला राजयोग करने में समर्थ है। गुरु शुक्र का योग शुभफलदायक नहीं होने के कारण शुक्र तृतीयाधिपति

और दशमाधिपति और गुरु पंचमाधिपति और अष्टमाधिपति होने के कारण से और कोई भी ग्रह अष्टमेश से युक्त हो तो वह दोषी होता है, ऐसा ग्रंथ में कहा गया होने से यह योग दोषकारक माना गया है। सूर्य लग्नेश और वह लग्न (केन्द्र-त्रिकोण) का स्वामी होकर शुभ फल देने वाला है। चन्द्रमा व्ययेश और अशुभ फल देने वाला होता है। इसलिए उसका विवेचन नहीं किया गया है। परन्तु श्लोक 8 के अनुसार सूर्य और चन्द्रमा क्रमशः कर्क और सिंह लग्नों के लिए द्वितीयेश द्वादशेश होते हैं। परन्तु दोनों ग्रह की एक ही राशि से उन्हें सम माना गया है। और वे जिन स्थानों में स्थित हों उन स्थानों के अनुरोध से फल करते हैं अर्थात् उन स्थानों के अनुसार शुभाशुभ फल देते हैं।

❑❑❑

कर्क लग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	–	कर्क
2.	लग्न चिह्न	–	केकड़ा
3.	लग्न स्वामी	–	चन्द्र
4.	लग्न तत्त्व	–	जल तत्त्व
5.	लग्न उदय	–	पृष्ठ
6.	लग्न स्वरूप	–	चर
7.	लग्न अवधि	–	2 घंटा, 12 मिनट–सम
8.	लग्न दर्शन	–	श्रावण की पूर्णिमा को चन्द्रमा के साथ-साथ
9.	लग्न स्वभाव	–	सौम्य
10.	लग्न बली	–	रात्रि
11.	लग्न कान्ति	–	स्निग्ध
12.	लग्न दिशा	–	उत्तर
13.	लग्न लिंग व गुण	–	स्त्री, सतोगुणी
14.	लग्न जाति	–	ब्राह्मण
15.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	–	सौम्य स्वभाव कफ प्रकृति
16.	लग्न का अंग	–	छाती/सीना
17.	जीवन रत्न	–	मोती
18.	अनुकूल रंग	–	सफेद, क्रीम
19.	शुभ दिवस	–	सोमवार
20.	अनुकूल देवता	–	शिवजी
21.	व्रत, उपवास	–	सोमवार
22.	अनुकूल अंक	–	दो
23.	अनुकूल तारीखें	–	2/11/20/29
24.	लग्न वर्ण	–	गुलाबी
25.	लग्न धातु	–	कफ

26.	**लग्न शब्द**	–	हीन
27.	**लग्न समय जातक का प्रसव**	–	पैर से, कष्टपूर्वक
28.	**जन्म समय**	–	पिता घर से बाहर
29.	**जन्म समय नाल**	–	छूटी हुई
30.	**जन्म काल में रुदन**	–	देर से छींका
31.	**जातक भोजसारुचि**	–	ठण्डा, मीठा, थोड़ा, पतला, पेय सामग्री अधिक काम में लेने वाला
32.	**बालक की विशेषता**	–	वामांग में चिह्न, लहसन, गौरवर्ण, कोमल, नाक बड़ी
33.	**मित्र लग्न**	–	वृश्चिक, मीन, तुला
34.	**शत्रु लग्न**	–	मेष, सिंह, धनु, मिथुन, मकर व कुम्भ
35.	**व्यक्तित्व**	–	अध्ययन प्रिय, जलप्रिय, भावुक, कुशल प्रबंधक
36.	**सकारात्मक तथ्य**	–	कल्पनाशील, योजनाएं बनाने वाला, वफादार
37.	**नकारात्मक तथ्य**	–	सदा बीमार, अक्षमाशील, द्वेषी

❑❑❑

कर्क लग्न के स्वामी चन्द्रमा का वैदिक स्वरूप

चन्द्रमा (ग्रह) के अर्थ में ऋग्वेद काल मे 'चन्द्रमस्' शब्द अनेक जगह प्रयुक्त हुआ है।[1] किन्तु 'चन्द्र' शब्द का प्रयोग पहली बार अथर्ववेद में आया है।[2]

बहुचर्चित कालवाचक 'मास' (महिना) शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में चन्द्रमा के स्थान पर हुआ है।[3] इससे स्पष्ट है कि चन्द्रमा का 'मास' नाम ऋग्वेद समय में प्रचलित था।[4]

वैदिक साहित्य में चन्द्रमा व सोम की अभिन्नता का उल्लेख मिलता है।[5] क्योंकि ये दोनों ही वृद्धि और क्षय को प्राप्त होते हैं। हिलेब्राण्ड्ट सोम के सभी वर्णनों में चन्द्रमा का वर्णन (स्वरूप) देखते हैं।[6] सोम व चन्द्र में अभिन्नता सूचक इसी मन्त्र पर भाष्य लिखते हुए महर्षि दयानन्द कहते हैं—सोम द्वारा बारह मास बलवान है। यहां सोम का अर्थ चन्द्रमा है। सोम (चन्द्र) से पृथ्वी महत्वपूर्ण है और इन अश्विनी, भरणी आदि नक्षत्रों की गोद में सोम (चन्द्र) स्थित है।[7]

फलित ज्योतिष के अस्तित्व को सर्वथा न मानने वाले, ज्योतिष के कट्टर विरोधी स्वयं महर्षि दयानन्द 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' में इसी मन्त्र द्वारा चन्द्र ग्रह की रश्मियों के प्रभाव को स्वीकार करते हुए लिखते हैं—चन्द्रमा के प्रकाश और वायु से सोमलता आदि औषधियां पुष्ट

---

1. नवो नवो भवति जायमानोह्लां केतुरुषसामेत्यग्रम्।
   भागं देवेभ्यो विदधात्यायन्प्रचन्द्रमास्तितरते दीर्धमायु:।।

   —ऋग्वेद संहिता 10/85/19
2. चन्द्रयत्ते तपस्तन तं प्रति तपयो रुमानन्द्रेष्टि यं वयं द्विष्म:। —अथर्ववेद 2/22/1
3. सू^मासा मिथ उच्चरात:—ऋग्वेग 10/68/10
4. सूर्यमासा चिरन्ता दिविक्षिता धिया शमीनहुषी अस्य बोधत:

   —ऋग्वेद 10/92/12
5. सोमेनादित्या बलिन: सोमेन पृथिवी मही
   अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहित:।।

   —ऋग्वेद 10/85/2
6. वैदिक कोश (पृ. 573) बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, सन् 1963
7. ऋग्वेद भाषा भाष्य (द्वितीय भाग) पृ. 449

   - दयानंद संस्थान, वेद मंदिर, नई दिल्ली, सन् 1975

होती हैं और उससे पृथ्वी पुष्ट होती है। इसीलिए ईश्वर ने नक्षत्र लोकों के समीप चन्द्रमा को स्थापित किया।[8]

इस सोम के घटने-बढ़ने से महीनों का जन्म होता है।[9] ऋग्वेद 10/85/5 का अर्थ करते हुए दयानन्द लिखते हैं–हे देव सोम जो तुझे पीते हैं तो चन्द्रमा घटता है, मानो देव उसे पी जाते हैं परन्तु वायु सोम का रक्षक है। वर्षों का महीना करने वाला है। मासों में वर्ष बन जाते हैं और मास चन्द्रमा से नापे जाते हैं। सूत्रात्मा वायु सब लोकों का रक्षक है, चन्द्र का भी है।[10]

चन्द्रमा का वैदिक नामक 'पंचदश' भी है। क्योंकि वह पन्द्रह दिन में क्षीण होता है और पन्द्रह दिन में पूरा होता है।[11] अमावस्या के दिन चन्द्रमा का न दिखलाई देना तथा शुक्ल प्रतिपदा को पुनः दिखलाई देने का उल्लेख वेदों में मिलता है।[12] इस चन्द्रमा को सूर्य रश्मि अर्थात् सूर्य द्वारा प्रकाश प्राप्त करने वाला कहा गया है।[13] यह चन्द्रमा नक्षत्रों के बीच रहता है।[14]

अथर्ववेद में चन्द्र–ग्रहण का उल्लेख मिलता है। साथ ही उस काल विशेष में होने वाले अनिष्ट से आशंकित होकर ऋषि ने शान्ति के लिए प्रार्थना भी की है।[15]

यजुर्वेद में चन्द्रमा को मानसिक शक्ति का प्रेरक ग्रह माना गया है।[16] ज्योतिष में भी चन्द्रमा को मन का कारक ग्रह माना गया है।[17]

---

8. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका (पृ. 449)
   वैदिक यन्त्रालय अजमेर, सन् 1920
9. यत्वादेव प्रपिवन्ति तत आ व्यायसे पुनः।
   वायुः सोमस्य रक्षिता समानां मास आकृतिः।।

   ऋग्वेद 10/85/5

10 ऋग्वेद भाषाभाष्य (द्वितीय भाग) पृ. 449
11. चन्द्रमा वै पंचदशः। एष हि पंचदश्याम् पक्षीयते। पन्चदश्यामापूर्यते। तैत्तिरीय ब्राह्मण 1/5/10
12. चन्द्रमा अमावस्यायामादित्यगनु प्रविशति आदित्य हैं चन्द्रमा जायते। ऐतरेय ब्राह्मण 40/5
13. सूर्यरश्मिचन्द्रमा गन्धर्वः। तैत्तरेय संहिता 3/3/7/1
14. अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः- ऋग्वेद-19/9/10, अथर्ववेद 6/128
15. चन्द्रमामनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। -यजुर्वेद कण्डिका 31/12
16. मनश्च हिमगुः बृहज्जातक अ. 2/1

चन्द्रमा का पौराणिक स्वरूप

1. **प्रिय पात्र**–वंशपात्र
2. **प्रिय अन्न**–तदुंल
3. **प्रिय वस्तु**–कर्पूर
4. **प्रिय रत्न**–मौक्तिक
5. **प्रिय वस्त्र**–श्वेतवस्त्र
6. **प्रिय पशु**–वृषभ
7. **प्रिय धातु**–रौप्य
8. **प्रिय वस्तु**–धृतकुम्भ
9. **प्रिय मित्र**–शंख 11000
10. **प्रिय मण्डल**–चतुस्र (अग्निकोण में)
11. **प्रिय धूप**–गुग्गल
12. **प्रिय निवास**–यमुना तीर
13. **गोत्र**–आत्रेय
14. **प्रियवर्ण**–श्वेत वर्ण
15. **प्रिय राशि**–कर्क (स्वगृही)
16. **उच्च राशि**–वृष
17. **जप संख्या**–11,000

चन्द्रदेव महर्षि अत्रि के पुत्र हैं। चन्द्र देवता को सर्वमय कहा गया है, क्योंकि ये सोलह कलाओं से युक्त हैं तथा मनोमय, अन्नमय, अमृतमय पुरुष स्वरूप भगवान हैं। चन्द्र देवता ही सभी देवता, पितर, मनुष्य, भूत, पशु, पक्षी, सरीसृप और वृक्ष आदि प्राणियों के प्राण का आप्यायन करते हैं (श्रीमद्भ 5/22/10)।

ब्रह्मा ने चन्द्र देवता को बीज, औषधि, जल तथा ब्राह्मणों का राजा बना दिया। प्रजापति दक्ष ने अश्विनी, भरणी आदि नाम वाली सत्ताईस कन्याएं चन्द्र देवता को ब्याह दीं। ये सत्ताईस नक्षत्र के रूप में जानी जाती हैं। (हरिवंश हरि. पर्व 25/4–22)। ये सभी पत्नियां शील और सौन्दर्य से सम्पन्न तथा पतिव्रता-धर्मधारिणी हैं। इस तरह इन नक्षत्रों के साथ चन्द्र देवता परिक्रमा करते हुए सब प्राणियों के पोषण के साथ-साथ पर्व, संधियों एवं विभिन्न मासों का विभाग किया करते हैं(महाभा., वन. 163/132)।

महाभारत में लिखा है कि पूर्णिमा को चन्द्रोदय के समय तांबे के बर्तन में मधुमिश्रित पकवान को यदि चन्द्र देवता को अर्पित किया जाए तो इससे इनकी तृप्ति तो होती ही है, साथ ही आदित्य, विश्वेदेव, अश्विनीकुमार, मरुद्गण और वायुदेव भी प्रसन्न और तृप्त होते हैं।

वर्ण–चन्द्र देवता का वर्ण श्वेत है।

वाहन—इनका वाहन रथ है। इस रथ में तीन चक्र होते हैं। रथ में दस घोड़े जुते रहते हैं। सब घोड़े दिव्य, अनुपम और मन के समान वेगवान होते हैं। इनके नेत्र और कान भी श्वेत होते हैं। ये स्वयं शङ्ख के समान उज्ज्वल हैं (मत्स्यपु. 126 । 47–50)।

परिवार—चन्द्र देवता की नक्षत्र-नाम वाली अश्विनी, भरणी आदि सत्ताईस पत्नियां हैं। इनके पुत्र का नाम बुध है, जो तारा से उत्पन्न हुए हैं। चन्द्रमा के अधिदेवता अप (पार्वती) और प्रत्यधि देवता उमा हैं।

इनकी प्रतिमा का स्वरूप इस प्रकार है—

श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः श्वेतवाहनः।
गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्त्तव्यो वरदः शशी॥

(मत्स्यपु. 94/2)

'चन्द्र देवता गौरवर्ण हैं। इनके वस्त्र, अश्व और रथ तीनों श्वेत हैं। इनके एक हाथ में गदा और दूसरे हाथ में वरदमुद्रा है।'

चन्द्रमा प्राण है

ज्योतिष शास्त्र में कहा गया है देह जन्म लग्न है, षडवर्ग इसके छः अंग हैं। चन्द्र प्राण है, अन्य ग्रह धातु रूप है, प्राण नष्ट होने पर सभी नष्ट होते हैं। अतः चन्द्र का प्रथम विचार करना चाहिए। सूर्य जगत की आत्मा है। तो जगत् का प्राण चन्द्र है। ये दोनों ही ज्योतिष के साक्षी हैं। तभी ज्योतिष प्रत्यक्ष शास्त्र बनता है। ''प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चंद्रार्कौ यत्र साक्षिणौ'' यह उक्ति प्रसिद्ध है। बाकी सभी ग्रह ज्योतिर्मण्डल को प्रगट प्रकाश देने वाले हैं।

लग्नं देहो वर्गषट्कोऽगांनि, प्राणश्चंद्रो धातुरन्ये ग्रहेन्द्राः।
प्राणे नष्टे सर्वनष्टं विचिन्त्यं तस्माच्चिन्त्यं चन्द्रराशिप्रधानम्॥

छान्दोग्योपनिषद् में एक आख्यान है। कुलदेश में ओले गिरने व अतिवृष्टि से अकाल पड़ गया था। वहां हाथी वानों का एक गांव था। इसमें महर्षि उसस्ति अपनी पत्नी के साथ रहते थे। कई दिनों तक उपवासी रह जाने के बाद वह राजा के वहां यज्ञ में भाग लेने घर से निकल पड़े। रास्ते में उन्हें एक महावत मिला। उसस्ति ने उससे अन्न मांगा। उसने कहा मेरे पास उबले हुए उड़द तो हैं पर झूठे हैं। यदि आप कहें तो इसमें से कुछ दे दूं। आपत् धर्म समझकर महर्षि ने उससे उड़द ले लिए। बलि वैश्वादि कर्म करके, देवताओं को भोग लगाकर कुछ उड़द खा लिए। जब उसने पानी दिया तो ऋषि ने कहा कि पानी के झरने सब जगह बह रहे हैं। अतः आप द्वारा प्रदत्त जल ग्रहण करना आपत् धर्म में शुमार नहीं है। अतः मैं यह अन्न ही प्राण रक्षार्थ ले चुका हूं। परन्तु उसकी पत्नी ने कहा कि मैं अभी कुछ दिन और उपवास कर सकती हूं। अतः मैं इन्हें ग्रहण नहीं करूंगी। यह चर्चा महावत के द्वारा सर्वत्र फैल भी गई।

राजा के यज्ञ में ऋत्विजों का वरण हो चुका था। वे लोग स्तुति कर्म प्रारम्भ करने जा रहे थे कि उसस्ति अपनी पत्नी सहित यज्ञशाला में पहुंच गए। पद रिक्त न रहने से उसस्ति ऋषि

का यज्ञ में प्रवेश पाना असम्भव था। प्रवेश पाए बिना धन कैसे प्राप्त होता तब उसस्ति ने यज्ञ के होते उद्‌गापि और प्रतिहर्ता आदि से प्रश्न किया कि तुम जिस देवता की स्तुति करने जा रहे हो, उस देव को बिना जाने स्तुति करोगे तो तुम्हारा सिर गिर जाएगा। वे सब इसका उत्तर न दे सके। यज्ञ में सन्नाटा छा गया। इससे प्रभावित होकर राजा ने उसको सम्मानित कर आचार्य का आसन दिया। तब उसस्ति ने उन्हें सब देवताओं का ज्ञान कराया।

(छन्दोग्य 1/10/11)

इस आख्यायिका से स्पष्ट है कि जिस देवता की हम पूजा करने जा रहे हैं। उनके स्वरूप का ज्ञान आवश्यक है। लिखा है–

जन्म, भू, गोत्रं, अग्निश्च, वर्ण स्थानं च मुख्यतः।
अज्ञात्वा कुरूते शान्तिं ग्रहास्तनोवमानिताः।।

ग्रहों के जन्म, भूमि, स्वरूप, उनका गोत्र, उनकी अग्नि उनकी वर्ण आदि जाने बिना कोई उनका पूजन या जप या शांति करना चाहता है तो ग्रह इससे अपने को अपमानित मानते हैं। तब वे फलदायी नहीं होते। अतः इसका स्वरूप जानना अति आवश्यक है।

हमारे ग्रह मण्डलों में आज लोग चन्द्रमा तक पहुंच गए हैं, पर वह चन्द्रमा का भौतिक स्वरूप हो सकता है। उसका देवत्व स्वरूप कभी नहीं हो सकता है। ग्रह शांति, ग्रह पूजन व ग्रह के फल के स्वरूप का ज्ञान करने में उसका देवत्व काम करता है। जैसे पृथ्वी का भौतिक रूप है पर उसमें भूमि देवता का देवत्व भावना से जुड़ा एक अलग स्वरूप है। जल यह भौतिक रूप है पर वरुण का देवत्व अलग है। जैसे मनुष्य एक भौतिक रूप हाड़-मांस व रुधिर से बना है। पर मनुष्य अलग है। इसी तरह ग्रहों का भौतिक स्वरूप और उसका देवत्व भिन्न है।

ब्रह्मा के पुत्र अत्रि थे और चंद्र महर्षि अत्रि के पुत्र हैं। भागवत में इसकी कथा है। तीनों देव, ब्रह्मा, विष्णु, महेश अपनी पत्नियों के कहने से सती अनसूया का सतीत्व भंग करने के लिए उसके घर भिक्षा मांगने गए थे। वहां नग्न भिक्षा की याचना करने पर उसने अपने पतिव्रत प्रभाव से तीनों को बालक बना कर दूध पिलाया। तब ब्रह्मा के अंश स्वरूप अत्रि के नेत्रों से अमृतमय चंद्रमा का जन्म हुआ।

क्षीर सागर के मंथन से अमृतमय चंद्र की उत्पत्ति है। चन्द्रमा लक्ष्मी का सहोदर भ्राता है। इसलिए फलित ज्योतिष में 'द्रव्यदाता तु चन्द्रमा' कहा गया है। व्यक्ति धनवान होगा या दरिद्र इसका सहज ज्ञान चन्द्रमा की स्थिति से हो जाता है। धन्वन्तरि के साथ अमृत कलश था उसमें ही सुधांशु चंद्र की उत्पत्ति हुई। चाहे जो हो चंद्र को अमृतमय माना गया है। अमृत मृत व्यक्ति को अमर बनाने में समर्थ है। अतः चन्द्र को जगत् का प्राण माना जाता है।

द्विजराज सुरश्रेष्ठ, तारापत्यत्रिनन्दनः।
औषधीनां सुगमनं सोमं मृगांकलांछनः।।

अहोचन्द्रः जगन्प्राण यमुना विषयोद्भवः।
सश्ववेताभि गोत्रेय गदावाणी वरप्रदः॥
दशाश्व वाहनो याहि उमा रूपी समाविशः।
हुताशन दलैकेव मंत्रेणा श्वग्निनार्चितः॥

यह चन्द्र ब्राह्मणों का राजा, देवताओं में श्रेष्ठ तारापति, अग्निनन्दन, औषधिनाथ, मृगांकलोछन तथा मृग पर सवारी वाला जगत् का प्राण यमुना में पैदा हुआ। अत्रि गोत्र वाला, दस अश्वों के वाहन वाला, श्वेत रंग वाला, एक हाथ में वर मुद्रा व दूसरे हाथ में गदा धारण किए हुए है। पार्वती का स्वरूप है। हुताशन इसका दल, अश्वनि मुंछ से पूजा जाता है। चन्द्र सभी पितर, मनुष्य, भूत, पशु, पक्षी, सरीसृप और वृक्ष आदि प्राणियों को प्राणदान कर अप्येयित करता है। (श्री मद्भा. 5/22/10)

ब्रह्मा ने चंद्र को बीज, औषधि, जल तथा ब्राह्मणों का राजा बना दिया। "सोमो अस्मांक ब्राह्मणं राजा" प्रसिद्ध है। चन्द्रमा मन है। यह वेदों में प्रख्यात है। "चन्द्रमा मनसो जातः" यह विराट् पुरुष के मन से उत्पन्न हुआ है। दक्ष प्रजापति ने अश्विनी, भरणी आदि अपनी सत्ताईस कन्याएं चंद्र को ब्याह दीं। यह उड्पति कहलाया। ये सत्ताईस कन्याएं सत्ताईस नक्षत्र हैं।
(महाभारत वन 163/32)

महाभारत में लिखा है कि पूर्णिमा को चंद्रोदय के समय तांबे के बर्तन में मधुमिश्रित पकवान को यदि चंद्र को अर्पित किया जाए तो इससे इनकी तृप्ति तो होती ही है साथ ही आदित्य विश्वदेव, अश्विनी कुमार, मरूभदण और वायुदेव भी प्रसन्न और तृप्त होते हैं।

क्योंकि चन्द्र देव को सर्वोमय कहा गया है। वह सोलह कलाओं से युक्त है तथा मनोमय, अन्नमय, अमृतमय पुरुष स्वरूप भगवान है।

स्वरूप–वर्ण श्वेत है, वाहन रथ उसके 3 चक्र हैं, रथ में 10 घोड़े जुते रहते हैं। सभी अश्व मन की गति से चलने वाले हैं। ये शंख के समान उज्ज्वल हैं। (मत्स्य पुराण 126/47-50) यह बुद्धिमान व चंचल है।

चन्द्र-परिवार–चन्द्रमा राजा है। 27 नक्षत्र इसकी रानियां हैं जो तारा से उत्पन्न हैं। अधिदेवता अप और प्रत्यधि देवता उमा है। लक्ष्मी सहोदरी है।

चन्द्र- द्विपाद स्त्री ग्रह है। अवस्था तारुण्य और प्रौढ़ावस्था। मणि-स्वच्छ मोती, चंद्रमणि, [illegible] जल, दिशा वायव्य। उदय- पूर्व या पश्चिम, गृह चतुष्कोण, ग्रहमण्डल में अग्नि कोण में स्थित होता है। ऋतु-वर्षा, क्रीड़ा स्थान नदी-तालाब, प्रदेश-वनदेश, वर्ण-वैश्य, गुण-सत्वगुण, तत्व- जल तत्व, धातु-रक्त, रस-लवण, काल-क्षण, दृष्टि-समदृष्टि 7वीं दृष्टि प्रमुख है। चांदी इसकी प्रमुख धातु है। यह भावुकता प्रधान है। सौन्दर्य का उपासक है।

[illegible] शुक्ल पक्ष की एकादशी से कृष्ण पक्ष में पंचमी तक चन्द्रमा अति शुभ फल देता है और बलवान होता है।

- पंचमी से अमावस्या तक चन्द्रमा निर्बल और अशुभ होता है और अशुभ फल देता है।
- शुक्ल पक्ष की अष्टमी से कृष्ण पक्ष की सप्तमी तक चन्द्रमा पूर्ण बली होता है।
- कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की सप्तमी तक चन्द्र क्षीण होता है। यह महर्षि वशिष्ठ जी का मत है।
- चन्द्रमा कृष्ण पक्ष में रोज घटता है और शुक्ल पक्ष में बढ़ता है। पूर्णिमा को पूर्ण बली होता है। कहते हैं यह शुक्राचार्य की श्राप के कारण है। वैसे इसकी 16 कलाएं मानी गई हैं पर 9 कला शिवजी ने विषपान करते वक्त सिर पर धारण कर ली थीं। यह विष को भी अमृत बनाता है। अत: 15 दिन घटता है अमावस्या को शून्य कला होती है।
- चन्द्रमा प्रतिपदा को कभी-कभी उदया होता है या फिर द्वितीय को अवश्य दिखाई देता है। अत: प्रतिपदा को अध्ययन काल निषेध है।
- चन्द्रमा शांत व शीतल प्रकृति का है। आंखें सुन्दर, मोहक, गौरवर्ण, कद ऊंचा, केश घुंघराले।
- शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से दशमी तक मध्यमबली इसके बाद 10 दिन अतिबली, फिर क्षीण हो जाता है अत: निर्बल बनता है।
- बलहीन चन्द्र भी शुभ ग्रह गुरु, शुक्र से देखा जाए तो शुभ फल दे देता है। दक्षिणायन में और संधिकाल छोड़कर अन्यत्र बलवान होता है।
- कर्क और वृष राशि में तथा सोमवार को तथा द्रेषकाण, होरा में स्वगृही हो, राशि के अंतिम भाग में, शुभ दृष्टि, रात्रि में चौथे भाव में, दक्षिणायन में बली होगा।
- शुभ ग्रह चन्द्र को देखें तो राजयोग होता है।
- इसके रोग–पांडु जल से उत्पन्न रोग दमा, खांसी, स्त्री सम्बन्ध से होने वाले रोग, धातुक्षीणता, पागलपन, देवियों से होने वाली पीड़ाएं होती हैं।

कारकत्व–उच्च गृह स्वामी की पत्नी, जनता, प्रकाशक, घी, तेल, रक्त, छापाखाना, दूध, वनस्पति, वैधक, जन्तुशास्त्र, रानी, चावल, कपास, सफेद वस्त्र, नर्स, मिड वाइफ, इंजीनियर, दमा, मोह, फेफड़े, पागलपन, भावुकता, चालाक, चतुराई।

लग्नेश–कर्क लग्न में चन्द्रमा लग्नेश होगा। कर्क लग्न बलवान हो तो धन, मान में वृद्धि, प्रसन्नता, स्त्री वर्ग से लाभ, तरल पदार्थो में लाभ, स्वास्थ्य की सुन्दरता दया का भाव और चन्द्र जहां बैठा हो उस भाव का विशेष लाभ होगा। निर्बल होगा तो चंद्र से सम्बन्धित रोग देगा व इन्हीं वस्तुओं का अनिष्ट फल देगा।

धनेश–मिथुन लग्न में चन्द्रमा धनेश होगा। मिथुन लग्न बली होगा तो धन, सम्पत्ति, खजाना, बैंक-बैलेंस में बढ़ोतरी करेगा, कुटुम्ब सुख, विवाह, विद्या में उन्नति भाषण शक्ति तेज करेगा। आंखों में ज्योति उत्तम, माता व भाई व बड़ी बहनों की उन्नति, पुत्र को मान, खाने-पीने की वस्तुएं अच्छी व पर्याप्त मिलें। निर्बल होगा तो उपरोक्त बातों का उलटा फल करेगा। मारकेश का काम करेगा। जीभ में दोष हकलाहट पैदा करेगा।

पराक्रमेश–लग्न वृषभ बलवान हो तो थोड़ा धन तो मिलेगा ही, छोटे भाई-बहनों की उन्नति होगी। अच्छे मित्र मिलेंगे। पराक्रम बढ़ेगा। लेखन शक्ति बढ़ेगी। नौकर-चाकर का सुख होगा। सर्वत्र जीत होगी। निर्बल होने पर धन की आय खूब होगी परन्तु भाई-बहनों से प्रेम की कमी, पराजय, माता की आंखों को कष्ट होगा। चंद्र जहां जन्म कुण्डली में बैठा होगा उस भाव से सम्बन्धित वस्तुओं की जानबूझ कर हानि होगी। ऐसा चंद्र जितना निर्बल होगा धन बढ़ेगा।

सुखेश–मेष लग्न में चन्द्रमा सुखेश, चतुर्थेश होगा। लग्न मेष बली होगा तो उल्लास, उत्साह और शांति मिलेगी। जन-सम्पर्क अच्छा रहेगा। मामा, माता का प्यार बढ़ेगा। यदि चंद्र पर शुक्र दृष्टि है तो वाहन, भवन के सुख प्राप्त होंगे। भ्रमण अच्छा होगा। विदेश में चांस मिलेंगे। जातक उन्नति की तरफ बढ़ेगा। शुभ कार्य होंगे। यश मिलेगा। श्वसुर का धन बढ़े। छोटे भाई-बहनों की उन्नति होगी। निर्बल है तो विपरीत फल होगा। क्रोध, वैराग्य, उदासीनता बनेगी। चंद्र, बुध, सूर्य, मंगल युति हो और राहु व शनि से ये पीड़ित हो तो मस्तिष्क के रोग होंगे। अधिक पाप प्रभाव हो तो पागलपन होगा। चंद्र और चौथे भाव केवल राहु का प्रभाव रक्त चाप देगा। माता रोगी रहेगी। मानसिक क्लेश होंगे। स्वयं की छाती के रोग होंगे। धन का नाश होगा। चन्द्र सातवें भाव में राहु से प्रभावित हो तो व्याभिचार बढ़ेगा।

पंचमेश-मीन लग्न मे चन्द्रमा पंचमेश लग्न मीन बली होगा तो मंत्रणा शक्ति बढ़ेगी। इष्टदेव के प्रति भक्ति दृढ. होगी। सट्टे से लाभ होगा। पुत्री का जन्म हो। रोजमर्रा की आय चंद्र दशा में बढ़ती है। निर्बल होने पर इसके विपरीत फल होंगे। भाग्य हानि कारक होगा। स्मरण शक्ति कम होगी। चन्द्र व पांचवें भाव पर राहु व शनि का प्रभाव हो तो योजनाएं असफल रहेंगी। सट्टे में हानि होगी। बुध-चन्द्र-गुरु इकट्ठे हों व अलग रहे और उन सब पर राहु व शनि का प्रभाव हो तो मस्तिष्क के रोगों का शिकार बनेगा। बहुत पाप प्रभाव से पागलपन पिता पक्ष में हानि करेगा।

षष्ठेश–कुम्भ लग्न में चन्द्रमा षष्ठेश होने से पाप फलप्रद है। लग्न कुम्भ यदि बलवान है तो धन का मध्यम सुख, माता के छोटे भाइयों की वृद्धि करता है। शत्रुओं में कमी। स्वास्थ्य की सुन्दरता। यदि लग्नेश शनि से युति करे तो बहुत धन देता है। पुत्रों को बढ़ाता है।

यह निर्बल होगा तो भी धन की वृद्धि करेगा। पर मातृ पक्ष में कष्ट रहेगा। शनि चंद्र युति भी पीड़ित होगी तो रक्त दोष देगी। बड़े भाई को कष्ट। शत्रु ज्यादा होंगे। पुत्र के धन की हानि होगी। चंद्र पर राहु व शनि का प्रभाव हो तो पुत्र विद्या में असफल रहे।

सप्तमेश–मकर लग्न में चन्द्रमा सप्तमेश होने से पाप फलप्रद है। लग्न मकर यदि बलवान है तो अपनी दशा में विवाह सुख देगा। कामवासना व व्यापार बढ़ाएगा। राज्य से लाभ। मान व धन में वृद्धि। भूमि, जायदाद, वाहन सुख तब देगा जब चन्द्रमा शुक्र से सम्बन्धित हो। चन्द्र यदि निर्बल है तो और पाप प्रभावी है तो रोगी बनाएगा। व्यापार में हानि आदि उल्टा फल करेगा।

अष्टमेश–धनु लग्न में चन्द्रमा अष्टमेश होने से पापी है। धनु लग्न यदि बली हो तो साधारण धन देगा। विज्ञान में या समस्या के अनुसंधान में लगेगा। स्वास्थ्य साधारण रहेगा। यदि

निर्बल पाप प्रभावी है अचानक शारीरिक कष्ट दशा में देगा। धन की कमी रहेगी। अनुसंधान में असफलता। यदि अष्टम भाव और अष्टमेश चन्द्र दोनों पीड़ित हों तो विदेश यात्रा भी होगी। यदि चन्द्र-शनि सम्बन्ध रहे तो विद्या हेतु भी विदेशी यात्रा सम्भव।

भाग्येश–वृश्चिक लग्न में चन्द्रमा भाग्येश होने से योगकारक है। लग्न वृश्चिक यदि बली है तो धर्मप्रिय होगा। उच्च विचार बनें। भाग्य वृद्धि धन वृद्धि हो। पिता का धन मान बढ़े। साले सालियों के धन में वृद्धि हो। पौत्री की प्राप्ति दशा में हो। छोटी बहन के पति की वृद्धि, राज्य कृपा दृष्टि, सट्टे के व्यापार में लाभ। पुत्र की उन्नति। पापी निर्बली चंद्र हो तो इन्हीं का उलटा फल हो। व्यापार व नौकरी में भारी हानि। पिता को आर्थिक कष्ट हो।

राज्येश–तुला लग्न में चन्द्रमा राज्येश होने से राजयोगकारक है। लग्न तुला यदि बली है तो राज्य सत्ता व अधिकार प्राप्ति हो। मान व यश मिले धन में वृद्धि। दशा भुक्ति में सास से धन मिले। यज्ञ हो, परोपकार बने। महत्वाकांक्षा व कार्यों में सफलता हो। दशमेश चन्द्र 7वें हो तो प्रेम विवाह। यदि चन्द्र क्षीण व पाप प्रभावी निर्बल हो तो राज्याधिकारियों से परेशानियां आती हैं। सर्वत्र विफलता मिलती है। यदि रा. श. के प्रभाव हो। यह योग धन में कमी भी लाता है। नास्तिकता बढ़ती है।

लाभेश–कन्या लग्न में चन्द्रमा लाभेश होगा। चन्द्रमा यहां 'उपचय' का स्वामी होने से पापी है। लग्न कन्या यदि बली है तो विशेष धन मिलता है। स्त्री वर्ग से लाभ प्राप्त हो। शुभ कार्य में समय लगता है। बड़े भाई या मित्र की सहायता मिले। छोटे भाई का भाग्य बढ़ता है। पुत्री को पति प्राप्त होता है अथवा दामाद की उन्नति होती है। चन्द्र-शुक्र संयोग हो तो बहुत धन प्राप्ति होती है। यदि निर्बल है तो विपरीत फल व माता के स्वास्थ्य के लिए भी हानिप्रद बनेगा। पुत्रों को रोग देगा।

द्वादशेश–सिंह लग्न में चन्द्रमा खर्चेश होगा। पाप साहचर्य से ''मारक'' का काम करेगा। क्योंकि यह त्रिकेश है। सिंह लग्न यदि चन्द्र द्वादशेश होकर बली हो शुभ प्रभाव में है तो धन वृद्धि करेगा। शय्या सुख देगा। शुभ व्यय कराएगा।

पाप प्रभावी हो तो आंख में रोग खास कर बांई आंख को कष्ट हो। नशे या व्यसन में व्यय बढ़े, जेल जाने के योग बने। पिता को कष्ट छोटे भाई के मान की हानि। पुत्र को कष्ट रहे।

चन्द्र से बनने वाले योगायोग–

1. सूर्य को छोड़कर चंद्र से 12वें ग्रह होंगे तो 'अनफा योग' श्रेष्ठ धन योग और दूसरे घर में ग्रह हो तो 'सुनफा योग' दोनों तरफ ग्रह होंगे तो '**दुरधरा योग**' बनेगा। इन योगों में व्यक्ति धन धान्य सम्पन्न बनता है।
2. चन्द्र के आगे-पीछे कोई ग्रह न हो। केवल सूर्य या राहु हो तो भी ''केमद्रुम योग' बनता है। यह योग व्यक्ति को दरिद्री बनाता है। जातक आर्थिक स्थिति विषम रहती है चाहे अन्य धन योग कितने भी हों। चन्द्र के साथ शुभ ग्रह, लग्न या चन्द्र से केन्द्र में शुभ ग्रह हो खासकर गुरु हो तो केमद्रुम भंग हो जाता है और **गजकेसरी योग** बन जाता है।

3. चंद्र से 6, 7, 8वें भावों में शुभ ग्रह हो तो चंद्र लग्नाधि योग बनता है। यह भी विशेष धन दाय योग है।
4. चंद्र से दसवें शुभ ग्रह हो ''अमला योग'' यह भी धन योग है।
5. जन्म लग्न से चन्द्र 10वें भाव में गुरु 7वें भाव में राजयोग।
6. चंद्र से 3,6,10,11 भावों में शुभग्रह हो तो ''वसुमान'' योग धन योग।
7. चंद्र स्व या उच्च का केन्द्र त्रिकोण में गुरु से दृष्ट हो तो ''गौरी योग'' धन योग।

चंद्र का पीड़ित होना–चौथे घर में शनि या राहु या केतु हो तो चंद्र अपने आप पीड़ित हो जाता है चाहे वह कहीं भी हो। चंद्र+राहु की युति ग्रहण योग है। चंद्र पीड़ित होगा। चंद्र क्षीण हो उस पर शनि व राहु की एक साथ दृष्टि तो पीड़ित होगा। चंद्र राहु या केतु के मध्य में हो तो पीड़ित होगा। चंद्रमा 11वें भाव में क्षीण होता है।

अचूक फल

- ❑ चंद्र+शनि या चंद्र+राहु युति से व्यक्ति को कोई न कोई नशे की आदत पड़ेगी।
- ❑ चं+मं प्रसिद्धि योग है। प्रति युति कैंसर भी बनाती है। चं+बु माता से शत्रुता रहेगी।
- ❑ कर्क राशि, चंद्र चतुर्थ भाव, भावेश पाप पीड़ित हो तो टी.बी., क्षय, न्यूमोनिया, फेफड़े व वक्ष स्थल की बीमारियां होंगी।
- ❑ चंद्र+शनि युति कर्क राशि में हो उस पर बुध दृष्टि हो तो कोढ़ होगा।
- ❑ चंद्र चौथा भाव 1 ला, 5 वां व उनके स्वामी तथा चंद्र और बुध पाप प्रभावी हो तो पागलपन होगा।
- ❑ चंद्र पर राहु तथा अन्य पाप प्रभाव हो तो मिरगी रोग होगा।
- ❑ चंद्र बुध और मिथुन राशि पीड़ित हो, खासकर राहु और शनि से तो दमा रोग होगा।
- ❑ सप्तमेश चंद्र (लग्न मकर) दूसरे भाव में बैठे और उसके साथ कोई ग्रह न बैठा हो तो नष्ट या गया धन वापस आता है।
- ❑ चंद्र किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की युति से हटकर पाप युति व या दृष्ट आ रहा हो तो बालारिष्ट होगा।
- ❑ कर्क राशि में शुक्र बैठा हो तो विलम्ब से विवाह होगा या फिर एक बार विवाह का पूरा प्रबन्ध होकर बिखर जाएगा।
- ❑ चंद्र 5वें हो तो देवी उपासना फल देगी।
- ❑ छठवें आठवें भाव में चंद्र मृत्यु कारक बनता है परन्तु शुक्ल पक्ष में रात का जन्म हो और कृष्ण पक्ष में दिन का हो तो आयु बढ़ाता है। 8वां चंद्र वृषभ का हो या कर्क का हो तो दीर्घ आयु देगा।
- ❑ चंद्र सूर्य के समीप होता हुआ भी तब बलवान होगा जब सूर्य निर्बल हो। जैसे तुला राशि का सूर्य 4 थे भाव में और वृश्चिक का चंद्र 5वें भाव में।
- ❑ स्वक्षेत्री 7वां चंद्र वसीयत से धन दिलाएगा।

- मेष, सिंह धनु राशि में 7वां चंद्र किसी न किसी मार्ग से धन दिलाता है।
- वृश्चिक लग्न में तीसरे भाव में चंद्र +शनि युति धनवान बनाती है। परन्तु पुत्र नहीं होता।
- चंद्र+शनि युति व प्रति युति (सुख, लाभ व दशम भाव को छोड़कर) कहीं भी हो तो हस्त मैथुन से वीर्य च्युति करता ही है।
- चंद्र+मंगल युति वाले अप्राकृतिक मैथुन करने वाले होते हैं।
- चंद्र षष्ठ भाव में स्वराशिस्थ कर्क का हो उस पर जल राशिस्थ (4,8,12) राशि वाले पाप ग्रह की दृष्टि हो तो मधुमेह होगा।
- चंद्र 1,5,9,12 वें भाव में हो तो सूर्य 7वें हो तो नेत्र या दन्त रोग बनेंगे।
- शनि+चंद्र एक साथ मंगल को देखे तो मृगी रोग बनेगा।
- चंद्र+शुक्र एक साथ केन्द्र में हो और 8वें पाप ग्रह हो तो मृगी रोग बनेगा। चंद्र+बुध भी एक साथ केन्द्र में हो और 8वें पाप ग्रह हो तो मृगी रोग देगा।
- जन्म राशि से अष्टमेश जिस नक्षत्र में हो उससे तीन नक्षत्रों में जातक को श्रम रोग तथा दुःख अवश्य देगा। जब-जब चंद्रमा गोचर में उस पर आएगा।
- दशम भाव में चन्द्र प्रथम संतान को दीर्घजीवी नहीं करता व प्रथम संतान की मृत्यु संभव। यदि पंचम भाव में चंद्र 4, 8, 12 राशियों में शुभ प्रभावी हो तो बहुत संतान होगी।
- चंद्र जब शुक्र चतुर्थेश अष्टमेश आदि से मिलकर लग्न लग्नेश, चंद्र लग्न लग्नेश आदि पर प्रभाव डाले तो व्यक्ति जलीय व्यवसाय, जल सेना की नौकरी, सोडावाटर फैक्टरी, वाटर सप्लाई विभाग, नहर का महकमा आदि में काम करेगा।
- चंद्र जब लग्नेश होकर बलवान हो और चतुर्थ भाव चतुर्थेश से शुभ सम्बन्धित हो तो मनुष्य जनकार्य में रत रहेगा।
- चतुर्थ भाव चतुर्थेश तथा चंद्र के बल से माता की आयु का निर्णय करें।
- चंद्र पर शनि की युति व दृष्टि हो तो मनुष्य उदासीन मन वाला, विरक्त चित्त व संन्यास प्रिय होगा। निराशा रहेगी या शराबी, व्यसनी बनेगा।
- चतुर्थेश चंद्र हो ऐसे चंद्र पर राहु की युति या चतुर्थ भाव पर राहु युति दृष्टि द्वारा प्रभाव हो और चंद्र 6,8,12 में हो तो मन में भय की विशेष सृष्टि होगी। मिरगी, हिस्टीरिया बेहोशी के रोग होंगे।
- चतुर्थेश चंद्र पर शनि मंगल के प्रभाव व चतुर्थ पर पाप प्रभाव हो तो फेफड़ों के रोग खांसी, निमोनिया आदि होंगे।
- लग्नेश चंद्र पर पाप युति व दृष्टि प्रभाव हो तो रक्त विकार होंगे।
- चंद्र 6,8,12 भावों में क्षीण हो शुभ राशि में हो पाप प्रभावी हो तो आंख की हानि होगी।
- लग्नेश चंद्र या लग्नेश के साथ चंद्र क्षीण बली होकर पाप दृष्ट हो तो अल्पायु होगा।
- चतुर्थेश चंद्र जिस भाव में होगा मनुष्य के मन का विशेष झुकाव उस भाव से प्रदर्शित वस्तुओं से होगा।

❑❑❑

कर्क लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

कर्क लग्न का स्वरूप

पाटलो वनचारी व ब्राह्मणो निशि वीर्यवान्॥10॥
बहुपादचरः स्थौल्यतनुः सत्वगुणी जली।
पृष्ठोदयी कर्कराशिमृगाङ्काधिपतिः स्मृतः॥11॥

—बृहत्पाराशरहोराशास्त्र, अ. 4/श्लो. 10

पाटलवर्ण, वनचारी, विप्रवर्ण, रात्रिबली, बहुत पैर वाला, स्थूल देह, सत्वगुणी, जल तत्व, पृष्ठोदय है इसका स्वामी चन्द्रमा है।॥10-11॥

आवकद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्,
दैवज्ञः प्रचुरालयः क्षयधनैः संयुज्जते चन्द्रवत्।
ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृद्वत्सल
स्तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहिते जातः शशांके नरः ॥4॥

—बृहज्जातकम् अ. 16/ श्लो. 4

यदि चन्द्रमा कर्क लग्न में स्थित हो तो जातक कुछ टेढ़ा होकर जल्दी चलने वाला, कमर के किनारों पर ऊंचे मांस वाला, स्त्रीजनों से विजित अर्थात् स्त्रियों से शीघ्र प्रभावित होने वाला, अच्छे मित्रों वाला, भाग्य को जानने वाला अर्थात् ज्योतिषी अथवा ज्योतिष में रुचि रखने वाला, प्रचुर अर्थात् खूब भवनों वाला, अथवा कई कमरों या मंजिलों के मकान में रहने वाला, केवल शांति व प्रेम से वश में होने वाला चन्द्रमा के समान ही घटते-बढ़ते हुए हानि लाभ वाला, छोटे कद वाला, मोटी गर्दन वाला, अपने मित्रों से विशेष स्नेह रखने वाला, जल व उद्यानों से विशेष प्रीति रखने वाला अर्थात् जलीय प्रदेशों व हरे भरे स्थानों मे रुचि रखने वाला होता है।

लग्ने कुलीरे यदि संप्रसूतो नयप्रियो ऽ सृष्टरुगिष्टयोगः।
सौभाग्ययुक्तो रतिलालसश्च मन्त्रोपसेवी गुरुवत्सलः स्यात् ॥4॥

—वृद्धयवनजातक अ.24/श्लो.5/ पृ.287

यदि कर्क लग्न में जन्म हो तो मनुष्य नीतिपरायण, न्यायप्रिय, रोगों की कल्पना में जीने वाला, असम्भावित रोगों से ग्रस्त होने का भ्रम पालने वाला, अभीष्ट फल पाने वाला, सौभाग्य

से युक्त, रति-क्रिया की इच्छा रखने वाला, मनन परायण, सदैव सोच विचार का कार्य करने वाला, गुरुओं का प्रिय पात्र होता है।

मिष्टान्नाम्बर भूषणो ललितवाक्कापट्यधीर्धर्मवान्।
जातः स्थूलकलेवरोऽन्यभवनप्रीतः कुलीरोदये ॥5॥

–जातक पारिजात श्लो.5/पृ.678

मिठाई (रसपूर्ण सुस्वादु खाद्य पदार्थ), वस्त्र, आभूषणों का भोक्ता, सुन्दर और कोमल वाणी, कपट बुद्धि, धार्मिक, पुष्ट (मोटा) शरीर, दूसरों के मकानों में प्रीति रखने वाला। फलदीपिका के अनुसार जिसके कई मकान हों।

कर्कटकादिमभागे देवब्राह्मणरतश्चलो गौरः।
कृत्यकरश्च परेषां सुधीः सुमूर्तिः शुभाङ्गनः सुभगः॥1॥

–सारावली श्लो. 10/पृ. 466

यदि जन्म लग्न में कर्क राशि व कर्क राशि का पहला द्रेष्काण हो तो जातक देवता व ब्राह्मणों में लीन अर्थात् भक्त, चंचल, गौरवर्ण, दूसरों के कार्य करने वाला व परोपकारी, सुन्दर बुद्धिमान व पण्डित, सुन्दर शरीरधारी, अच्छी स्त्री वाला और सौभाग्यवान होता है।

कर्क लग्ने समुत्पन्नो, भोगी धर्मजनप्रियः।
मिष्ठान्नपानसंयुक्तः सुभगः सुजनप्रियः॥

–मानसागरी अ. 1/श्लो. 4

कर्क लग्न वाला जातक भोगी, मानव धर्म उपासक, मिष्ठान प्रेमी, धन–सम्पदा ऐश्वर्य से सम्पन्न, उदार मनोवृत्ति, जलप्रिय, विनम्र परन्तु चपल बुद्धि, तत्वग्राही मनोवृत्तिशील होगा।

भोज संहिता

कर्क लग्न का स्वामी ''चन्द्रमा'' एक शीतल सौम्य एवं शुभ ग्रह है। चन्द्रमा का सबसे ज्यादा असर मनः स्थिति पर देखा गया है। अतः इस राशि वाले पुरुष –स्त्री प्रायः अत्यधिक भावुक व भावनाप्रद विचारों से ओत-प्रोत पाए जाते हैं, लम्बा कद, दूसरों के प्रति दया व प्रेम की भावना विशेष एवं जीवन में निरन्तर आगे बढ़ने की तीव्र लालसा इनकी निजी विशेषता है।

सामान्यतया कर्क लग्न में उत्पन्न जातक शान्त प्रवृत्ति से युक्त होते हैं तथा अपने कार्यकलापों को वे दृढ़तापूर्वक सम्पन्न करते हैं। इनमें भावुकता का भाव भी विद्यमान रहता है तथा प्रेम एवं स्नेह के क्षेत्र में ये निश्छलता का प्रदर्शन करते हैं। जीवन में भौतिक सुख संसाधनों को ये स्वपरिश्रम तथा पराक्रम से अर्जित करने में समर्थ रहते हैं तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करते हैं साथ ही इनमें समाज या देश सेवा की भावना भी विद्यमान रहती है। अन्य जनों की आंतरिक भावनाओं को समझने में ये दक्ष होते हैं तथा राजनीतिक या सरकारी क्षेत्र में किसी सम्मानित पद को प्राप्त करके मान प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्ध अर्जित करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा अपने सांसारिक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता एवं परिश्रम से सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको प्रायः सफलता

प्राप्त होगी जिससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। साथ ही समाज में यथोचित आदर एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। आर्थिक रूप से आप सुदृढ़ रहेंगे तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा।

जीवन में आपको उतार चढ़ाव का सामना करना पड़ेगा। परन्तु समस्त समस्याओं का सामना तथा समाधान आप दृढ़तापूर्वक करेंगे तथा विषम परिस्थितियों में भी साहस नहीं छोड़ेंगे। इसके अतिरिक्त समाज में आपका प्रभाव रहेगा तथा अनुकूल प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा फलतः अन्य जन आपसे प्रभावित होंगे। श्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट कार्यों को करने में आपकी रुचि रहेगी तथा यत्नपूर्वक इनको करने में तत्पर होंगे।

आप में कर्त्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा समाज एवं देश के प्रति अपने कर्त्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे। इससे सर्वत्र आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा लोभ भी आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे। सरकारी क्षेत्र या राजनीति में आपको सफलता मिलेगी तथा किसी उच्च पद को प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी परन्तु धार्मिक कार्यकलाप या अनुष्ठान अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। प्रकृति के प्रति आकर्षण रहेगा तथा समय-समय पर आप इन स्थानों पर भ्रमण कार्यक्रम बनाते रहेंगे। संगीत एवं कला के प्रति भी आपका आकर्षण रहेगा तथा इस क्षेत्र में आपका योगदान भी रहेगा। मित्रों के मध्य आप सम्मानीय रहेंगे तथा उनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी साथ ही वे गुणवान तथा शिक्षित भी होंगे।

इस प्रकार आप कर्त्तव्यपरायण, दृढ़-प्रतिज्ञ, मित्र-प्रेमी तथा पराक्रमी पुरुष होंगे एवं जीवन में परिश्रमपूर्वक धन ऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे। कर्क लग्न वाले प्रायः गोरे वर्ण व धवल कांति वाले होते हैं।

नक्षत्रानुसार फलादेश

ही	हू हे हो, डा	डी, डू, डे, डो
पुनर्वसु–1,	पुष्य–4	आश्लेषा–4

''पुनर्वसु पादमेकं पुष्य आश्लेषान्तं कर्क''

–शीघ्रबोध

कर्क राशि व लग्न में पुनर्वसु, पुष्य व आश्लेषा नक्षत्रों का योग बनता है। पुनर्वसु का स्वामी गुरु, पुष्य का स्वामी शनि और आश्लेषा का बुध। गुरु+शनि+बुध का समन्वय ही कर्क राशि है।

चन्द्रमा यदि पुनर्वसु में हो तो

यह नक्षत्र मिथुन राशि के 20 अंश से कर्क राशि के 3.20 अंश तक रहता है।

मूढात्मा च पुनर्वसौ धनबलख्यातः कविः कामुकः।

जातक पारिजात, अ. 6/श्लोक

पुनर्वसु चरण	अंश अवधि	चरण के नवमांश स्वामी	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	उपनक्षत्र अंश से तक
चतुर्थ	0.00 से 3.20	चं. चं. चं.	चं. चं. चं.	गु. गु. गु.	चं. 00.00 से 0.33.20 मं. 0.33.20 से 1.20.00 रा. 1.20.00 से 3.20.00

ऐसा व्यक्ति मूढ़, धनबल से युक्त, विख्यात कवि और कामुक होता है। पुनर्वसु नक्षत्र का स्वामी गुरु होने से चन्द्रमा यहां बहुत प्रसन्न रहता है। इससे इस नक्षत्र में जन्मा जातक प्रसिद्ध, प्रखर, कल्पना शक्ति से युक्त प्रचुर धन का स्वामी होता है।

पुनर्वसु नक्षत्र चतुर्थ चरण

यदि आपका जन्म ''पुनर्वसु'' नक्षत्र में हुआ है तो आपके दांत बहुत ही मजबूत व सुन्दर हैं। यदि आपका जन्म ''पुष्य-नक्षत्र'' में है तो आप बहुत ही धार्मिक बुद्धि वाले आस्तिक विचारों के सौम्य स्वभाव वाले व्यक्ति हैं। खाने में नमक ज्यादा खाते हैं तथा नमकीन स्वाद आपको बहुत पसन्द है।

पुष्य चरण	अंश के अवधि	नवमाशेश	राशी. श	नक्षत्र स्वामी	उपनक्षत्र स्वामी	स्वामी अंश से तक
प्रथम	3.20 से 6.40	सू.	चं.	श.	शु. बु.	3.20 से 5.26.40 5.26.40 से 7.20.00
द्वितीय	6.40 से 10.00	बु.	चं.	श.	के. शु.	7.20.0 से 8.6.40 8.6.40 से 10.20.0
तृतीय	10.0 से 13.20	शु.	चं.	श.	सू. चं.	10.20.0 से 11.0.0 11.0.0 से 12.6.40
चतुर्थ	13.20 से 16.40	मं.	चं.	श.	मं. रा. गु.	12.6.40 से 12.53.20 12.53.20 से 14.53.20 14.53.20 से 16.40.00

यदि आपका जन्म ''पुष्य-नक्षत्र'' में हुआ है तो आप में नित नए काम करने की प्रवृत्ति

बनी रहेगी। निरन्तर कठिन परिश्रम करते रहने पर भी आपको फल प्राप्ति में देरी हो जाती है, आप निराश न हों आपकी बुद्धि अत्यन्त तीक्ष्ण है परन्तु भावुक तत्त्व प्रधान होने से किसी भी कार्य की गहराई में पहुंचाने की क्षमता नहीं रखते। हां, आप उच्च श्रेणी के प्रेमी अवश्य साबित हो सकते हैं और आप एक सच्चे मित्र के रूप में बहुत ही उपयोगी व्यक्ति हैं।

कर्क लग्न ''जलतत्त्व'' प्रधान है। इसलिए ऐसा व्यक्ति चंचल व जलप्रिय होता है। घूमने व तैरने का शौकीन तथा चन्द्रमा की चांदनी इनको बहुत प्रिय लगती है, इनकी कल्पना शक्ति बहुत तीव्र होती है। ये अच्छे लेखक, सुन्दर कवि, महान दार्शनिक तथा उच्च कोटि के साहित्यकार व 'भविष्यवक्ता' हो सकते हैं।

चन्द्रमा यदि पुष्य नक्षत्र में हो

स्यात्पंडित: शान्तमना: शशांके,
सौभाग्यधर्मार्थयुतश्च पुष्ये।

—जातक पारिजात, अ. 5/ श्लो.

चन्द्रमा यदि पुष्य नक्षत्र में हो तो जातक शान्त मन वाला, पण्डित, भाग्यशाली, धार्मिक तथा धनी होता है।

इस नक्षत्र का स्वामी शनि है। यह नक्षत्र कर्क राशि के 3.20 से 16.40 तक का है। इसे तिष्य और अमरेज्य भी कहते हैं। अमरेज्य अर्थात् देवपूज्य। वैसे इस नक्षत्र का स्वामी शनि है पर इसके गुण गुरु तुल्य बताए गए हैं। ''विप्र सुरप्रियम् स धनधी राजाप्रियो बन्धुमान्'' अर्थात् व्यक्ति देव ब्राह्मण भक्त और धनी, बुद्धिशाली व राजाप्रिय हो व बंधु वर्ग से युक्त होगा।

चरणानुसार पुष्य नक्षत्र फल

दीर्घायु: तस्करो भोगी, बुद्धिमान् जायते नर:
क्रमात्पादचतुराणां तु पुष्यस्य च प्रकीर्तनात्।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम पाद में यदि चन्द्रमा हो तो जातक लम्बी आयु वाला होता है। इस पाद का स्वामी सूर्य होता है और नक्षत्र का स्वामी शनि। उधर इसमें स्थित ग्रह हैं चन्द्र। तीनों आयु के किसी न किसी रूप में द्योतक हैं। सूर्य और चन्द्र तो लग्न रूप होने से और शनि आयुष्य कारक है ही। अत: दीर्घायु कहा।

पुष्य नक्षत्र के द्वितीय पाद में चन्द्रमा के स्थित होने पर व्यक्ति चोर होता है इस पाद का स्वामी बुध है। बुध और नक्षत्र स्वामी शनि दोनों मिलकर चौर्य दर्शाते हैं। अत: इन दोनों के प्रभाव से मन में (चन्द्रमा पर) चौर्य प्रभाव आ जाता है।

पुष्य नक्षत्र के तृतीय पाद में चन्द्रमा के स्थित होने पर जातक भोगी होता है। इस पाद का स्वामी शुक्र होने से मन में विलासिता भोग की प्रवृत्ति का आ जाना स्वाभाविक ही होगा।

पुष्य नक्षत्र के चतुर्थ पाद में चन्द्रमा के स्थित होने पर जातक बुद्धिमान होता है। इस पाद का स्वामी मंगल होता है। मंगल तर्कशील ग्रह है। अतः चन्द्र को अपने अनुरूप बनाने में सफल होगा।

चन्द्रमा यदि आश्लेषा नक्षत्र में हो तो

''आश्लेषा नक्षत्र'' में जन्मे व्यक्तियों का प्राकृतिक स्वभाव, सांसारिक उन्नति में प्रयत्नशीलता, लज्जा व सौन्दर्यपासना है। चन्द्रमा औषधाधिपति हैं तो ऐसे जातक उच्च श्रेणी के वैद्य, डॉक्टर वैज्ञानिक व अनुसंधानकर्ता भी होते हैं, ऐसे राशि वाले व्यक्ति परम चतुर प्रायः घर से दूर रहने वाले होते हैं। प्रायः इनका वैवाहिक जीवन विशेष मधुर नहीं कहा जा सकता।

आश्लेषा राशि का स्वामी चंद्र और नक्षत्र स्वामी बुध है। यह 16.40 अंशों से 30 अंश तक पूर्ण होती है। नक्षत्रेश बुध के पर्याय सर्प, अहि, भुजंग इत्यादि हैं। आश्लेषा का सर्पों से घनिष्ठ सम्बन्ध परिलक्षित है। कारण यह हो सकता है कि यह गंड नक्षत्र है यह नक्षत्र कर्क राशि की समाप्ति का भाग है। नक्षत्र और राशि दोनों समाप्त करने वाला यह काल जन्म-मृत्यु का प्रतीक है। मृत्यु प्रतीकों में सूर्य है। बुध चंद्र परस्पर शत्रु हैं। जबकि-परिजात के छंद में कहा है।-''सार्पे मूढ़मति कृतन्ध्वचनः कोपी दुराचारवान्।'' अर्थात् आश्लेषा से व्यक्ति मूढ़ मति अपने वचन से मुकर जाने वाला, क्रोधी और दुराचारी होता है।

कारण साफ है बुध का नक्षत्र चंद्र के शत्रु का नक्षत्र है। अतः मनस्थिति कर्त्तव्य विमूढ़ बन जाती है। अपने वचन से मुंह मोड़ लेना यह भी वाणिकारक बुध के प्रतिकूल वातावरण का परिणाम होगा और शत्रु के साथ रहने से दांवपेच बनते ही हैं तो दुराचारिता का दुर्गुण पीछे के दरवाजे से आ जाता है।

धूर्तः शठः पापरतः कृतघ्नः
स्यात् सर्वभक्षो भुजगर्क्ष संस्थे॥

आश्लेषा नक्षत्र में कर्क का चंद्र आ जाए तो व्यक्ति स्वभाव से ही धूर्त, शरारती, पाप (क्रूर) कर्म करने में न हिचकने वाला कृतघ्न खाने-पीने के आचार विचार भक्ष्याक्ष्य से रहित होता है।

चरणानुसार आश्लेषा फल

अग्रजाः परकार्यश्च, रोगी च सुभगो भवेत्
सार्पर्क्षांघ्रि चतुर्गातो गण्डान्तेचाल्पजीवितः।

आश्लेषा—परकार्य सेवारत होवें। परोपकारी भी हो। नौकरी भी पावे। इसका नवांशेश शनि है। शनि में भृत्यता, नौकरी परसेवा दोनों का समावेश है। यह स्वतंत्रकर्त्ता होने से व्यक्ति परोपकारी बन सकेगा।

आश्लेषा प्रथम चरण—संतानहीन होवें। नवांशेश गुरु, चंद्र। गुरु दोनों संतानकारक हैं। दोनों पर नपुंसक बुध का प्रभाव उसे संतानहीन करेगा।

आश्लेष नक्षत्र	अंश अवधि	अंश स्वामी	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	उप नक्षत्र स्वामी	अंश से तक
प्रथम	16.40 से 20.00	गु.	चं.	बु.	बु. के.	16.40.0 से 18.33.20 18.33.00 से 9.20.00
द्वितीय	20.0 से 23.20	श.	चं.	बु.	शु. सू.	19.20.0 से 21.33.20 21.33.20 से 22.12.20
तृतीय	23.20 से 26.40	श.	चं.	बु.	चं. मं.	22.13.20 से 23.20.0 23.20.0 से 30.0.00
चतुर्थ	26.40 से 30.00	गु.	चं.	बु.	रा. गु.	24.6.40 से 26.6.40 26.6.40 से 27.53.20

आश्लेषा तृतीय चरण–जातक इसमें रोगी बनता है इसका नवांशेश शनि है। शनि रोगकारक भी है और चंद्र का शत्रु भी। यह बुध के साथ होने से शरीर में रोग देगा।

आश्लेषा चतुर्थ चरण–इसमें व्यक्ति भाग्यशाली हो। इसका नवांशेश गुरु है। गुरु धन व शुभकारक होकर चंद्र का मित्र है। अत: नक्षत्रेश बुध का गुरु की तरह कार्य करना स्वभाविक है। चंद्र पर भी आर्थिक दृष्टि से शुभ प्रभाव देकर व्यक्ति को भाग्यशाली बनाएगा।

आश्लेषा के अंत में गण्ड है। इसलिए यह व्यक्ति को अल्पजीवी भी करता है। फलस्वरूप लोग आश्लेषा की विधि विधान से शान्ति भी कराते हैं।

चन्द्रमा की धवल कांतिमय किरणों का रंग हल्का ''मोतियों'' की तरह आंका गया है। अत: उसका रत्न मोती आपके लिए अत्यधिक अनुकूल माना गया है। श्वेत रंग प्रिय होने से ऐसे व्यक्ति (White Powder) खड्डी, सीमेन्ट, कारखाने तथा (Building Construction) भवन निर्माण इत्यादि कार्यों के बड़े-बड़े ठेके के कार्यों में व कपड़ा संबंधी व्यापार में सफल होते देखे गए हैं।

यह एक जलीय राशि होने से इस राशि वाले व्यक्ति खेती के कार्य व यांत्रिक मशीनरी वस्तुओं में रुचि लेते हुए पाए जाते हैं। सरकारी अधिष्ठानों में ऐसे व्यक्ति जल संबंधी (Water-work) कार्यों में दक्ष पाए गए हैं।

यह स्त्री संज्ञक राशि है सो इसकी प्रकृति और मानसिक अवस्था में इतनी चंचलता रहती है कि ये सदैव एक रस व्यवहार नहीं कर पाते, इनमें धार्मिक प्रवृत्ति भी पाई जाती है। अगर ज़रा सा भी विपरीत कार्य हो जाए या कुछ संकट आ जाए तो आप विचलित हो उठते हैं। स्त्रियों

के समान बातचीत के शौकीन होते हैं। आप मृदुल स्वभाव के कारण मित्रों से आप उल्टे नुकसान में रहते हैं। अत्यधिक भावुकता आपके लि... ...क है।

कर्क लग्न का चिह्न "केकड़ा" है। केकड़ा स्वज...त का शत्रु होता है तथा इसकी पकड़ बहुत मजबूत होती है। तो आपके कुटुम्ब वाले व्यक्तियों म आपकी इतनी प्रतिष्ठा न रहेगी जितनी अन्य जाति व सामाजिक संगठनों व मित्रों में होगी। शत्रु अगर आपकी पकड़ में आ जाए तो उसका बचना बड़ा मुश्किल है यह आपकी निजी विशेषता है।

यदि आपका जन्म 9 जुलाई व 16 अगस्त के बीच में हुआ है तो आपका भाग्य निर्माण 16 वर्ष की अवस्था में प्रारंभ हो जाता है। 26 व 30 वर्ष की आयु में क्षति की संभावना है। युवावस्था में अपनी पसंद के मुताबिक व्यवसाय करने के मार्ग में काफी रोड़े अटकाए जाएंगे। 15 वर्ष के बाद पूर्णभाग्योदय है। आप भ्रमण प्रिय भी हो सकते हैं, कफ तथा पित्त जनित रोग होने की संभावना है। आप यात्राएं बहुत करेंगे। आप जल मार्ग से व समुद्र पार यात्रा व विदेश व्यापार से काफी धन व प्रसिद्धि कमा सकते हैं।

कर्क लग्न की स्त्री (भोज संहिता)

कर्क लग्न में जन्म लेने वाली जातिका अधिक कंठ और बात वाली गुप्त रोगिणी होती है। इसे अपने परिवार वालों से आदर व स्नेह कम मिलता है। अत: यह हमेशा आदर व प्रशंसा पाने की भूखी रहती है। इसे सुयोग्य पति नहीं अथवा पति अनमेल होता है। संतान बहुत होती है। शत्रुओं पर यह सरलता से विजय प्राप्त कर सकती है। इसका परिणाम ठीक ठीक रहता है। परन्तु इसका स्वभाव अस्थिर होता है। वह सदैव दूसरों के धन को खर्च कराने की इच्छा रखती है। प्राय: कमर दर्द बना रहता है। किसी-किसी के हृदय और नाक पर तिल होते हैं। यदि हो तो 3 पुत्र 2 कन्याएं को विशेष सुख देगी। इसको तीसरे वर्ष अग्नि से, 11वें वर्ष जल से, 18वें वर्ष बीमारी से भय रहेगा, आयु 70 वर्ष तक होती है। मृत्यु कफ या जलोदर रोग व फांसी से भी हो सकती है।

कर्क लग्न वाली महिला जल विहार, जल-क्रीड़ा की शौकीन होगी। शीघ्रगामी होगी। चाल तेज होगी। संतान थोड़ी होगी। प्रकृति कुटिल होगी। कूटराजनीतिज्ञ वाली होगी। स्थूल गला, कमर मोटी, कद मध्यम होगा। धनाढ्य और मकान बहुत से होंगे। बुद्धिशाली और सेक्स की रसीली होगी। पति को खूब चाहेगी। कद मध्यम होगा। स्थूल शरीर की संभावना, प्राय: गौर वर्ण, विशाल आंखें, गौर वर्ण मुस्कराहट युक्त हो। वक्षस्थल प्रशस्त और पुष्ट हो। हाथ पैर और शरीर के अधोभाग अपेक्षाकृत स्थूल व मजबूत होंगे। नाक थोड़ी सी दबी हुई होगी।

नित्य नए कामों में व्यस्त रहने वाली ईमानदारी और न्यायशीलता में प्रसिद्ध। कुटिल पर भावुक, पैनी बुद्धिवाली परन्तु कठोर परिश्रमी होती है।

दाम्पत्य जीवन में कलह रहेगा। परिवार में भी प्राय: मनमुटाव बना रहेगा। अति संवेदनशील स्वभाव की हो। सबका भला चाहने वाली हो। शत्रु कम रहें। सत्यप्रिय ज्यादा से

छल-कपट की सीमा रहेगी। वर्ष -5-16-18-20-24 में विवाह के पूर्व कष्ट उत्तर वय में 45-50-54-56 में कष्ट अंतिम वय में 65-70-75 में कष्ट होगा।

निश्चय में परिवर्तन हेतु प्रतिपल तैयार रहने वाली हो पर स्वभाव खरा व जिद्दी हो। अपनी योजनाओं की शीघ्र पूर्ति करेंगी। चाहे उसमें छल-बल-कपट सभी तरह के व्यवहार क्यों न करने पड़ें।

सहनशीलता में कमी रहेगी। भीतर से कुछ बाहर से कुछ दिखाएगी। पूर्ण स्वार्थी प्रवृत्ति होगी पर आत्मप्रशंसा सुनना खूब पसंद करेंगी। प्रशंसकों का काम भी कर देगी।

व्यवहार में कुशलता रहेगी। ईश्वर के प्रति आस्था होगी। जनता में भी प्रशंसा पाएगी पर एक क्षण में प्रसन्न दूसरे ही क्षण रूठ जाने की कला बनी रहेगी।

जीवन में उतार-चढ़ाव बहुत आएंगे। कृष्ण पक्ष की अपेक्षा शुक्ल पक्ष में जन्म लेने वाली महिला अधिक भाग्यशाली होगी। आय के अनेक स्त्रोत रहेंगे। धन के मामले में सदा सजग रहेगी। व्यक्ति कपट से भी धन कमाने में होशियार होगी और जब तक पूरा धन न मिले साथ ही प्रशंसा भी न मिले तब तक संतोष नहीं होगा।

अपनी संतान पर अपार स्नेह रहेगा। स्मरण शक्ति अति तीव्र होगी। भूमि व वाहन के सुख उत्तम रहेंगे।

❑❑❑

नक्षत्रों पर विशेष फलादेश

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
1	अश्विनी	चू,चे,चो,ला	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	सोना	सिंह 3 हि. 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृतिका	अ	मेष	मंगल	मीढ़ा	राक्षस	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
3.	कृतिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1 हि. 3	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5.	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2 सि.1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि.2 मी. 1	गुरु	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मीढ़ा	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
8.	पुष्य	हु,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मीढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चांदी	मि. 3 श्वा. 1	शनि	19
9.	आश्लेषा	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	श्वान	बुध	17
10.	मघा	मा,मी,मू,मो	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मू. 3 श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. 1 मू. 2	सूर्य	6
13.	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मू. 1 मी. 1 श्वा. 2	चन्द्र	10
14.	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14.	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	हरिण	मंगल	7
15.	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि. 3 सर्प 1	राहु	18
16.	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
16.	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युञ्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
17.	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1 हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	भे,भो,भा,भी	धनु	गुरु	श्वान	राक्षस	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि. 2 मूषक 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	कपि	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू 1 स 1 मू2 1 श्वान	शुक्र	20
21.	उ. षा.	भे	धनु	गुरु	नकुल	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21.	उ. षा.	भो,जो,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू. 2 सिं.	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सिं. 3 वि. 1	×	×
23.	श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि. 3 मी	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी. 1 सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
26.	पूर्व भा.	दी	मीन	गुरु	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरु	16
27.	उ. भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरु	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प 2 सिंह	बुध	17

विभिन्न नक्षत्रों का ग्रहों के साथ सम्बन्ध

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	1	अश्विनी	अश्विनी कुमार	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम
	2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
	3.	कृतिका	अग्नि	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	7.	पुनर्वसु	अदिति	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कर्क	8.	पुष्य	गुरु	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	9.	आश्लेषा	सूर्य	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
सिंह	10.	मघा	पितृ	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	सम
	11.	पू. फा.	भग	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
	12	उ. फा.	अर्यमण	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	13.	हस्त	आदित्य	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	14.	चित्रा	त्वष्टा	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम
धनु	19.	मूल	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	सम
	20.	पू. षा.	जल	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
मकर	21.	उ. षा.	विश्वेदेवा	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	22.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	23.	धनिष्ठा	अष्टावसु	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	24.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
कुंभ	25.	पू. भा.	अजेकपाद	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	26.	उ. भा.	अहिर्बुध्य	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
मीन	27.	रेवती	पूषा	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र

कर्क लग्न पर अंशात्मक फलादेश

कर्क लग्न, अंश 0 से 1

लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु
पद–4,
नक्षत्र चरण अंश–0/0 से 3/20 तक
नक्षत्र देवता–अदिति,
वर्णाक्षर–ही,
वर्ग–हरिण
नक्षत्र स्वामी–गुरु
लग्न स्वामी–चन्द्र
नक्षत्र चरण स्वामी–चन्द्र
लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
लग्न नक्षत्र–मित्र,
नक्षत्र चरण स्वामी–पूर्ण अनुकूल
प्रधान विशेषता–धनवन्त-मानसागरी अ-1/पृ. 66

पुनर्वसु की आकृति एक मकान जैसी है। इस नक्षत्र का देवता 'अदिति' है जो कि दक्ष प्रजापति की कन्या एवं द्वादश आदित्यों की माता है। पुनर्वसु में जन्मे जातकों के बारे में "जातक परिजात" कहता है–"पुनर्वसौ धन बलाख्यात: कवि: कामुक:" ऐसे व्यक्ति धनबल से युक्त, कवि हृदय, संगीत प्रेमी और कोमल हृदय एवं कामुक मनोवृत्ति वाले जातक होते हैं।

पुनर्वसु नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति लाल (गुलाबी) नेत्रों वाला एवं रसिक प्रवृत्ति का जातक होता है। यदि इस नक्षत्र पर मंगल भी हो तो ऐसा व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु स्वयं की पत्नी को भी दांव पर लगा देता है। यदि इस नक्षत्र पर गुरु बैठा हो तो व्यक्ति अपने समाज व जाति का मुखिया (नेता) होता है। लग्न 'जीरो' से 1 अंश के भीतर होने के कारण कमजोर व मृतावस्था में है। ऐसा जातक ज्यादा आर्थिक उन्नति नहीं कर पाता।

कर्क लग्न, अंश 1 से 2

लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु,
पद–4,
नक्षत्र चरण अंश–0/0 से 3/20 तक
नक्षत्र देवता–अदिति
वर्णाक्षर–ही,
वर्ग–हरिण
लग्न स्वामी–चन्द्र,
लग्न नक्षत्र स्वामी–गुरु,
नक्षत्र चरण स्वामी–चन्द्र
लग्न स्वामी से सम्बन्ध–लग्न नक्षत्र स्वामी-मित्र, पूर्ण अनुकूल
प्रधान विशेषता–धनवन्त-मानसागरी अ-1/पृ. 66

सूर्य सिद्धान्त के अनुसार पुनः वापसी को कहते हैं तथा वस्तु निवास (रहने) को कहते हैं। पुनर्वसु की आकृति एक मकान जैसी है। इस नक्षत्र का देवता 'अदिति' है जो कि दक्ष प्रजापति की कन्या एवं द्वादश आदित्यों की माता है। पुनर्वसु में जन्मे जातकों के बारे में ''जातक पारिजात' कहता है-''पुनर्वसौ धन बलाख्यातः कविः कामुक'' ऐसे व्यक्ति धनबल से युक्त, कवि हृदय, संगीत प्रेमी और कोमल हृदय के कामुक मनोवृत्ति वाले जातक होते हैं।

पुनर्वसु नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति लाल (गुलाबी) नेत्रों वाला एवं रसिक प्रवृत्ति का जातक होता है। यदि इस नक्षत्र पर मंगल भी हो तो ऐसा व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु स्वयं की पत्नी को भी दांव पर लगा देता है। यदि इस नक्षत्र पर गुरु बैठा हो तो व्यक्ति अपने समाज व जाति का मुखिया (नेता) होता है। लग्न दो अंशों का होने में बलवान है। बाल अवस्था में जातक अपने समाज में धनवान व्यक्ति होगा।

कर्क लग्न, अंश 2 से 3

लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु, **पद**–4,
नक्षत्र चरण अंश–0/0 से 3/20 तक **नक्षत्र देवता**–अदिति
वर्णाक्षर–ही, **वर्ग**–हरिण
लग्न स्वामी–चन्द्र, **लग्नगत नक्षत्र स्वामी**–गुरु,
नक्षत्र चरण स्वामी–चन्द्र
लग्न स्वामी से सम्बन्ध–लग्न नक्षत्र स्वामी–मित्र, पूर्ण अनुकूल
प्रधान विशेषता–धनवन्त–मानसागरी अ–1/पृ. 66

सूर्य सिद्धान्त के अनुसार पुनः ''वापसी'' को कहते हैं तथा वस्तु निवास (रहने) को कहते हैं। पुनर्वसु की आकृति एक मकान जैसी है। इस नक्षत्र का देवता 'अदिति'' है जो कि दक्ष प्रजापति की कन्या एवं द्वादश आदित्यों की माता है। पुनर्वसु में जन्मे जातकों के बारे में ''जातक पारिजात'' कहता है-'पुनर्वसौ धन बलाख्यातः कविः कामुकः'' ऐसे व्यक्ति धनबल से युक्त, कवि हृदय, संगीत प्रेमी और कोमल हृदय के कामुक मनोवृत्ति वाले जातक होते हैं।

पुनर्वसु नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति लाल (गुलाबी) नेत्रों वाला एवं रसिक प्रवृत्ति का जातक होता है। यदि इस नक्षत्र पर मंगल भी हो तो ऐसा व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु स्वयं की पत्नी को भी दांव पर लगा देता है। यदि इन नक्षत्र पर गुरु बैठा हो तो व्यक्ति अपने समाज व जाति का मुखिया (नेता) होता है। लग्न दो से तीन अंशों का होने से बलवान है। जातक अपने कुटुम्ब कुल व ग्राम में धनवान व्यक्ति होगा। लग्न बाल अवस्था में है ऐसे जातक को अल्प प्रयत्न से अधिक लाभ होगा।

कर्क लग्न अंश 3 से 4

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**–1,
नक्षत्र चरण अंश–3/20 से 6/40 तक **नक्षत्र देवता**–गुरु

वर्णाक्षर–3°–20 तक ही उसके बाद हू, **वर्ग**–हरिण
लग्न स्वामी–चन्द्र, **लग्नगत नक्षत्र स्वामी**–शनि,
नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
लग्न स्वामी से सम्बन्ध–लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शत्रु,
नक्षत्र चरण स्वामी–परम शत्रु
प्रधान विशेषता–महीपति–मानसागरी अ–1/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाम ''तिष्य'' है यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अति भावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वास पात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। जातक उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। लग्न चार अंशों में होने के कारण जातक अच्छी जमीन–जायदाद का स्वामी होगा। उसके घर का निजी दो मंजिला मकान होगा।

कर्क लग्न, अंश 4 से 5

लग्न नक्षत्र–पुष्य **पद**–1,
नक्षत्र चरण अंश–3/20 से 6/40 तक **नक्षत्र देवता**–गुरु
वर्णाक्षर–हू, **वर्ग**–हरिण
लग्न स्वामी–चन्द्र, **लग्नगत नक्षत्र स्वामी**–शनि,
नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
प्रधान विशेषता–महीपति–मानसागरी अ. 1/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाम ''तिष्य' है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है जाता यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना माना है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अतिभावुक होता है। दोनों ही रीति से इस अक्षर पर बुध का प्रभाव एकदम स्पष्ट है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वासपात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। जातक उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा में उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। कर्क लग्न के पांच अंशों में जन्म होने के कारण लग्न बाल अवस्था में है। ऐसा जातक अच्छी जमीन जायदाद, दो मंजिल के मकान का स्वामी होगा।

कर्क लग्न, अंश 5 से 6

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**-1,
नक्षत्र नक्षत्र अंश–3/20 से 6/40 तक **नक्षत्र देवता**–गुरु,
वर्णाक्षर–हू **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–सूर्य
प्रधान विशेषता–महीपति, मानसागरी–अ. 2/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाम ''तिष्य'' है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अतिभावुक होता है। दोनों ही रीति से इस अक्षर पर बुध का प्रभाव एकदम स्पष्ट है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वास पात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। कर्क लग्न के छ: अंशों में जन्म होने के कारण जातक अच्छी जमीन-जायदाद, दो मंजिल के भवन का स्वामी होता है। आपका लग्न कुमार अवस्था वाला है फलत: आप अत्यधिक चेष्टावान हैं।

कर्क लग्न, अंश 6 से 7

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**–2,
नक्षत्र अंश–3/20 से 6/40 तक **नक्षत्र देवता**–गुरु,
वर्णाक्षर–हे **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
प्रधान विशेषता–स्वांगमुनीश्वर–मानसागरी अ. 1/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाम "तिष्य" है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाल नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अति भावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके अपना काम निकालने में दक्ष होते है। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वासपात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा में उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। सात अंशों में लग्न आरोह अवस्था में पूर्ण बली है ऐसा जातक पक्ष-विपक्ष दोनों ही पार्टी से मधुर सम्बन्ध रखने वाला, वाकपटु एवं बहुधंधी होता है। आपका लग्न कुमार अवस्था वाला है।

कर्क लग्न, अंश 7 से 8

लगन नक्षत्र–पुष्य, **पद**–2,
नक्षत्र अंश–6/40 से 10/0 तक **नक्षत्र देवता**–गुरु,
वर्णाक्षर–हे **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
प्रधान विशेषता–स्वांगमुनीश्वर–मानसागरी अ. 1/66 पृ.

पुष्य का वैदिक नाक "तिष्य" है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाल नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु हैं। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अति भावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वास पात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा में उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। आठ अंशों में लग्न आरोह अवस्था में पूर्ण बली है। ऐसा जातक पक्ष-विपक्ष दोनों ही पार्टी से मधुर सम्बन्ध रखने वाला, अनेक प्रकार की वेश-भूषा को धारण करने वाला, गिरगिट की तरह बात व रंग को बदलने वाला वाकपटु होता है। यह लग्न कुमार अवस्था वाला है।

कर्क लग्न, अंश 8 से 9

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**–2,
नक्षत्र अंश–6/40 से 10/0 तक **नक्षत्र देवता**–गुरु,
वर्णाक्षर–हे **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
प्रधान विशेषता–स्वांगमुनीश्वर–मानसागरी अ. 1/66

पुष्य का वैदिक नाम ''तिष्य'' है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमें जन्मा लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अतिभावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र व बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वासपात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से उच्च, वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। लग्न नौ अंशों में होने के कारण कुमार अवस्था वाला है। ऐसा जातक वाकपटु होता है तथा शत्रु व मित्र दोनों में हाथ मिलाकर चलता है।

कर्क लग्न, अंश 9 से 10

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**–3,
नक्षत्र अंश–10/0 से 13/20 **नक्षत्र देवता**–गुरु,
वर्णाक्षर–हो **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
प्रधान विशेषता–विद्यावन्त–मानसागरी अ. 1/66

पुष्य का वैदिक नाम ''तिष्य'' है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अति भावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाक्पटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वास पात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से उच्च

वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है लग्न दस अंशों में होने के कारण कुमार अवस्था वाला है। ऐसा जातक विद्यावान होता है। उच्च शैक्षणिक उपाधि प्राप्त करता है।

कर्क लग्न, अंश 10 से 11

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**–3,
नक्षत्र अंश–10/0 से 13/20 **नक्षत्र देवता**–गुरु,
वर्णाक्षर–हो **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
प्रधान विशेषता–विद्यावन्त–मानसागरी अ. 1/66

पुष्य का वैदिक नाम "तिष्य" है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अतिभावुक होता है। ऐसे जातक बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल में मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं विश्वासपात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा में उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। लग्न ग्यारह अंशों का होने के कारण कुमार अवस्था वाला है। जातक विद्यावान होगा। उच्च शैक्षणिक उपाधि प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न, अंश 11 से 12

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**–3,
नक्षत्र अंश–10/0 से 13/20 **नक्षत्र देवता**–गुरु,
वर्णाक्षर–हो, **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
प्रधान विशेषता–विद्यावन्त–मानसागरी अ. 1/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाम "तिष्य" है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अति भावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके,

अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वास पात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। लग्न 12 अंशों का होने के कारण कुमार अवस्था वाला है। ऐसा जातक विद्यावान होगा। उच्च शैक्षणिक उपाधि प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न, अंश 12 से 13

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**–3,
नक्षत्र अंश–10/0 से 13/20 तक **नक्षत्र देवता**–गुरु,
वर्णाक्षर–हो **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
प्रधान विशेषता–विद्यावन्त–मानसागरी अ. 1/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाक "तिष्य" है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अति भावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वास पात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा में उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। आपका लग्न 13 अंशों में होने के कारण युवावस्था में पूर्ण यौवन पर है। आपको विद्या में सफलता मिलेगी तथा ऐसा जातक जिस कार्य में भी हाथ डालेगा, उसको बराबर सफलता मिलती चली जाएगी।

कर्क लग्न, अंश 13 से 14

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**–4,
नक्षत्र अंश–13/20 से 16/40 तक **नक्षत्र देवता**–गुरु,
वर्णाक्षर–हा **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
प्रधान विशेषता–धर्मवन्त–मानसागरी अ. 1/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाम "तिष्य" है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु, अति भावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इस नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वासपात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। आपका लग्न 14 अंशों में होने के कारण पूर्ण यौवन पर है। ऐसे जातक को धर्म कार्य में, परोपकार कार्य में पूर्ण रुचि होती है तथा जिस कार्य में हाथ डालेगा उनको बराबर सफलता मिलती चली जाएगी।

कर्क लग्न, अंश 14 से 15

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**–4, 1
नक्षत्र अंश–13/20 से 16/40 **नक्षत्र देवता**–गुरु,
वर्णाक्षर–हा **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
प्रधान विशेषता–धर्मवन्त–मानसागरी अ–1/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाम "तिष्य" है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अति भावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाक्पटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वासपात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। आपका लग्न 15 अंशों में होने में पूर्ण बलवान है। ऐसे जातक को सामाजिक कार्यों व धार्मिक कार्यों में पूर्ण रुचि रहेगी। जातक जो भी कार्य हाथ में लेगा उसमें पूर्ण सफलता मिलेगी।

कर्क लग्न, अंश 15 से 16

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**–4,
नक्षत्र अंश–13/20 से 16/40 तक **नक्षत्र देवता**–गुरु,
वर्णाक्षर–हा **लग्न स्वामी**–चन्द्रमा,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
प्रधान विशेषता–धर्मवन्त–मानसागरी अ. 1/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाम "तिष्य है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य व धन में पटु, अति साहसी, किन्तु अति भावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाक्पटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वासपात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। लग्न आपका 16 अंशों में होने के कारण पूर्ण यौवन पर है। ऐसे जातक को समाज के कार्यो व धार्मिक कार्यों में पूर्ण रुचि रहेगी। जातक जो भी कार्य हाथ में लेगा उसमें बराबर सफलता मिलेगी।

कर्क लग्न, अंश 16 से 17

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**–4,
नक्षत्र अंश–13/20 से 16/40 **नक्षत्र देवता**–गुरु,
वर्णाक्षर–हां **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
प्रधान विशेषता–धर्मवन्त–मानसागरी अ–1/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाम "तिष्य" है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अति भावुक होता हे। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाक्पटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वासपात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा में उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। आपका लग्न 17 अंशों में बली है। आज सामाजिक कार्यों व धार्मिक कार्यों में बढ़चढ़ कर रुचि लेंगे आप जिस कार्य हाथ में डालेंगे उसमें सफलता आपके कदम चूमेगी।

कर्क लग्न, अंश 17 से 18

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा, **पद**–1,
नक्षत्र अंश–16/40 से 20/00 **नक्षत्र देवता**–सर्प,
वर्णाक्षर–डी **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
प्रधान विशेषता-चोर–मानसागरी–अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतज्ञ एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए वहां चुप रहते हैं, जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं–

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के अंशों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन भी यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अंग-भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 18 अंशों में होने से पूर्ण बली है। आप धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यों में पूर्ण रुचि लेंगे परन्तु 'सदैव सच बोलना चाहिए, न्यायमार्ग पर चलना चाहिए' इस लोकोक्ति में आपकी रुचि बिल्कुल नहीं होगी।

कर्क लग्न, अंश 18 से 19

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा, पद–1,
नक्षत्र अंश-16/40 से 20/00 नक्षत्र देवता–सर्प,
वर्णाक्षर–डी लग्न स्वामी–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु

प्रधान विशेषता-चोर-मानसागरी-अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतज्ञ एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए वहां चुप रहते हैं, जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं-

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

-ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अंग-भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 19 अंशों में होने से अवरोही अवस्था को प्राप्त है। ऐसा जातक सच्चरित्रता में विश्वास नहीं रखता।

कर्क लग्न, अंश 19 से 20

लग्न नक्षत्र-आश्लेषा, **पद**-1,
नक्षत्र अंश-16/40 से 20/00 **नक्षत्र देवता**-सर्प,
वर्णाक्षर-डी **लग्न स्वामी**-चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी-बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**-गुरु
प्रधान विशेषता-चोर-मानसागरी-अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतज्ञ एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए। वहां चुप रहते हैं, जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं-

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

-ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में

अंग-भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 20 अंशों में होने से अवरोही अवस्था को प्राप्त है। ऐसा जातक सच्चरित्रता में विश्वास नहीं रखता।

कर्क लग्न, अंश 20 से 21

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा, **पद**–1,
नक्षत्र अंश–16/40 से 20/00 **नक्षत्र देवता**–सर्प,
वर्णाक्षर–डी **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
प्रधान विशेषता-चोर–मानसागरी-अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतज्ञ एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए वहां चुप रहते हैं जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं–

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अंग-भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 21 अंशों में होने से अवरोही अवस्था को प्राप्त है। ऐसा जातक सच्चरित्रता में विश्वास नहीं रखता।

कर्क लग्न, अंश 21 से 22

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा, **पद**–2,
नक्षत्र अंश–20/00 से 23/20 **नक्षत्र देवता**–सर्प,
वर्णाक्षर–डू **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
प्रधान विशेषता-निर्धन–मानसागरी-अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतज्ञ एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए। वहां चुप रहते हैं। जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं–

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अंग-भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 22 अंशों में होने के कारण यह लग्न वृद्धावस्था को प्राप्त है। ऐसा जातक धन एकत्रित करने के मामले में प्राय: असफल रहता है।

कर्क लग्न, अंश 22 से 23

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा, **पद**–2,
नक्षत्र अंश–20/00 से 23/20 तक **नक्षत्र देवता**–सर्प,
वर्णाक्षर–डू **नक्षत्र स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
प्रधान विशेषता–निर्धन–मानसागरी अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतज्ञ एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए। वहां चुप रहते हैं जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं–

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अंग-भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 23 अंशों में होने से वृद्ध लग्न है। धनेश की स्थिति यदि ठीक न हो तो ऐसे जातक को धन कमाने के मामले में संघर्ष करना पड़ता है।

कर्क लग्न, अंश 23 से 24

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा, **पद**–2,
नक्षत्र अंश–20/00 से 23/20 तक **नक्षत्र देवता**–सर्प,
वर्णाक्षर–डू **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
प्रधान विशेषता-निर्धन–मानसागरी-अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतज्ञ एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए वहां चुप रहते हैं। जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं–

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अंग-भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 24 अंशों में होने के कारण वृद्धावस्था को प्राप्त है। धनेश की स्थिति यदि ठीक न हो तो जातक को धर्नाजन हेतु काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।

कर्क लग्न, अंश 24 से 25

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा, **पद**–3,
नक्षत्र अंश–23/20 से 26/40 तक **नक्षत्र देवता**–सर्प,
वर्णाक्षर–डे **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
प्रधान विशेषता-देशपति–मानसागरी-अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतज्ञ एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए। वहां चुप रहते हैं, जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं–

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अंग-भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 25 अंशों में होने से वृद्ध है। ऐसे जातक की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा तो बढ़ी-चढ़ी रहेगी पर उस हिसाब से धन नहीं होगा।

कर्क लग्न, अंश 25 से 26

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा, **पद**–3,
नक्षत्र अंश–23/20 से 26/40 **नक्षत्र देवता**–सर्प,
वर्णाक्षर–डे **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
प्रधान विशेषता–देशपति–मानसागरी–अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतज्ञ एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए। वहां चुप रहते हैं। जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं–

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोरा

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था॥

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अंग-भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 26 अंशों में होने से मृतावस्था को प्राप्त है। ऐसे जातक की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा तो बहुत होती है पर धन प्राप्ति हेतु किए गए प्रयासों में उतनी सफलता नहीं मिलेगी, जितनी मिलनी चाहिए।

कर्क लग्न, अंश 26 से 27

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा, **पद**–3,
नक्षत्र अंश–23/20 से 26/40 तक **नक्षत्र देवता**–सर्प,

वर्णाक्षर–डे

लग्न स्वामी–चन्द्र,

लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध,

नक्षत्र चरण स्वामी–शनि

प्रधान विशेषता-देशपति–मानसागरी-अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इसमें जन्मे जातक क्रोधी, कृतज्ञ एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए। वहां चुप रहते हैं। जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं–

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अंग-भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 27 अंशों में होने से मृतावस्था को प्राप्त अवरोह अवस्था करता है। ऐसे जातक की प्रतिष्ठा के मुकाबले उसके पास रुपया नहीं होगा।

कर्क लग्न, अंश 27 से 28

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा,

पद–4,

नक्षत्र अंश–26/40 से 30/00

नक्षत्र देवता–सर्प,

वर्णाक्षर–डो

लग्न स्वामी–चन्द्र,

लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध,

नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु

प्रधान विशेषता-कुलमन्डन–मानसागरी-अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्में जातक क्रोधी, कृतज्ञ एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए। वहां चुप रहते हैं, जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं–

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोक

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अंग-भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 29 अंशों में होने से मृतावस्था में है। ऐसे जातक की प्रतिष्ठा बहुत होती है पर उसे धन का अभाव रहता है।

कर्क लग्न, अंश 28 से 29

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा, **पद**–4,
नक्षत्र अंश–26/40 से 30/00 तक **नक्षत्र देवता**–सर्प,
वर्णाक्षर–डो **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
प्रधान विशेषता-कुलमन्डन–मानसागरी–अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्में जातक क्रोधी, कृतघ्न एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए वहां चुप रहते हैं, जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं–

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

--ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अंग-भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 29 अंशों में होने से मृतावस्था में है। ऐसे जातक कुल-परिवार की कीर्ति फैलाने वाला होता है पर उसे धनाभाव बना रहता है।

कर्क लग्न, अंश 29 से 30

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा, **पद**–4,
नक्षत्र अंश–26/40 से 30/00 **नक्षत्र देवता**–सर्प,
वर्णाक्षर–डो **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
प्रधान विशेषता-कुलमन्डन–मानसागरी-अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतज्ञ एवं ईर्ष्यालु होते हैं।

ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए। वहां चुप रहते हैं, जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं–

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अंग-भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 30 अंशों में होने से मृत है। ऐसे जातक को अपने द्वारा किए गए प्रयासों में सफलता नहीं मिलती। जातक का लग्न एकदम कमजोर अवस्था को प्राप्त है।

कर्क लग्न और आयुष्य योग

1. कर्क लग्न के लिए सूर्य मारकेश होकर भी मारक नहीं है। शुक्र सहायक मारकेश का काम करेगा। शनि एवं बुध परम पापी व अशुभ हैं। आयुष्य प्रदाता ग्रह चन्द्र है।
2. कर्क लग्न वालों की मृत्यु जल से, संक्रामक रोग से, अग्नि से, घाव से, कैंसर, मधुमेह, जलोदर, किसी महारोग से तथा अत्यधिक परिश्रम से होती है।
3. कर्क लग्न वालों की औसत आयु सामान्य स्थिति में 70 वर्ष आंकी गई है। जीवन के उपरान्त 11 माह, 1, 3, 5, 7, 9, 12, 13, 16, 20, 27, 32, 35, 38, 42, 45, 47, 51, 55, 58, 59, 61 और 67 वर्ष की आयु में शारीरिक कष्ट एवं अल्प मृत्यु का भय रहता है।
4. यदि कर्क लग्न में चन्द्रमा वृषभ का, शनि तुला में, गुरु मकर में हो, तो जातक पूर्ण यशस्वी एवं चिरंजीवी होता है।
5. यदि कर्क लग्न में कर्क का नवमांश हो, गुरु केन्द्र में, मंगल मकर में, शुक्र सिंहासनांश में हो तो ऐसा जातक चिरंजीवी होता है।
6. कर्क लग्न में यदि शुक्र केन्द्रवर्ती होकर गोपुरांश में हो, गुरु पारावतांश में होकर त्रिकोण में हो तो व्यक्ति चिरंजीवी होता है।
7. कर्क लग्न हो तथा धनु का नवमांश हो तथा नवमांश में गुरु लग्नस्थ हो तथा नवमांश में तीन या चार ग्रह उच्च के हों तो जातक साक्षात् ब्रह्मा के समान यशस्वी एवं चिरंजीवी होता है।
8. कर्क लग्न में गुरु हो, शुक्ल पक्ष में दिन के समय का जन्म हो एवं मंगल सातवें तथा शनि चौथे स्थान में हो तो जातक पूर्ण यशस्वी एवं चिरंजीवी होता है।
9. कर्क लग्न हो तथा सभी ग्रह कर्क से लेकर मकर राशि में क्रमशः उच्च या स्वगृही हों या कर्क में गुरु, चन्द्र, सिंह में सूर्य, कन्या में बुध, तुला में शनि, वृश्चिक या मकर में मंगल हो तो जातक ऋषि-मुनियों की तरह दीर्घजीवी, यशस्वी एवं चिरंजीवी होता है।
10. कर्क लग्न में गुरु हो, शनि तुला में हो, सूर्य बुध के साथ स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ) में हो, चन्द्रमा वृष में हो, शुक्र मिथुन में हो तो जातक ऋषि-मुनियों की तरह दीर्घजीवी, यशस्वी एवं चिरायु होता है।
11. कर्क लग्न में चन्द्रमा यदि कर्क, वृश्चिक या मीन राशि में हो तो जातक हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला होता है।

12. कर्क लग्न में चन्द्रमा हो तथा चन्द्र, शनि और मंगल से दृष्ट हो तो व्यक्ति छोटे कद का एवं कुबड़ा होता है।
13. कर्क लग्न में गुरु लग्न में, मंगल मकर एवं शुक्र, मीन या वृष में हो, अन्य सभी ग्रह केन्द्र स्थानों में हों तो जातक 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।
14. कर्क लग्न में गुरु+चन्द्र हो, शुक्र एवं बुध केन्द्र में हो, सूर्य, मंगल और शनि तीसरे, छठे या एकादश स्थानों में हों तो ऐसा व्यक्ति 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।
15. कर्क लग्न में पंचम भाव में वृश्चिक का चन्द्रमा, त्रिकोण में गुरु एवं दशम स्थान में मंगल हो तो जातक दीर्घायु होता है।
16. कर्क लग्न में शनि आठवें हो तो जातक दीर्घायु को भोगता है अथवा शनि यदि पंचम भाव में वृश्चिक का हो तो भी दीर्घायु होती है।
17. कर्क लग्न में शनि चन्द्रमा के साथ सप्तम भाव में केन्द्रवर्ती हो तो जातक स्वस्थ व सौ वर्ष से अधिक दीर्घायु को भोगता है।
18. कर्क लग्न में दशमेश मंगल पंचम भाव में, अष्टमेश शनि केन्द्र में अन्य शुभ ग्रहों के साथ हो तो जातक सौ वर्ष तक जीता है।
19. कर्क लग्न में अष्टमेश शनि लग्न में, गुरु एवं शुक्र के द्वारा दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की दीर्घायु को प्राप्त करता है।
20. कर्क लग्न में चन्द्रमा छठे धनु का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो तथा तभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
21. कर्क लग्न में गुरु उच्च का हो, चन्द्रमा बलवान हो तथा शुभ ग्रह केन्द्र-त्रिकोण में हो तो जातक 80 वर्ष की आयु को भोगता है।
22. कर्क लग्न में शनि मेष का, मंगल पांचवें वृश्चिक का, सूर्य सातवें मकर का हो तो व्यक्ति 70 वर्ष की निरोग आयु को प्राप्त करता है।
23. कर्क लग्न में लग्नेश चंद्रमा लग्न को देख रहा हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हों जातक की आयु 70 वर्ष की होती है।
24. कर्क लग्न में सूर्य+मंगल+शनि हो, चन्द्रमा द्वादश या पंचम भाव में हो, गुरु बलहीन हो तो जातक की आयु 70 वर्ष की होती है।
25. कर्क लग्न में, गुरु+बुध+सूर्य लग्नस्थ हो, शनि मीन राशि का नवम में तथा चन्द्रमा शत्रुक्षेत्री होकर द्वादश में हो तो एक प्रकार का राजयोग बनता है पर ऐसे व्यक्ति की आयु मात्र 66 वर्ष की होती है।
26. कर्क लग्न में तुला का चन्द्र चौथे, उच्च का मंगल सातवें, उच्च का सूर्य दसवें स्थान में किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

27. कर्क लग्न में अष्टमेश शनि सातवें हो, चन्द्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो ऐसा व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

28. कर्क लग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चन्द्रमा आठवें या द्वादश स्थान में हो तो ऐसा जातक सैद्धान्तिक एवं विद्वान होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

29. कर्क लग्न में लग्नेश चन्द्रमा पाप ग्रहों के साथ अष्टम भाव में हो तथा अष्टमेश शनि पाप ग्रहों के साथ छठे स्थान में, किसी भी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

30. कर्क लग्न में शनि+मंगल हो, चन्द्रमा आठवें, गुरु छठे शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

31. कर्क लग्न में द्वितीय या द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश हो, लग्नेश चन्द्रमा निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय व द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

32. कर्क लग्न में शनि दो पाप ग्रहों के मध्य हो, चतुर्थ भाव का स्वामी शुक्र, छठे स्थान में पाप ग्रह के साथ हो, चन्द्रमा पाप दृष्ट एवं निर्बल हो तो ऐसा जातक 67 वर्ष की आयु में अपने ही नौकर द्वारा अस्त्र से मारा जाता है।

33. कर्क लग्न में सूर्य कुम्भ में एवं शनि सिंह राशि में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसा बालक 12 वर्ष की आयु के पूर्व मृत्यु को प्राप्त करता है।

34. कर्क लग्न में सूर्य+मंगल आठवें हों, लग्नेश चन्द्र निर्बल हो, अन्य शुभ योग न हो तो तीव्र बालारिष्ट योग बनता है। उपाय न करने पर ऐसा बालक एक मास में ही मृत्यु को प्राप्त कर जाता है।

कर्क लग्न और रोग

1. कर्क लग्न में सूर्य सातवें हो तो मनुष्य को नेत्र रोग होता है।
2. कर्क लग्न में षष्टेश गुरु पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।
3. कर्क लग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो तथा चतुर्थेश शुक्र पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
4. कर्क लग्न में चतुर्थेश शुक्र अष्टमेश शनि के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
5. कर्क लग्न में चतुर्थेश शुक्र कन्या या सिंह राशि में हो, अस्त हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
6. कर्क लग्न में शनि तुला का चतुर्थ में हो तथा षष्टेश गुरु सूर्य के साथ पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
7. कर्क लग्न के चौथे एवं पांचवें भाव में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।
8. कर्क लग्न में तुला का शनि चौथे एवं कुंभ का सूर्य आठवें हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।
9. कर्क लग्न में चतुर्थ स्थान में राहु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश चंद्रमा हीनबली हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
10. कर्क लग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
11. कर्क लग्न में चंदमा+शुक्र+शनि की एक साथ युति दु:स्थानों में हो तो वाहन दुर्घटना से मृत्यु होती है।
12. कर्क लग्न में पापग्रह हो, लग्न का स्वामी चंद्रमा बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी होता है।
13. कर्क लग्न में क्षीण चन्द्रमा लग्न में हो, लग्न पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति रोगी होता है।
14. कर्क लग्न में अष्टमेश शनि लग्न में तथा लग्नेश चंद्रमा अष्टम में हो, लग्न पाप ग्रह से दृष्ट हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता। सदैव रोगी बना रहता है।

15. कर्क लग्न में सूर्य चौथे अष्टम में गुरु एवं द्वादश में चंद्रमा, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो बालक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त करता है।

16. कर्क लग्न के दूसरे स्थान में सिंह का सूर्य हो तथा चौथे एवं दसवें भाव में भी पाप ग्रह हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है।

17. कर्क लग्न के अष्टम या सप्तम स्थान में गुरु+राहु+मंगल+सूर्य हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई न कोई बीमारी लगी ही रहती है।

18. कर्क लग्न के दशम स्थान में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक ''मातृघातक'' होता है।

19. कर्क लग्न में लग्नेश चंद्रमा एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हों, सप्तम स्थान में भी पाप ग्रह हो, आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर ''आत्महत्या'' करता है।

20. कर्क (चर) लग्न में चंद्रमा पापग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

21. कर्क लग्न में षष्टेश गुरु सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

22. कर्क लग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेम बाधा अथवा शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता हुआ, ''अकाल मृत्यु'' को प्राप्त करता है।

कर्क लग्न और धनयोग

कर्क लग्न में जन्म लेने वाले जातकों के लिए धनप्रदाता ग्रह सूर्य है। धनेश सूर्य की शुभाशुभ स्थिति से धन स्थान से संबंध जोड़ने वाले ग्रहों की स्थिति एवं योगायोग, सूर्य एवं धनस्थान पर पड़ने वाले ग्रहों के दृष्टि संबंध से जातक की आर्थिक स्थिति, आय के स्त्रोतों तथा चल-अचल संपत्ति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त लग्नेश चंद्र, पंचमेश एवं दशमेश मंगल, भाग्येश गुरु, शुक्र की अनुकूल स्थितियां कर्क लग्न वालों के लिए धन, ऐश्वर्य एवं वैभव को बढ़ाने में सहायक होती हैं।

वैसे कर्क लग्न के लिए शुक्र, शनि व बुध परम पापी व अशुभ हैं। गुरु, सूर्य शुभ हैं। इस समय में मंगल अकेला राजयोग कारक है। सूर्य मारकेश होकर भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। सूर्य साहचर्य से मारक का फल देगा। गुरु पापी होने पर भी योग कारक है।

सफलयोग– 1. चंद्र+मंगल, 2. चंद्र+गुरु, 3. मंगल+गुरु, 4. मंगल+शुक्र

निष्फलयोग– 1. गुरु+शुक्र, 2. गुरु+शनि

अशुभयोग– 1. मंगल+शनि

राजयोग कारक–केवल मंगल ही है।

लक्ष्मीयोग–मंगल केंद्र -त्रिकोण में, सूर्य द्वितीय, पंचम या नवम में चंद्रमा लग्न या एकादश में।

विशेष योगायोग

1. कर्क लग्न में सूर्य, सिंह या मेष राशि में हो तो जातक धनाध्यक्ष होता है। धन के मामले में लक्ष्मी उसका पीछा नहीं छोड़ती।
2. कर्क लग्न में धनेश सूर्य, मीन राशि में तथा गुरु, सिंह राशि में परस्पर राशि परिवर्तन करके बैठे हों तो जातक भाग्यशाली होता है तथा अत्यधिक धन कमाता हुआ लक्ष्मीवान होता है।
3. कर्क लग्न में गुरु कर्क या मीन राशि में हो तो जातक अल्प प्रयत्न से बहुत धन कमाता है। ऐसा जातक धन के मामले में भाग्यशाली होता है।

4. कर्क लग्न में सूर्य शुक्र के घर में तथा शुक्र सूर्य के घर में अर्थात् सूर्य वृष या तुला राशि में तथा शुक्र सूर्य में परस्पर परिवर्तन करके बैठा हो तो व्यक्ति महाभाग्यशाली होता है तथा जीवन में अत्यधिक धन अर्जित करता है।
5. कर्क लग्न में मंगल केंद्र या त्रिकोण में कहीं भी चंद्रमा के साथ हो तो जातक 28 वर्ष की आयु के बाद खूब धन कमाता है तथा कीचड़ मे कमल की तरह खिलता हुआ सामान्य परिवार में जन्म लेकर धीरे-धीरे प्रचुर मात्रा में द्रव्य कमाता हुआ लक्षाधिपति यहां तक करोड़पति तक हो जाता है।
6. कर्क लग्न में चंद्रमा गुरु एवं मंगल के साथ दृष्ट हो तो जातक महाधनी होता है तथा व्यक्ति धनशाली व्यक्तियों में अग्रगण्य होता है।
7. कर्क लग्न में स्वगृही मंगल पंचम भाव में हो तथा लाभ स्थान स्वगृही हो तो व्यक्ति महालक्ष्मीवान होता है।
8. कर्क लग्न में चंद्रमा यदि वृष राशि में हो तथा शुक्र कर्क राशि में हो तो जातक 33वें वर्ष में पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुए, स्वअर्जित धनलक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।
9. कर्क लग्न में लग्नेश चंद्रमा, धनेश सूर्य, भाग्येश गुरु, लाभेश शुक्र अपनी-अपनी उच्च एवं स्वराशियों में हों तो जातक करोड़पति होता है।
10. कर्क लग्न में धनेश सूर्य यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो धनहीन योग की सृष्टि होती है। जिस प्रकार घड़े में छिद्र होने पर उसमें पानी नहीं ठहर पाता, ठीक उसी प्रकार से ऐसे व्यक्ति के पास धन नहीं ठहर पाता। सदैव रुपयों की कमी रहती है। इस दुर्योग की निवृत्ति हेतु ऐसे जातक को गले में अभिमंत्रित "सूर्ययंत्र" धारण करना चाहिए। पाठक चाहें तो यह यंत्र हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।
11. कर्क लग्न में धनेश सूर्य यदि आठवें हो तथा लग्नेश चंद्रमा व शुभ ग्रह उसे देखते हों तो जातक को गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है या लॉटरी से रुपया मिल सकता है पर यह रुपया उसके पास टिकता नहीं है।
12. कर्क लग्न हो, चंद्रमा, पंचमेश, मंगल व भाग्येश गुरु दूसरे भाव में हो तथा शुक्र, सूर्य वृश्चिक राशिस्थ हो तो जातक भिक्षुक के घर में जन्म लेकर भी करोड़पति बनता है।
13. बुध शुक्र के साथ पंचम भाव में हो तो बुध अपनी दशा व अंतर्दशा में अर्थ प्राप्ति करवाता है।
14. सूर्य स्वराशिस्थ, बुध तीसरे भाव में उच्च राशि में गुरु भी तृतीय भाव में मंगल छठे धनु राशि में हो तो जातक अपने बाहुबल से श्रेष्ठ अर्थ प्राप्त करता है एवं लखपति होता है।
15. बुध शुक्र 12वें भाव में हों तो शुक्र की दशा में जातक ख्याति, यश एवं धन लाभ करता है।
16. धनेश यदि धनभाव या केंद्र त्रिकोण में हो तो धन की वृद्धि व 6, 8, 12 इन स्थानों में हो तो धन की हानि होती है।

17. धनेश सूर्य व लाभेश शुक्र दोनों ही अस्त हों या पापयुक्त हों तो जन्म से ही जातक धनहीन होता है।

18. सूर्य, शुक्र षष्ट स्थान में हो गुरु मिथुन का हो, चंद्रमा तृतीय हो तो जातक करोड़पति होता है।

19. बुध, गुरु-सूर्य के साथ ही, शनि की पूर्ण दृष्टि हो, राहु भाग्य भवन में हो तो जातक करोड़पति बनता है।

20. चंद्रमा वृश्चिक का नीच, सूर्य तुला का सुख भाव में नीच का, चंद्रमा से दशम में शुक्र, मंगल हो तो जातक अतुल धनवान, लक्ष्मीवान होता है।

21. गुरु पंचम, चंद्रमा सप्तम में, मंगल तुला का हो, सूर्य भी गुरु के साथ हो तो जातक करोड़पति होता है।

22. गुरु लाभ भाव में हो तथा चंद्रमा गुरु के साथ हो, सूर्य लग्न में हो, बुध, शुक्र की युति द्वितीय भाव में हो तो जातक को देव कृपा से अर्थ-लाभ होता है।

23. शुक्र, मिथुन का हो द्वादश भाव में, लग्न में सूर्य, तृतीयेश बुध हो तो जातक साधारण अर्थोपार्जन कर आजीविका चलाता है।

24. कर्क लग्न में मंगल यदि मेष, वृश्चिक या मकर राशि में हो तो ''रुचकयोग'' बनता है। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, संपत्ति व धन का स्वामी होता है।

25. कर्क लग्न में सुखेश शुक्र नवम भाव में शुभ ग्रह से युति किए हुए मंगल से दृष्ट हो तो व्यक्ति को अनायास धन की प्राप्ति होती है।

26. कर्क लग्न में गुरु+चंद्र की युति सिंह, तुला, वृश्चिक या मीन राशि में हो तो इस प्रकार के '**गजकेसरी योग**' के कारण व्यक्ति को अनायास उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर बाजार या अन्य व्यापारिक स्त्रोत से अकल्पनीय धन मिलता है।

27. कर्क लग्न में धनेश सूर्य अष्टम में तथा अष्टमेश शनि धनस्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुड़दौड़, स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

28. कर्क लग्न में तृतीयेश बुध लाभस्थान में एवं लाभेश शुक्र, तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसे व्यक्ति को भाई, मित्र, भागीदारी, लेखन, प्रकाशन एवं बुद्धिबल के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

29. कर्क लग्न में बलवान सूर्य के साथ यदि चतुर्थेश शुक्र की युति हो तो व्यक्ति माता के द्वारा, नौकर एवं वाहन के द्वारा धन अर्जित करता है।

30. कर्क लग्न में बुध कन्या राशि में हो तो जातक कुशल भविष्यवक्ता होता है और बुद्धिबल से खूब रुपया कमाता है।

31. कर्क लग्न में सूर्य+चंद्रमा कुंभ राशि में हो तथा तीन-चार ग्रह नीच के हों तो व्यक्ति करोड़पति के घर में जन्म लेकर भी दरिद्र होता है।

32. कर्क लग्न में यदि बलवान सूर्य की पंचमेश मंगल से युति हो, द्वितीय भाव शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र के द्वारा धन की प्राप्ति होती है, पुत्र जन्म बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।
33. कर्क लग्न में बलवान सूर्य की यदि षष्टेश गुरु से युति हो तथा धनेश सूर्य शनि या मंगल से दृष्ट हो तो जातक को शत्रुओं के द्वारा धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट कचहरी में शत्रुओं का हराता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।
34. कर्क लग्न में बलवान सूर्य यदि सप्तमेश शनि के साथ हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, सुसराल पक्ष से चल-अचल संपत्ति की प्राप्ति होती है।
35. कर्क लग्न में बलवान सूर्य की नवमेश गुरु से युति हो तो ऐसा जातक राजा, राज्य सरकार, सरकारी अधिकरियों एवं अनुबंधनों से काफी धन कमाता है।
36. कर्क लग्न में बलवान सूर्य दशमेश मंगल के साथ हो तो जातक को पैतृक संपत्ति, पिता द्वारा संरक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।
37. कर्क लग्न में दशम भाव का स्वामी मंगल यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता, जन्म स्थान में कमाई नहीं होती तथा जातक को सदैव धन का अभाव बना रहता है।
38. कर्क लग्न में लग्नेश चंद्रमा यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो एवं सूर्य अष्टम स्थान में कुंभ राशि का हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है। उसकी आर्थिक स्थिति सदैव दयनीय होती है।
39. कर्क लग्न के द्वितीय भाव में पाप ग्रह हो तथा लाभेश शुक्र यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो 'शकट योग' बनता है जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव बना रहता है।
40. कर्क लग्न में धनेश सूर्य अस्त हो, नीच राशि (तुला) में हो तथा धन स्थान या अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है। कर्ज उसके सिर से नहीं उतरता।
41. कर्क लग्न में लाभेश शुक्र, यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हों, लाभेश अस्तगत या पाप पीड़ित हो तो व्यक्ति महादरिद्री होता है।
42. कर्क लग्न में अष्टमेश शनि वक्री होकर कहीं भी बैठा हो या अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धनहानि का योग बनता है। अत: ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है। अत: सावधान रहें।
43. कर्क लग्न में अष्टमेश शनि शत्रु क्षेत्री, नीच राशिगत या अस्त हो तो अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

कर्क लग्न और विवाहयोग

1. केंद्र व त्रिकोणपति मंगल चंद्रमा से योग करे तथा धन स्थान में हो जातक की स्त्री विवाहोपरांत लखपति बनेगी।
2. बुध, शुक्र 12 वें भाव में हों तो शुक्र की दशा में जातक ख्याति, यश एवं अर्थ लाभ करता है।
3. कर्क लग्न में सप्तमस्थ शनि चंद्रमा के साथ हो, लग्न में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है। विलंब से विवाह तो निश्चित है, अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
4. कर्क लग्न में यदि शनि व चंद्रमा एक दूसरे को परस्पर देख रहे हों तो विवाह विलंब से होता है।
5. कर्क लग्न में शनि द्वादश या अष्टम में हो, सूर्य द्वितीय भाव में हो और लग्नेश चंद्रमा निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
6. कर्क लग्न में शनि छठे और सूर्य अष्टम में हो तथा शुक्र भी बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
7. कर्क लग्न में सूर्य, शनि और शुक्र की युति कहीं भी हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
8. कर्क लग्न में शुक्र लग्न या द्वितीय में हो तथा सूर्य या चंद्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
9. कर्क लग्न में सप्तमेश शनि वक्री हो, सप्तम भाव में कोई वक्री ग्रह हो, या किसी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अनेक अवरोध आते हैं। विवाह समय पर नहीं होता।
10. कर्क लग्न में चंद्रमा यदि चरराशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) में हो, पाप ग्रह केंद्र में हो, शुभ ग्रह उन्हें न देखते हों तो ऐसी स्त्री विवाह के पूर्व अन्य पुरुषों से संसर्ग करती है।
11. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चय ही जातक का विवाह विलंब से होता है। ऐसा जातक प्राय: अंतर्जातीय विवाह करता है।
12. कर्क लग्न में सूर्य आठवें, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री नित नूतन वस्त्र पहन

कर पर पुरुषों का संग करती है।

13. कर्क लग्न में सप्तमस्थ मंगल पर शनि की दृष्टि हो तो जातक में कामवासना प्रबल होती है ऐसा जातक आवेश में स्त्री के यौनांग का स्पर्श अपने मुंह से करता है। यदि ऐसे मंगल के साथ राहु हो तो जातक अपने आश्रय में रहने वाली सेविका से यौन संबंध रखता है।
14. कर्क लग्न में सप्तमेश शनि यदि चर राशि में हो तो स्त्री का पति परदेश में रहेगा। ऐसे में यदि सप्तम भाव में बुध व शनि हो तो स्त्री का पति नपुंसक होगा।
15. कर्क लग्न में शनि यदि सातवें हो, शुभ ग्रह न देखते हों तो स्त्री का पति बूढ़ा व पापी होगा।
16. कर्क लग्न में सातवें सूर्य हो, उस पर गुरु की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री रोग रहित, पुत्र-पौत्रों से युक्त, सुंदरियों में प्रधान, रानी के समान सुंदर, वैभव एवं ऐश्वर्य शालिनी होती है।
17. कर्क लग्न में चंद्रमा यदि (1/4/6/8/10/12) राशि में हो तो ऐसी स्त्री अत्यंत कोमल व मृदु स्वभाव वाली होती है।
18. कर्क लग्न में गुरु, बुध, शुक्र एवं मंगल बलवान हो तो ऐसी स्त्री विख्यात विदूषी एवं सच्चरित्र वाली होती है।
19. कर्क लग्न में सप्तमेश शनि यदि चर राशि (1/4/7/10) में हो तो ऐसी स्त्री का पति निरंतर प्रवास में रहता है।
20. जातक पारिजात के अनुसार कर्क लग्न में उत्पन्न कन्याएं सुंदर होती हैं। यदि लग्न में चंद्रमा हो तो ऐसी स्त्री पति को प्रिय व प्राणवल्लभा होती है।
21. जिस स्त्री का जन्म कर्क लग्न में हो तथा सातवें भाव में चंद्रमा हो, अन्य तीन केंद्रों में कोई भी पाप ग्रह न हो तो ऐसी स्त्री रानी तुल्य ऐश्वर्य को भोगती है। उसके घर कार इत्यादि उच्च वाहन, नौकर-चाकर का सुख, पति का सुख उत्तम होता है।
22. कर्क लग्न में चन्द्रमा हो साथ में अष्टमेश शनि भी हो तो 'द्विभार्यायोग' बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है।
23. कर्क लग्न में सप्तमेश शनि द्वितीय या द्वादश में हो तो पूर्ण व्यभिचारी योग बनता है। ऐसा जातक जीवन में अनेक स्त्रियों के साथ संभोग करता है।
24. कर्क लग्न में सूर्य हो तथा सातवें स्थान में शनि हो तो ऐसे जातक का दांपत्य जीवन कलहपूर्ण रहता है। जीवन साथी से उसकी विचारधारा बिल्कुल नहीं मिलती। इसके विपरीत सूर्य सातवें एवं शनि लग्न में हो तो भी यही योग बनता है।
25. जिस महिला के कर्क लग्न में शनि बैठा हो वह एक नंबर की जिद्दी व हठी महिला होती है। ऐसी महिला प्रेम विवाह करती है तथा जात-पात की मर्यादा, कुल-परंपरा एवं लोकलज्जा की परवाह नहीं करती।

26. कर्क लग्न में सप्तमस्थ चंद्रमा शनि से दृष्ट हो तो ऐसी महिला अंतर्जातीय विवाह करती है पर उसके परिणाम सुखद नहीं होते।

27. कर्क लग्न में सप्तमेश शनि छठे, आठवें या बारहवें हो तथा षष्ठेश (गुरु) अष्टमेश (शनि) या द्वादश (बुद्ध) सातवें भाव में हो तो ऐसा जातक अविवाहित रहता है।

28. कर्क लग्न में सूर्य द्वितीय भाव में शनि के साथ हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के पश्चात् होता है तथा जातक को ससुराल की सारी सम्पत्ति मिलती है।

❑❑❑

कर्क लग्न और संतानयोग

1. वैसे कर्क लग्न अल्प संतति वाला होता है परंतु कर्क लग्न में पंचमेश मंगल यदि आठवें हो तो जातक के अत्यल्प संतति होती है।
2. कर्क लग्न में पंचमेश मंगल अस्त हो या पाप पीड़ित होकर छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक के पुत्र नहीं होता।
3. कर्क लग्न में पंचमेश मंगल यदि कर्क, वृश्चिक या मीन राशि में हो जातक के पहली संतान कन्या ही होती है।
4. कर्क लग्न में पंचमेश मंगल विषम राशि में हो तथा गुरु से युत या दृष्ट हो तो व्यक्ति की प्रथम संतान पुत्र ही होता है।
5. कर्क लग्न में मंगल हो, पंचमस्थ सूर्य हो तथा शनि आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति की जवानी बीत जाने के बाद, बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र प्राप्त होता है।
6. कर्क लग्न में शनि हो, गुरु आठवें एवं मंगल बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति की जवानी बीत जाने के बाद, बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र प्राप्त होता है।
7. कर्क लग्न में पाप ग्रह हो, गुरु से पांचवें स्थान में भी पापग्रह हो, चंद्रमा ग्यारहवें वृष राशि का हो तो बहुत प्रयत्न करने पर, जवानी बीत जाने के बाद व्यक्ति को पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है।
8. कर्क लग्न में मंगल पंचम भाव में वृश्चिक का हो तो जातक के तीन पुत्र होते हैं।
9. कर्क लग्न में मंगल लग्न में तथा चंद्रमा पंचम भाव में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो जातक दूसरे की संतान गोद लेता है तथा उसे अपने लड़के की तरह पालकर, धन का स्वामी बनाता है।
10. कर्क लग्न में पंचम भाव में राहु हो तथा राहु मंगल से दृष्ट हो तो जातक को पुत्र का सुख नहीं मिलता। इसके पुत्र उत्पन्न तो होता है पर कुछ कालांतर के बाद मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।
11. कर्क लग्न में पंचमेश मंगल पंचम, षष्ट या द्वादश स्थान में हो और पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ''अनपत्ययोग' बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह पुत्र संतान उत्पन्न नहीं होती पर दोष निवृति के उपायों से शांति हो जाती है।
12. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव में हों तो ऐसे जातक को शल्य चिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को ''सिजेरियन चाइल्ड'' कहते हैं।

13. कर्क लग्न में पंचमेश मंगल कमजोर हो तथा राहु एकादश में हो तो जातक को वृद्धावस्था में संतान प्राप्त होती है।
14. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हों तो गर्भपात अवश्य होता है।
15. कर्क लग्न में लग्नेश चंद्र द्वितीय स्थान में हो तथा पंचमेश मंगल पाप ग्रस्त या पाप पीड़ित हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होने के बाद नष्ट हो जाते हैं।
16. कर्क लग्न में पंचमेश मंगल बारहवें स्थान में शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु होती है जिससे जातक संसार से विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख होता है।
17. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम संतति के रूप में कन्यारत्न की प्राप्ति होती है।
18. कर्क लग्न में पंचमेश मंगल की सप्तमेश शनि से युति हो तो जातक को प्रथम संतान के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।
19. पंचम स्थान में मंगल, राहु हो तो वह मनुष्य संतान होते हुए भी संतान सुख प्राप्त नहीं कर पाता।
20. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या संतति की बाहुल्यता देता है। यदि चंद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो वह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।
21. पंचमेश मंगल निर्बल हो, लग्नेश चंद्रमा भी निर्बल हो तथा पंचम भाव में राहु हो तो जातक को सर्पदोष के कारण पुत्र संतान नहीं होती।
22. पंचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हों तो पद्म नामक ''कालसर्पयोग'' के कारण जातक के पुत्र संतान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिंता एवं मानसिक तनाव रहता है।
23. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृदोष होता है तथा पितृशाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।
24. लग्न में मंगल, अष्टम में शनि, पंचम में सूर्य एवं बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो ''वंशविच्छेद योग'' बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है, आगे पीढ़ियां नहीं चलतीं।
25. कर्क लग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चंद्रमा जहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पाप ग्रह हो तो ''वंशविच्छेद योग'' बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है, उसके आगे पीढ़ियां नहीं चलतीं।
26. तीन केन्द्रों में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को ''इलाख्य नामक'' सर्पयोग बनता है। इस दोष के कारण जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृति पर शांति हो जाती है।
27. कर्क लग्न में पंचमेश पंचम, षष्ट या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव ग्रहों से दृष्ट

न हो तो ''अनपत्ययोग'' बनता है ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह संतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शांत हो जाता है।

28. पंचम भाव मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वा संतान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।

29. जिस स्त्री की जन्म कुंडली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर गुरु की दृष्टि हो तो ''अनगर्भायोग'' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

30. जिस स्त्री की जन्म कुंडली में शनि-मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो ''अनगर्भायोग'' बनता है। ऐसी स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

31. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चंद्रमा यदि पंचम स्थान में हों तो ''कुलवर्द्धन योग'' बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली संतानों को उत्पन्न करती है।

32. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को ''केवल कन्या योग'' होता है। पुत्र संतान नहीं होती।

कर्क लग्न और राजयोग

1. कर्क लग्न वाले मनुष्य के यदि उच्च का गुरु लग्न में हो, साथ ही उच्च का मंगल सप्तम भाव में, उच्च का सूर्य राज्य-स्थान में और उच्च का शनि मातृ-स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. उच्च का गुरु लग्न में हो, उच्च का शनि चतुर्थ में हो और उच्च का मंगल सप्तम भाव में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव का भोगता है।
4. उच्च का गुरु स्वगृही चंद्र के साथ लग्न में हो और उच्च का सूर्य दशम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. उच्च का गुरु स्वगृही चंद्र के साथ लग्न में हो और उच्च का शनि चतुर्थ स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. उच्च का गुरु स्वगृही चंद्र के साथ लग्न में और उच्च का मंगल सप्तम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
7. उच्च का गुरु पूर्ण चंद्र के साथ लग्न में हो या कर्क का स्वगृही पूर्ण चंद्र लग्न में हो और उच्च का शनि चतुर्थ स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
8. उच्च का गुरु लग्न में हो एवं उच्च का सूर्य राज्य-स्थान में और बुध, शुक्र और शनि लाभ स्थान में हों तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
9. उच्च का गुरु लग्न में और स्वगृही मंगल राज्य-स्थान में हो या उच्च का शनि चतुर्थ में हो, स्वगृही मंगल दशम में हो और शुक्र सप्तम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
10. उच्च का गुरु लग्न में हो, स्वगृही मंगल दशम में हो और स्वगृही शुक्र चतुर्थ भाव में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
11. उच्च का गुरु लग्न में, स्वगृही शुक्र चतुर्थ में और स्वगृही शनि सप्तम में और उच्च का चंद्रमा एकादश स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
12. सूर्य, चंद्रमा, शुक्र, तीनों उच्च के हों या गुरु उच्च का लग्न में और शुक्र-मेष का राज्य में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
13. उच्च का गुरु लग्न में, उच्च का सूर्य दशम में और चंद्र-बुध-शुक्र एकादश में हों, तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

14. तुला का शनि मंगल के साथ चतुर्थ स्थान में हो और राज्य स्थान में उच्च का सूर्य तीनों शुभ ग्रहों के साथ बैठा हो तो ऐसे योग में जन्मा मनुष्य बड़ी प्रतिष्ठा वाला होता है।
15. यदि कर्क का पूर्ण चंद्रमा स्वगृही लग्न में हो और स्वगृही मीन का गुरु मित्र मंगल के साथ भाग्य या नवम स्थान में हो मनुष्य धन-धान्य से युक्त बड़ा आदमी होता है।
16. यदि कर्क लग्न में चंद्रमा और गुरु हो, सिंह राशि में सूर्य, बुध और शुक्र दूसरे स्थान में हो, मकर का मंगल सप्तम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
17. मिथुन राशि का शनि बारहवें स्थान में हो या कर्क का चंद्रमा लग्न में हो, सूर्य, मंगल, गुरु और शुक्र सिंह राशि में दूसरे स्थान में हों, तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
18. मकर का शनि स्वगृही सप्तम स्थान में हो, मिथुन का स्वगृही बुध व्यय या द्वादश स्थान में हो, तो मनुष्य राजमान्य बहुत बड़ा सरकारी नौकर होता है।
19. यदि लग्न में कर्क का गुरु चतुर्थ में, तुला का शुक्र सप्तम स्थान में, मकर का शनि दशम स्थान में मेष का मंगल हो तो मनुष्य बड़ा पराक्रमी, पुलिस, सेना में उच्चाधिकारी होता है।
20. शनि अपनी राशि का या मूल त्रिकोण या उच्च का होकर केंद्र में हो तो राज योग होता है। ऐसा जातक राजनीति विशारद, नगरपालिका अध्यक्ष या प्रसिद्ध नेता होता है तथा राजा तुल्य आनंद भी भोगता है।
21. नवमेश और चतुर्थेश परस्पर केंद्र में हों तथा लग्नेश बलवान हो तो जातक शरीर से बलिष्ठ वीर व दृढ़ चरित्र वाला होता है। मिलिट्री या सेना में उच्च पद प्राप्त करता है।
22. गुरु शत्रु भावस्थ हो तथा केतु से युति करे तो जातक बहु ऐश्वर्यवान तथा योग्य व राजनीतिपटु होता है।
23. शनि सुख भाव में, गुरु लग्न में लग्नेश के साथ, सूर्य उच्च का तथा मंगल मकर का हो तो उत्तमातोत्तम राजयोग होता है।
24. चंद्रमा स्व को हो, मंगल तीसरे भाव में, बुध, शुक्र गुरु का मेष पर दृष्टि हो तो जातक को अद्वितीय राज्य, ख्याति व पद प्राप्त होता है।
25. गुरु मंगल के नवांश में हो और उस पर मंगल की दृष्टि हो एवं मेष का सूर्य दशम भाव में स्थित हो तो जातक यशस्वी राजनीतिज्ञ होता है।
26. उच्च का गुरु केंद्र में तथा शुक्र कर्म भाव में हो तो जातक राजनीति में पटु होता है।
27. लग्न से गुरु केन्द्र में हो तथा केवल शुभ्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तथा अस्त, नीच या शत्रु राशि में न हो तो जातक मुख्यमंत्री बनता है।
28. कर्क लग्न के जन्म समय में सिंह, वृष, कन्या, कर्क इन चारों राशियों में से किसी में भी राहु हो तो जातक महाराजाधिराज और लक्ष्मी से संपन्न होता है। राहु उच्च में हो

तो हाथी, घोड़ा, मनुष्य तथा नाव की सवारी करने वाला, जमीन वाला, पंडित और अपने कुल का श्रेष्ठ होता है।

29. कर्क लग्न में दसवें स्थान में बुध, सूर्य हो और मंगल-राहु छठे में हो तो इस राजयोग में उत्पन्न जातक मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है।
30. कर्क लग्न में लग्न से चतुर्थ में शुक्र हो और मंगल-राहु छठे में हों तो इस राजयोग में उत्पन्न जातक मनष्यों में श्रेष्ठ होता है।
31. कर्क लग्न में उच्च का गुरु और मंगल तथा मेष लग्न में मंगल और गुरु हो, तो राजयोग होता है।
32. कर्क लग्न में स्वराशि का पूर्ण चंद्रमा लग्न में, सप्तम में बुध, षष्ट में सूर्य, चतुर्थ में शुक्र, दशम में गुरु और शनि-मंगल तृतीय स्थान में हो तो वैभव संपन्न राजयोग होता है।
33. कर्क लग्न में कर्क का गुरु, दशम में रवि, वृष में चंद्रमा, बुध, शुक्र हों तो जातक अपने बाहुबल से राजयोग प्राप्त करता है।
36. कर्क लग्न में शीर्षोदय राशि में (मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, मकर) सब ग्रह हों और पूर्ण चंद्रमा स्वगृह का लग्न में शुभ ग्रह दृष्ट हो तो राजयोग होता है।

❑❑❑

कर्क लग्न में आशीर्वादात्मक कुण्डली का मंगल दर्शन

॥ श्रीराम जन्माङ्गम्॥

रामश्चैत्र शुक्ल दिनदल समये, पुष्यभे कर्किलग्ने,
जीवेन्द्वोः कर्किराशौ मृगभगतकुजे, ज्ञे वृषे मेषगेऽर्के।
मन्देजूकेऽगंनायां तमसि शफरगे, भार्गवे वो नवम्यः,
पंचोच्चस्थेऽवतीर्णोऽवतु स तमियं, जन्मपत्री च यस्य॥

- जातक सारदीप

नक्षत्रेऽदिति दैवत्ये स्वोच्चेषु पंचसु।
ग्रहेषु कर्कटे लग्ने वाक्पताविन्दुना सह॥

—वाल्मीकि रामायण

चैत्र शुक्ल नवमी, पुष्य नक्षत्र, कर्क लग्न, लग्न में गुरु चन्द्र, मकर में मंगल, वृष में बुध, मेष में सूर्य, तुला में शनि, कन्या में राहु व मीन में शुक्र इस स्थिति में पांच उच्च ग्रहयुक्त वेला में अवतीर्ण हुए भगवान राम जातक की सदैव रक्षा करें। भगवान राम की कुण्डली मंगलार्थ प्रारम्भ में लिखने की परिपाटी प्राचीनकाल से चली आ रही है।

❑❑❑

भगवान श्रीराम को सिंहासन के बदले वनवास क्यों मिला?

भगवान श्रीराम के बारे में आलोचक लोग कहते हैं कि उनके राज्याभिषेक का मुहूर्त गुरु वशिष्ठ ने निकाला था परन्तु उन्हें सिंहासन की जगह वनवास मिला। क्या गुरु वशिष्ठ को इसका आभास नहीं था। ज्योषिशास्त्र के विरोधी लोग कहते हैं कि भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली के लग्न स्थान में गुरु उच्च का, चंद्रमा स्वगृही था तथा सप्तम भाव में मंगल उच्च का था। लग्न का अर्थ सिंहासन, पद प्रतिष्ठा एवं सप्तम भाव पत्नी का होता है। दोनों जगह उच्च के ग्रह होने पर भगवान श्रीराम को सिंहासन की जगह वनवास तथा पत्नी का वियोग मिला। इससे प्रतीत होता है कि फलित ज्योतिष सच्चा नहीं है। ज्योतिष प्रेमियों को भी इस बात का चिन्तन करना चाहिए कि भगवान श्रीराम को सिंहासन की जगह वनवास एवं पत्नी वियोग क्यों मिला? आइए इसका ज्योतिषीय विश्लेषण करें।

गुरु वशिष्ठ तो त्रिकालदर्शी थे, उन्हें सब पता था, स्वयं भगवान श्रीराम को पता था कि उन्हें आज वनवास के लिए प्रस्थान करना है तथा पीछे से पिता की मृत्यु होगी। ऐसा संकेत वाल्मीकि रामायण में है वे तो मर्यादा पुरुषोत्तम थे। लीला ही करने आए थे। साधारण मनुष्य भी जानता है कि सुवर्ण का मृग नहीं होता पर क्या

भगवान श्रीराम को मालूम नहीं था। उन्हें पता था यह छलावा है, फिर भी वे उसके पीछे गए और सीता का अपहरण हुआ। यह सब लीला थी। पर हमें तो यहां शुद्ध ज्योतिष की बात करनी है कि क्या भगवान श्रीराम की कुण्डली में ऐसी घटनाओं के योग थे? आइए हम उनकी जन्म कुण्डली का सैद्धान्तिक विश्लेषण करें।

भगवान श्रीराम की कुण्डली में 'राजभंगयोग' स्पष्ट था। ज्योतिष के सर्वमान्य सिद्धांतानुसार सौम्य ग्रहों की राशि का अर्थात् (वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु, मीन) लग्न हो, साथ ही सौम्य राशि में सौम्य ग्रह भी पड़े हो, परन्तु उन सौम्य (शुभ) ग्रहों को कम से कम दो पाप ग्रह पूर्ण दृष्टि से देख रहे हों तो ''राजभंग योग' हो जाता है। जातक राजा के घर में

जन्म लेने पर भी वनवासी होता है। यहां श्रीराम की कुण्डली में पाप ग्रह शनि, गुरु-चंद्र को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है तथा मंगल भी गुरु-चंद्र को देख रहा है। राहु भी शुक्र को देख रहा है। फलत: **राजभंग योग** स्पष्ट मुखरित है। शनि व सूर्य का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध पिता-पुत्र में वियोग कराता है। यह सर्वमान्य सिद्धान्त है।

अब रहा पत्नी वियोग की घटना का ज्योतिषीय स्पष्टीकरण, भगवान श्रीराम की कुण्डली में लग्न में उच्च का गुरु सप्तम भाव को अपनी नीच दृष्टि से देख रहा था। सप्तम भाव में मंगल होने से कुण्डली मंगलीक हो गई। चौथे शनि होने से कुण्डली "डबल मंगलीक" हो गई। अत: इस कुण्डली में गुरु एवं मंगल का "परस्पर नीच दृष्टि" सम्बन्ध होने से जातक को लग्न (सिंहासन) एवं पत्नी दोनों से च्युत होना पड़ा। हमें ज्योतिषशास्त्र की गहराई को सूक्ष्मता से समझना होगा। खाली उच्च के ग्रह कुण्डली में पड़े होने से कुछ नहीं होता। यहीं सिद्धांत भगवान श्रीराम की कुण्डली में चौथे भाव (माता व सुख का घर) एवं दशम भाव (पिता व राज्य का घर) पर लागू होता है। शनि और सूर्य का परस्पर नीच दृष्टि सम्बन्ध स्थापित होने पर जातक को मां एवं पिता (राज्य) दोनों के सुख सान्निध्य से वंचित होना पड़ा। ये अकाट्य तर्क हैं, जिसका कोई ज्योतिषी खण्डन नहीं कर सकता।

कर्क लग्न की कुण्डली का उलट दृष्टान्त देखिए। जो प्रैक्टिकल इसी सिद्धान्त को पुष्ट करती है। लग्न में नीच का मंगल है एवं सप्तम भाव में नीच का गुरु है। प्रथम दृष्टया तो साधारण ज्योतिष यही कहेगा कि इस जातक के लग्न एवं सप्तम दोनों घर बिगड़ गए। पर ऐसा नही हैं। लग्न है तो चेहरा है, प्रतिष्ठा है पद है। जातक लग्न देह यष्टि वाला, दिखने में सुन्दर एवं उच्च प्रतिष्ठा का प्राप्त है। पत्नी भी सुन्दर, सभ्य, सद्‌गृहस्थ धर्म परायणा, पतिव्रता को प्राप्त है। पत्नी भी सुन्दर, सभ्य, सद्‌ग्रहस्थ धर्म परायणा, पतिव्रता, धनाढ्य हैं। जातक के तीन भाई हैं पर पिता का मकान जातक को मिला। पैतृक विरासत मिली। एवं ससुराल की सारी सम्पत्ति भी मिली। इसका मुख्य कारण है। नीच का मंगल जो कि योगकारक होकर अपनी उच्च राशि सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। इसे परस्पर "उच्च दृष्टि सम्बन्ध" से जातक का लग्न (प्रथम) भाव एवं सप्तम भाव दोनों ही सुधर गए एवं उत्तम फल देने वाले हो गए। इस प्रकार से ग्रहों के दृष्टि सम्बन्ध का भी गहराई से विचार करना चाहिए।

❑❑❑

कर्क लग्न में पुत्र पिता से अधिक पराक्रमी

बहुत वर्ष पहले मैं बनारस की यात्रा पर था। ट्रेन में दो साधु मिल गए। ज्योतिष पर चर्चा चल पड़ी। उन्होंने बहुत-सी बातें ज्योतिष के विषय में बतलाई। सबसे विचित्र एवं प्रभावोत्पादक बात जो उन्होंने बतलाई वह आज भी मुझे याद है और उसे मैं प्रबुद्ध पाठकों के साथ बांटना चाहूंगा। साधु बाबा ने बहुत ही सरल व एक चमत्कारी सूत्र बताया। उन्होंने कहा-''कर्क लग्न हो तथा सप्तम भाव में मंगल उच्च का हो तो जातक का सप्तम भाव तो बिगड़ता ही है परन्तु जातक का पुत्र पिता से अधिक पराक्रमी होता है तथा युद्ध में पिता को हराता है।'' उन्होंने भगवान श्रीराम, पवन पुत्र हनुमान, वीरवर अर्जुन, महाबलशाली भीम की जन्मकुण्डलियों में सप्तम भाव में मंगल उच्च का था। कर्क लग्न में मंगल पंचमेश होता है, इस कारण जातक के यहां पराक्रमी पुत्र पैदा होता है।

साधु बाबा ने बताया कि भगवान श्रीराम युद्ध भूमि में अपने पुत्र लव-कुश से हारे। पवन पुत्र हनुमान की पसीने की बूंद से एक मत्स्य के गर्भ से ''मकर ध्वज'' नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। अहिरावण जब श्रीराम व लक्ष्मण का अपहरण करके पाताल ले गया तो अहिरावण के अंगरक्षक मकरध्वज से हनुमान का युद्ध हुआ, हनुमान उसमें लज्जित हुए। अर्जुन ने नागलोक पर चढ़ाई की तो उसके अज्ञात पुत्र ने उससे युद्ध किया एवं अर्जुन को जहरीले बाणों से युद्ध भूमि में मार डाला तत्पश्चात् नागलोक से अर्जुन की पत्नी आई, उसने अर्जुन को पहचाना एवं दिव्य नागमणि का आह्वान कर अर्जुन को जीवित किया। इसी प्रकार महाबली भीमसेन का पुत्र घटोत्कच भीमसेन से भी बलवान था। भीम ने घटोत्कच से मल्ल युद्ध किया। उसमें लज्जित होना पड़ा तो हिडम्बना ने आकर भीम को बताया कि यह आपका ही वीर्य (तेज) है।

ये सब बातें मेरे मन मस्तिष्क में स्थाई रूप से घर कर गईं। एक कुण्डली मेरे पास आई जातक का जन्म 22.4.1956 दोपहर 12.00 बजे का था। पुत्र-पिता में जमीन-जायदाद को लेकर विवाद कोर्ट-कचहरी तक चला गया। दादा की अचल सम्पत्ति थी। हाइकोर्ट तक विवाद चला। पिता जो कि सम्पत्ति का मालिक था जीवित था तकनीकी कारणों से मुकदमा हार गया। लड़का (पोता) जीत गया। जीतने के बाद उसने सारी सम्पत्ति पिता को समर्पित कर दी। क्योंकि झगड़ा सिद्धांत का था। पोते ने अपने दादा-दादी जी की खूब सेवा की थी जबकि पिता शादी करते ही विदेश चला गया और बूढ़े माता-पिता के प्रति पलट कर नहीं देखा। दादा-दादी ने अपने

लाड़ले पोते के नाम वसीयत कर दी। पिता ने इस वसीयत को कोर्ट में चुनौती दी। पिता सेशन से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक मुकदमा हारता चला गया। जब कुण्डली मेरे पास अध्ययन हेतु आई तो सप्तम भाव में उच्च का मंगल देखकर मुझे साधु बाबा की बातें स्मरण हो उठीं जिसका उल्लेख मैंने प्रबुद्ध पाठकों हेतु यहां करना उचित समझा। अतः ध्यान रहे जिसके सप्तम भाव में ''मकर का मंगल'' हो वह अपनी संतान से न उलझे।

□□□

सजातीय कुण्डलियों का रोचक तथ्य

फलित ज्योतिषशास्त्र की सबसे बड़ी विकट समस्या है सजातीय कुण्डली एवं जुड़वा कुण्डली पर फलादेश करना। मुझे अच्छी तरह से याद है जब जोधपुर महाराजाधिराज गजसिंह जी पैदा हुए उसी दिन उस समय जोधपुर में भिश्तियों के मौहल्ले में हनीफ का जन्म हुआ। दोनों कुण्डलियां एक समान, एक ही नक्षत्र वाली हैं पर दोनों के व्यावहारिक जीवन में जमीन-आसमान का फर्क।

मेरी सगी भांजी शोभा पत्नी श्री कैलाश शर्मा के यहां "तुला लग्न" के अंतर्गत दो जुड़वां बच्चे हुए। दोनों की परवरिश भाग्य, स्वभाव, विवाह, शिक्षा-दीक्षा अलग-अलग। यदि जन्मकुण्डलियां एक समान हैं तो भाग्य, शिक्षा, विवाह, स्वभाव एवं चरित्रगत विशेषताएं अलग-अलग क्यों? कई बार फलित ज्योतिष जुड़वां कुण्डलियों एवं सजातीय कुण्डलियों के फलादेश में पंगु हो जाता है। अच्छे-अच्छे विद्वान एक ही समान ग्रह नक्षत्रावली वाली जन्म कुण्डलियों का फलादेश एक जैसा घटित क्यों नहीं हो रहा इसका जवाब नहीं दे पाते।

एक बार दिल्ली में बड़ा ज्योतिष सम्मेलन हुआ। उसमें दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री साहिब सिंह वर्मा ने अध्यक्षता की थी। मैं विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित था। कहीं से सुप्रसिद्ध तांत्रिक चन्द्रास्वामी भी आ गए। वे जबरदस्ती मुझे अपने घर ले गए। वहां पर अपनी जन्मपत्री मेरे सामने रख दी और सटीक फलादेश के लिए आग्रह करने लगे। उनका जन्म "कर्क लग्न" में था। जब उनकी कुण्डली देखी तो अवाक् रह गया। उनकी और मेरी जन्मकुण्डलियां लगभग एक समान ग्रह-नक्षत्र वाली थीं।

जन्म तारीख में केवल एक माह 25 दिन का अंतर इस कारण सूर्य, मंगल, एवं शुक्र तीन ग्रहों की स्थिति में मामूली अन्तर आया। जो ग्रह उनकी कुण्डली में कमजोर थे। वे मेरी कुण्डली में उनसे कहीं बेहतर स्थिति में पावरफुल थे। उदाहरणार्थ सूर्य चन्द्रास्वामी की कुण्डली में नीच का है जबकि मेरी कुण्डली में मूलत्रिकोण में 17 डिग्री (अंशों) में होने से बहुत शक्तिशाली है। मंगल की स्थिति भी उनकी कुण्डली में ठीक नहीं जबकि मेरी कुण्डली में मंगल लग्न में गुरु से दृष्ट है। मंगल और गुरु का परस्पर "उच्च दृष्टि सम्बन्ध" है। शुक्र भी मेरी कुण्डली में तृतीय स्थान में उच्च के बुध के साथ **"नीचभंग राजयोग"** किए हुए पराक्रम में अद्वितीय वृद्धि कर रहा है। कुल मिलाकर ज्योतिषशास्त्रानुसार तीनों ग्रहों की स्थिति चन्द्रास्वामी से कई गुना मजबूत है, फिर भी वास्तविक जीवन में जमीन-आसमान का अन्तर है।

जन्म 4.9.1949, समय 04.04 जोधपुर   जन्म 29.10.1949, समय 23.50 बेहरोड़

लग्न	17.43
सूर्य	17.55
चंद्र	8.24
मंगल	4.47
बुध	14.30
गुरु	0.0
शुक्र	24.40
शनि	16.40
राहु	25.15
केतु	25.15

लग्न	13.44
सूर्य	12.50
चंद्र	25.30
मंगल	8.23
बुध	28.44
गुरु	1.26
शुक्र	26.41
शनि	23.10
राहु	23.31
केतु	23.31

वे संतानहीन हैं, मैं उत्तम सन्ततियों का स्वामी हूं। उनकी लेखनी शून्य, मेरी लेखनी से लगभग 250 पुस्तकें सृजित हो चुकी हैं। वंश परम्परागत विद्या, ज्ञानविज्ञान, मंत्र-तंत्र में मैं उनसे कई गुना आगे हूं। पर धन सम्पत्ति के मामले में कई गुना पीछे हूं। एक समान लग्न एवं ग्रह-स्थितियां होते हुए भी मूलभूत विसंगतियां कुछ शास्त्रीय समाधान ढूंढने को लालयित थीं। मैंने कई ज्योतिष मित्रों से इसका शास्त्रीय समाधान जानना चाहा। पर सभी लोग विषय से हटकर, इधर-उधर की बातें करते रहे। जब विद्वान व्यक्ति भी, ज्योतिष विद्या से जीविकोपार्जन करने वाले व्यवसायिक पंडित भी सही व शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते व कतराते हैं। सजातीय एवं जुड़वा जन्मकुण्डली की चर्चा आते ही कहते हैं कि बस यहीं आकर ज्योतिष विद्या फेल हो जाती है, तब बड़ा दुःख होता है। इसी संकट ने मुझे फलादेश में शोध करने हेतु प्रेरित किया। गणित की समस्या तो कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी। पर फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है बिना फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है। अतः सभी ज्योतिषियों का नैतिक कर्त्तव्य है कि यदि फलादेश में सूक्ष्मता व सत्यता लानी है तो मिलजुल कर सतत शोध करना होगा। एक-एक लग्न की समस्या पर बड़े-बड़े सम्मेलन बुलाने चाहिए जिसमें फलादेश की समस्याओं पर विद्वानों के मध्य खुलकर चर्चा होनी चाहिए।

वस्तुतः सजातीय कुण्डलियों एवं जुड़वां कुण्डलियों से बिल्कुल नहीं घबराना चाहिए। सजातीय कुण्डलियों से ही नवमांश का महत्त्व एवं नक्षत्रों का महत्त्व प्रत्येक ग्रह के नक्षत्र चरणों के स्वामी के महत्त्व एवं अंशात्मक फलादेश के महत्त्व का पता चलता है। श्री चन्द्रास्वामी का नवमांश "वृश्चिक" है तथा मेरी कुण्ड़ली का नवमांश 'धनु' है। धनु नवमांश में गुरु लग्न में स्वगृही है। जबकि चन्द्रास्वामी की नवमांश कुण्डली में गुरु नीच का है। सजातीय कुण्डलियों में सभी प्रकार की विसंगतियों का जवाब नवमांश कुण्डली, लग्नों के अंश, ग्रहों के अंश, नक्षत्र स्वामी की दशा, नक्षत्र चरणों के स्वामी की दशा से पता चल जाता है। फिर देश-काल परिस्थितियों का चिन्तन जरूरी है। सजातीय कुण्डलियां किस जन्मस्थल से सम्बन्ध रखती हैं तथा किस जाति वंश-परम्परा, पर्यावरण से सम्बन्ध रखती हैं यह जानना बहुत जरूरी है। क्योंकि एक ही दिन व समय में पैदा हुआ शेर का बच्चा शेर होगा, गीदड़ का बच्चा गीदड़। यदि दोनों की एक समान लग्न कुण्डलियां ले आओगे और यह नहीं बताओगे कि वह शेर, गीदड़, गधा, घोड़े या मनुष्य के बच्चे की कुण्डली है तो हम कुछ भी बता नहीं पाएंगे। हमको कुछ बताना

भी नहीं चाहिए। जब तक जातक अपनी जाति, गोत्र, वंश-परम्परा का इतिहास-परिचय नहीं बताए हमें उसके चरित्र-चित्रण पर टीका-टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। इसलिए प्राचीन जन्मपत्रिकाओं में जातक के माता-पिता, दादा-दादी, जाति वंश व गोत्र का नाम लिखा होता है।

अब अंतर्जातीय विवाह होने लगे हैं, वर्णसंकर संतानें पैदा होने लगी हैं। कई लोगों को अपना गोत्र नहीं मालूम। वंश परम्पराएं लुप्त होने लगी हैं। ऐसे जातक के जन्मगत, स्वभावगत व चरित्र-चित्रण का फलकथन ज्योतिषियों के लिए और भी मुश्किल कार्य हो गया है।

❑❑❑

बाधक ग्रहों पर विचार

फलादेश करते समय कुण्डली के बाधक ग्रहों पर भी ध्यान देना जरूरी है। ज्योतिष में बाधक ग्रहों की बड़ी भारी भूमिका होती है। प्रायः जन्मकुण्डली में उच्च के ग्रह दिखाई देते हैं। राजयोग कारक ग्रह की दशा में, राजयोग फलीभूत नहीं हो रहा है। धनेश की दशा चल रही है पर धन नहीं मिल रहा है। इन सबका कारण हैं बाधक ग्रह। प्रत्येक जन्मकुण्डली जन्मपत्रिका का एक बाधक ग्रह शास्त्रकारों ने निश्चित किया है। जिसके बारे में बहुत कम साहित्य उपलब्ध होता है। फलस्वरूप ज्योतिष क्षेत्र मे कार्यरत विद्वान भी इस तथ्य का ज्यादा ध्यान नहीं रख पाते हैं। यह बहुत ही महत्वपूर्ण सर्वाधिक काम का व्यावसायिक विषय है। परंतु अधिकतर लोग इसके बारे में अनभिज्ञ हैं। जातक परिजात में एक श्लोक मिलता है।

क्रमाच्च रागद्विशरीरभानाम्
उपान्त्य धर्मस्मरगाः तदीशाः।
खरेशमान्दिस्थित राशि नाथाः
अतीव बाधाकर खेचराः स्युः॥

अ. 2/श्लोक 48

1. यदि जन्म लग्न पर (मेष 1, कर्क 4, तुला 7 और मकर 10) हो तो ग्यारहवें भाव में स्थित ग्रह जातक की जन्म कुण्डली का बाधक ग्रह कहलाएगा। यदि ग्यारहवें स्थान में कोई ग्रह नहीं हो तो ग्यारहवें भाव का स्वामी ग्रह ही बाधक ग्रह होगा।
2. यदि जन्म लग्न स्थिर (वृष 2, सिंह 5, वृश्चिक 8, या कुंभ 11) हो तो नवम स्थान में बैठा ग्रह बाधक ग्रह का कार्य करेगा। यदि नवम स्थान में कोई ग्रह नहीं है तो स्वयं भाग्येश (नवमेश) ही उस जातक के लिए बाधक ग्रह होगा।
3. जन्म लग्न द्विस्वभाव (मिथुन 3, कन्या 6, धनु 9 या मीन 9) का हो तो सातवें स्थान में स्थित ग्रह बाधक ग्रह कहलाएगा। यदि सातवें स्थान में कोई ग्रह नहीं है तो ऐसे जातक के लिए सप्तमेश ही बाधक ग्रह का काम करेगा।
4. यदि कोई ग्रह खर या मान्दि का स्वामी हो तो वह बाधक होगा।

बाधक ग्रह की दशा, अंतर्दशा और प्रत्यन्तर दशा जातक के कार्य में रुकावटें देने वाली होती हैं। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलता। बाधक ग्रह की दशा विशेष कष्टदायक होती है।

अनुभूत दृष्टान्त–कर्क लग्न के जातक की एक कुण्डली हमारे पास आई। जातक की कुण्डली जन्म-2.10.1954, समय 2.11 A.M बजे में हंसयोग, **शशयोग** एवं **मालव्य योग** तीनों पंचमहापुरुष योग एक साथ थे। जातक को बीस वर्ष की शुक्र की दशा 12.6.1991 को लगी। शुक्र स्वगृही साथ में शनि उच्च का "किम्बहुना" नामक उत्तम योग की सृष्टि कर रहे थे। जातक का प्रश्न था कि यह सब होते हुए भी व धन एवं व्यापार में भाग्योदय हेतु अत्यधिक संघर्ष कर रहा था। स्वयं ज्योतिष का ज्ञाता है तथा अनेक ज्योतिषाचार्यों के यहां चक्कर लगाने पर भी समस्या का सही निदान नहीं हो पा रहा है।

वस्तुत: इस जन्मपत्रिका में एकादश स्थान में कोई ग्रह नहीं है अत: लाभेश शुक्र ही कर्क (चर) लग्न का बाधक ग्रह सिद्ध हुआ है। बाधक ग्रह की दशा भाग्योदय नहीं कराती। इसके विपरीत भाग्योदय में कष्ट-बाधा एवं अवरोध पहुंचाती है। यही सत्य है जो कि इस कुण्डली में अक्षरश: फलीभूत हो रहा है फिर इस कुंडली में पूर्ण कालसर्पयोग भी है क्योंकि सभी ग्रह छठे भाव में स्थित राहु एवं द्वादश भाव स्थित केतु के बीच में कैद हैं। उच्च राजयोग प्रदाता सभी ग्रह बेकार हो जाते हैं। यह जन्मकुंडली इसका अन्यतम उदाहरण है।

इसी प्रकार एक जातक हमारे पास और आया। जन्म 3.9.1962, समय 16.10 बजे जन्म जोधपुर। उसकी कुंडली में उच्च का बुध केन्द्र में "भद्रयोग" करके बैठा है। पूरी कुंडली में केवल एक बुध ही उच्च का था। अत: सभी ज्योतिषीयों ने लिख कर दिया कि जब बुध की दशा लगेगी जातक करोड़पति होगा। व्यापार चमकेगा। इस जातक को 3.1.2001 को शनि की महादशा में बुध का अन्तर लगा। जातक की उम्मीद थी कि बुध के अंतर में अच्छा रुपया आएगा। पर उल्टा हुआ। जैसे ही बुध के अन्तर लगा जातक की बिक्री दिन-प्रतिदिन घटने लगी। व्यापार में स्थाई गिरावट से जातक परेशान हो गया। शनि तो बुध का मित्र था। धनेश था परंतु उसने लाभ नहीं दिया। वस्तुत: इस कुंडली में सप्तमेश बुध बाधक ग्रह है तथा मंगल जो योगकारक है, वह भी बाधक है। अत: अनुभूत प्रयोगों से यह स्पष्ट है कि भले ही ग्रह उच्च का हो, स्वगृही हो, उच्चराजयोग बनाता हैं। लग्नेश हो, लग्नेश का मित्र हो दशानाथ का मित्र हो परंतु यदि वह बाधक ग्रह की श्रेणी में आता है तो जातक का भाग्योदय रुक जाता है। यह निश्चित है। ऐसे में बाधक ग्रहों के निदान का उपाय ही जातक को सही लाभ दे सकता है।

❑❑❑

कर्क लग्न में सूर्य की स्थिति

कर्क लग्न में सूर्य प्रथम भाव में

कर्क लग्न में सूर्य धनेश होगा। धनेश का स्वगृहाभिलाषी होकर लग्न में बैठना अत्यन्त शुभ है। ऐसा जातक अपने स्वयं के पराक्रम व पुरुषार्थ से अच्छा रुपया कमाता है।

निशानी–ऐसे जातक का जन्म श्रावण माह में प्रात: सूर्योदय के समय होता है। ऐसा जातक सूर्य के समान तेजस्वी व यशस्वी होता है। रंग गोरा एवं चेहरा चमकदार व रौबीला होता है।

विशेष–जातक स्वभाव में उग्र होगा एवं उसमें दूसरों पर हुकूमत चलाने की मनोवृति रहेगी। दशम भाव का कारक होकर केन्द्र में होने में पिता से सम्बन्ध ठीक रहेंगे। पिता की सम्पत्ति भी मिलेगी।

सूर्य की सप्तम भाव पर दृष्टि होने के कारण कुटुम्ब में एवं वैवाहिक जीवन में छोटी-मोटी तकरार होती रहेगी। तकरार का कारण भी जातक का अहंकार होगा।

जातक अपने सभी भाइयों में होशियार होगा तथा अपने समाज में भी, अपना महत्वपूर्ण स्थान सदैव बनाए रखेगा।

दृष्टि (Vision)–यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रु दृष्टि से शनि की मकर राशि, सप्तम भाव को देखता है ऐसे जातक को पत्नी पक्ष, ससुराल पक्ष से असहयोग असंतोष रहता है।

दशाफल–सूर्य की दशा जातक को अच्छा फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–यदि लग्न में सूर्य के साथ चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म अमावस्या का होगा तथा वह जिस धन्धे में हाथ डालेगा रुपया बढ़ता ही चला जाएगा।
2. **सूर्य+मंगल**–यहां मंगल नीच का होगा पर धनेश+दशमेश की युति पूर्ण योगकारक है। जातक लड़ाकू होगा पर शत्रुओं के लिए दशहत का दूसरा नाम होगा।
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य के साथ बुध **'बुधादित्य योग'** बनाएगा। यहां तृतीयेश+व्ययेश बुध सूर्य के साथ होने से जातक महान पराक्रमी होगा। जनसम्पर्क तेज रहेगा।

4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु उच्च का होकर **'हंसयोग'** बनाएगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली एवं यशस्वी होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र की युति जातक को सुखी सम्पन्न जीवन देगी। जातक का जीवनसाथी अत्यन्त सुन्दर होगा।
6. **सूर्य+शनि**–सूर्य के साथ शनि सप्तमेश+अष्टमेश शनि जातक का चरित्र विवादास्पद बनाएगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु जातक को राजदण्ड दिलाएगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक को उद्दण्ड बनाएगा। सरकारी अधिकारी प्रायः धोखा देंगे।
9. यदि लग्नेश चन्द्रमा नवम में हो तो जातक पिता या परिवार के बुजुर्ग व्यक्ति का धन प्राप्त करता है।
10. यदि लग्न में सूर्य एवं द्वितीय भाव में चन्द्रमा में हो तो परस्पर **परिवर्तन योग** के कारण **'अत्यन्त धन लाभ योग'** बनेगा। ऐसे जातक को बिना कुछ विशेष मेहनत किए धन लाभ मिलता रहेगा।
11. यदि चन्द्रमा सातवें स्थान पर सूर्य के सामने हो तो **'लग्नाधिपति योग'** बनेगा। ऐसा जातक स्वपराक्रम में खूब धन कमाएगा तथा उसका जन्म श्रावण माह की पूर्णिमा को होगा।

प्रथम भाव के सूर्य का उपचार–

1. माणिक रत्न का लॉकेट **'सूर्य यंत्र'** के साथ जड़वाकर पहने।
2. यदि जातक अपने पैतृक मकान में हैण्ड पम्प लगाए तो सूर्य का दुष्प्रभाव नष्ट होगा।
3. परोपकार एवं सेवा का कार्य अधिक करें।
4. धन प्राप्ति हेतु 'शिवप्रोक्त सूर्याष्टकम्' पढ़ें।

कर्क लग्न में सूर्य द्वितीय भाव में

धनेश सूर्य यदि धन स्थान में ही स्वगृही होकर बैठा हो तो जातक, शास्त्र का ज्ञाता, ज्ञानवान एवं विद्वान होता है।

जातक समाज में इज्जत-मान, पद-प्रतिष्ठा पाने वाला, राजदरबार में विजय पाने वाला, किसी बड़ी फैक्टरी, उद्योग व कारोबार का स्वामी होता है।

शास्त्र कहते हैं– **'धनाधिपः स्वोच्चे वाग्मी।**
शास्त्रज्ञः ज्ञानवान् नेत्रसौख्यं राजयोगश्च।''

ऐसा जातक वाकपटु व कुशल वक्ता होता है।

निशानी–उसके नेत्र आकर्षक होते हैं एवं वह स्वयं राजनैतिक वर्चस्व वाला होता है। दशम भाव कारक होकर, दसवें भाव में कोण में होने के कारण राजकीय सम्मान तथा पिता की सम्पत्ति भी मिलती है। जातक का पिता समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक होगा।

दृष्टि (Vision)–सूर्य की अष्टम स्थान कुंभ राशि पर शत्रु दृष्टि होने से जातक को भगन्दर, मस्सा, पेशाब के रोग, डायबीटिज, उच्च रक्तचाप जैसे रोग सम्भव हैं।

दशाफल–सूर्य की दशा शुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ चन्द्रमा होने से जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को प्रातः 4 से 5 बजे मध्य होगा। जातक धनी होगा। उसे परिश्रम का लाभ मिलेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल जातक को महाधनी बनाएगा पर जातक दम्भी होगा। जातक की वाणी अतिश्योक्ति पूर्ण होगी।
3. **सूर्य+बुध**–द्वितीयस्थ सूर्य के साथ बुध हो तो '**मातृमूल धनयोग**' एवं '**बुधादित्य योग**' बनता है। ऐसे जातक का भाइयों व भागीदारों से धन-वैभव की प्राप्ति होती है तथा जातक स्वयं के बुद्धिबल द्वारा भी खूब पैसा कमाता है।
4. **सूर्य+गुरु**–द्वितीय सूर्य के साथ गुरु हो तथा चन्द्र भी हो अथवा चन्द्रमा की स्थिति मजबूत हो तो '**शत्रुमूल धनयोग**' बनता है। जातक शत्रुओं द्वारा धन वैभव व कीर्ति को प्राप्त करता है।
5. **सूर्य+शुक्र**–द्वितीयस्थ सूर्य के साथ शुक्र की युति हो तो '**मातृमूल धनयोग**' की सृष्टि होगी। ऐसे जातक को माता या मातृपक्ष से धन-वैभव की प्राप्ति होती है।
6. **सूर्य+शनि**–द्वितीयस्थ सूर्य के साथ शनि हो तो '**कलत्रमूल धनयोग**' बनेगा। ऐसे जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे ससुराल से धन मिलता है।
7. द्वितीयस्थ सूर्य के साथ गुरु और अन्य बहुत से ग्रह हों तो '**अमर-अनन्त धनयोग**' की सृष्टि होती है। जातक के आमदनी के जरिये अनेक होते हैं तथा वह जीवन पर्यन्त धन, ऐश्वर्य व सुखों का उपभोग करता है।
8. द्वितीयस्थ सूर्य के साथ मंगल की युति होने से '**पुत्रमूल धनयोग**' की सृष्टि होगी। ऐसे जातक को पुत्र के द्वारा धन-वैभव की प्राप्ति होती है।

द्वितीय भाव के सूर्य का उपचार–

1. मुफ्त का माल नहीं खाना चाहिए।
2. मुफ्त का दान नहीं लें।
3. नारियल का तेल या बादाम का तेल धर्म स्थान पर चढ़ाएं।
4. आदित्य हृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

5. शिवप्रोक्त सूर्याष्टकम् का नित्य पाठ करें।
6. नवरत्न जड़ित 'सूर्ययन्त्र' सुवर्ण में धारण करें।

कर्क लग्न में सूर्य तृतीय भाव में

सूर्य यहां धनेश होकर तृतीय स्थान में बुध के घर में है। बुध सूर्य का मित्र एवं साथ-साथ चलने वाला अनुचर है। फलतः जातक को उत्तम कौटुम्बिक सुख देगा। जातक की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ करेगा।

दृष्टि--सूर्य की दृष्टि सातवीं मित्र दृष्टि मीन राशि पर पितृ स्थान पर होने के कारण जातक का स्वयं के पिता के साथ अच्छा सम्बन्ध रहेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति भी नहीं मिलेगी। सरकारी नौकरी भी अच्छी नहीं मिलेगी, क्योंकि यह सूर्य नीचाभिलाषी है।

निशानी–जातक के भाई होंगे पर भाई के साथ सम्बन्ध मधुर नहीं होंगे तथा उसका जन्म रात्रि 1 से 4 बजे के मध्य होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. सूर्य के साथ बुध हो तो **'बुधादित्य योग'** हो जाएगा। जातक धनवान एवं कीर्तिवान होगा। 'भावाधिपे बलयुते भ्रातृदीर्घायुः' ऐसे जातक के भाई जरूर होते हैं एवं भाई दीर्घ आयु वाले होंगे।

   दशा–जातक को सूर्य की दशा अच्छी रहेगी।

कर्क लग्न में सूर्य चतुर्थ भाव में

धनेश सूर्य केन्द्र में होने से जातक को धन व कुटुम्ब का सुख उत्तम रहेगा। जातक राजदरबार एवं समुद्र यात्रा से लाभ कमाता है। जातक उत्तम जायदाद, धन-सम्पत्ति का स्वामी होता है।

विशेष–तुला का सूर्य एक हजार राजयोग नष्ट करता है। अतः जातक को सरकारी नौकरी के अवसर कम मिलेंगे। तुला का सूर्य यातायात, कोरियर, इत्यादि के कामों में अच्छा लाभ दिलाता है।

पितृकारक तरीके पिता के स्थान में आठवें होने के कारण जातक के पिता की मृत्यु छोटी अवस्था में हो जाएगी। यदि पिता जीवित है तो ऐसी परिस्थितियां बनेंगी कि जातक पिता के साथ नहीं रह पाएगा।

सूर्य का असर हृदय पर होने के कारण जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है। सूर्य पापपीड़ित हो तो उसकी दशा अशुभ जाएगी।

दृष्टि—यहां सूर्य सातवीं उच्च दृष्टि से अपने मित्र मंगल की मेष राशि, दशमभाव को देखता है। यह जातक को पिता राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, धन व सम्मान की प्राप्ति होगी।

दशाफल—सूर्य की दशा अच्छा फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चन्द्र**—सूर्य के साथ चन्द्रमा होने से ऐसे जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या, मध्यरात्रि को होता है। लग्नेश चन्द्रमा केन्द्र में **यामिनीनाथ योग** बनाएगा। जातक को सभी प्रकार के सुख व ऐश्वर्य की प्राप्ति सहज में होगी।
2. **सूर्य+मंगल**—यहां मंगल को सूर्य के साथ केन्द्रवर्ती होना अत्यन्त शुभ है। जातक अपने कुल का दीपक होगा। रौबीला होगा एवं परिवार का नाम रोशन करेगा।
3. **सूर्य+बुध**—सूर्य बुध का यहां मिलन '**बुधादित्य योग**' कराएगा। केन्द्रवर्ती इस युति के कारण जातक महान् पराक्रमी होगा। दो से अधिक वाहनों का स्वामी होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु जातक को महान् भाग्यशाली बनाएगा। जातक अध्यात्म क्षेत्र का पथिक होगा। समाज में उसकी बड़ी प्रतिष्ठा होगी।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ यदि शुक्र हो तो भी '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। सूर्य का अशुभत्व नष्ट हो जाएगा। जातक व्यापार द्वारा धन कमाएगा। एवं विपरीत लिंगियों से उसे बहुत लाभ होगा।
6. **सूर्य+शनि**—सूर्य के साथ यदि शनि हो तो '**नीचभंग राजयोग**' बन जाएगा। सूर्य का अशुभत्व नष्ट हो जाएगा। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ माता को अल्पायु देगा। पिता से भी जातक के विचार कम मिलेंगे।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु राज–काज में बाधक है। जातक को सरकारी अधिकारियों से धोखा मिलेगा।

चतुर्थ भाव के सूर्य का उपचार—

1. अंधों को भोजन दें।
2. शरीर पर सोना पहने।
3. सूर्य की मूर्ति या 'सुवर्ण फूल' गले में धारण करें।
4. अभिमंत्रित माणिक्य 'सूर्य यंत्र' के साथ गले में धारण करें।
5. माणिक एवं जिरकान 'बीसा यंत्र' में धारण करें।

कर्क लग्न में सूर्य पंचम भाव में

धनेश सूर्य वृश्चिक राशि में होने में मित्र क्षेत्री है। अपने स्थान में चौथे भाव में एवं त्रिकोण स्थान में होने से जातक को धनसुख एवं कुटुम्ब-सुख बहुत उत्तम मिलेगा।

जातक भूमि से, राजदरबार में धन लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

निशानी–जातक उच्च शिक्षा वाला, ज्योतिष-तन्त्र विद्या का जानकार होता है। प्रथम सन्तति के उत्पन्न होने के बाद जातक का भाग्योदय प्रारम्भ हो जाता है।

विशेष–पितृकारक तरीके पितृस्थान में नवम (कोण) में होने से पिता से सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

दशम भाव का कारक होने के कारण नौकरी-धंधे में लाभ मिलेगा। परिश्रम का पूरा-पूरा लाभ मिलेगा। अल्प प्रयत्न से भी अधिक लाभ का योग है।

दृष्टि (Vision)–सूर्य की दृष्टि ग्यारहवें भाव पर होने से मित्रों से अकल्पनीय लाभ होगा। सूर्य यहां सातवीं शत्रु दृष्टि से शुक्र की वृष राशि को देख रहा है।

ऐसा जातक स्पष्टवक्ता होता है तथा स्पष्ट बात कहने में लाभ-हानि की चिन्ता नहीं करता।

दशाफल–सूर्य की दशा उत्तम फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ चन्द्रमा होने से जातक का जन्म मार्गशीर्ष माह, कृष्ण पक्ष की अमावस्या की रात्रि 10-11 बजे के लगभग होगा। यहां चन्द्रमा नीच का होगा। जातक को विष भोजन का भय रहेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ यदि मंगल हो तो, **'भावाधिपे बलयुते पुत्र सिद्धिः'** जातक पुत्रों के द्वारा अपने शिष्यों व अनुयायियों के द्वारा बलवान एवं कीर्तिवान होगा। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्य-सुखों को भोगता है। यदि मंगल दसवें स्थान में हो तो उपरोक्त शुभ फल के अलावा जातक को सरकार में उच्च पद मिलेगा।
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य के साथ बुध **'बुधादित्य योग'** बनाएगा। यह वस्तुत धनेश एवं पराक्रमेश की युति कहलायेगी। ऐसा जातक अपने बाहुबल से काफी धन कमायेगा। उसे पुत्र व कन्या सन्तति दोनों की प्राप्ति होगी।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु होने से जातक भाग्यशाली होगा। उसे तीन से पांच के मध्य पुत्रों की प्राप्ति सम्भव है।

5. **सूर्य+शुक्र**–यहां सूर्य के साथ शुक्र शुभ है। सूर्य धनेश है, सुखेश+लाभेश शुक्र के साथ उसकी युति जातक को कला-संगीत व अभिनय प्रिय अभिरुचि देगी। जातक पुत्र व कन्या दोनों सन्तति के सुख से परिपूर्ण होगा।
6. **सूर्य+शनि**–शनि यहां शत्रुक्षेत्री होगा। शनि सप्तमेश+अष्टमेश होने से जातक के विद्याध्ययन में बाधा आयेगी। संतान बीमार रहेगी। जातक का भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु पुत्र संतति में बाधक है। पितृदोष के कारण जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। पग-पग बाधाएं आयेंगी।
8. **सूर्य+केतु**–जातक की विद्या एक बाधा के बाद आगे बढ़ेगी। पुत्र संतति के पूर्व एकाध गर्भपात संभव है।

पंचम भाव के सूर्य का उपचार–

1. अपने वायदे-वचन के प्रति पाबन्द रहें।
2. अपनी खानदानी परम्परा को नष्ट न करें।
3. लाल मुंह के बंदरों को गुड़-चना फल खिलाएं।
4. शत्रुनाश हेतु बजरंग बाण का पाठ करें।
5. नेत्र पीड़ा की निवृत्ति हेतु **'नेत्रोपनिषद्'** का पाठ करें।
6. तेजस्वी पुत्र की प्राप्ति हेतु शिवप्रोक्त 'सूर्याष्टकम्' का पाठ करें।

कर्क लग्न में सूर्य षष्ठम स्थान में

कर्क लग्न में धनेश सूर्य छठे स्थान में जाने से **'धनहीन योग'** बनता है। जातक कितना भी रुपया कमाए पर धन में बरकत नहीं होती।

निशानी–जन्म के समय पिता घर से बाहर होता है। जन्म प्राय: सायं छ: बजे के बाद एवं सायं आठ बजे के पहले होता है।

विशेष–सूर्य यहां धनु राशि में मित्रक्षेत्री है। पाप ग्रह पाप स्थान (छठे भाव) में होने में छठे स्थान का शुभ फल जरूर देगा। शत्रु पर विजय देगा। शरीर को निरोगी रखेगा।

पितृकारक सूर्य नवमें भाव से दसवें स्थान पर होने के कारण जातक का पिता धनवान होगा। नौकरी करने वाले लोगों को यह सूर्य अच्छा फल देगा।

लग्नेश निर्बल हो तो कोर्ट-कचहरी में जातक के पैसे फालतू बरबाद होंगे परन्तु अन्तिम रूप से फैसला जातक के हक में होगा।

दृष्टि (Vision)–यहां सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में, द्वादश भाव

को देख रहा है। ऐसे जातक को धन संग्रह के मामले में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। रुपया आएगा और धन खर्च होता चला जाएगा।

दशाफल—सूर्य की दशा धन खर्च कराएगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों में सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चन्द्र**—सूर्य के साथ चन्द्रमा होने से जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को होगा। जन्म का समय रात्रि 8 बजे के लगभग होगा। चन्द्रमा के कारण **'लग्नभंग योग'** बनेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। जातक निराशावादी होगा।
2. **सूर्य+मंगल**—मंगल सूर्य के साथ होने से **'राजभंग योग'** एवं **'पुत्रहीन योग'** भी बनेगा। फलत: सरकारी नौकरी के योग कमजोर रहेंगे। संतान संबंधी चिन्ता के साथ आर्थिक परेशानी बनी रहेगी।
3. **सूर्य+बुध**—सूर्य के साथ बुध **'बुधादित्य योग'** बनाएगा। खर्चेश बुध छठे जाने से **'विपरीत राजयोग'** बनेगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु होने से **'विपरीत राजयोग'** बनेगा। जातक धनी होगा। जातक भाग्यशाली होगा पर उसके जीवन में संघर्ष बहुत रहेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र होने से **सुखहीन योग एवं लाभभंग योग** भी बनेगा। यह युति वाहन दुर्घटना का संकेत देती है। यह भी संभव है कि जातक को किसी महिला के द्वारा प्रताड़ित होना पड़े।
6. **सूर्य+शनि**—शनि छठे जाने से **'विवाहभंग योग'** बनता है। साथ ही **'विपरीत राजयोग'** भी बनता है। फलत: जातक धनवान होगा, परन्तु पिता व पत्नी का सुख कमजोर रहेगा।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु हड्डी के जोड़ों में दर्द उत्पन्न करेगा। जातक शत्रुओं से भी परेशान रहेगा।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु जातक को शत्रुओं के षड्यंत्र में उलझायेगा।
9. सूर्य यदि राहु या केतु के साथ हो तो जातक के पुत्र को सर्पदंश का भय रहता है—**'राहुकेतु युते सर्पशापात् सुतक्षय:'**

षष्टम भाव के सूर्य का उपचार—

1. बन्दर को चने देने चाहिए।
2. भूरी चींटी को सतनाजा सप्तधान डालना चाहिए।
3. माता के पांव धोकर आशीर्वाद लें।
4. सूर्य को लाल पुष्प या कुंकुम डालकर अर्घ्य दें।
5. शत्रु नाश हेतु आदित्य हृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
6. नेत्र पीड़ा की निवृत्ति हेतु **नेत्रोपनिषद** का पाठ करें।
7. धन की प्राप्ति हेतु शिवप्रोक्त **'सूर्याष्टकम्'** का नित्य पाठ करें।

कर्क लग्न में सूर्य सप्तम भाव में

धनेश सूर्य यहां सप्तम भाव में शत्रुक्षेत्री है तथा लग्न का देख रहा है। यह सूर्य जातक को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करेगा तथा धन एवं कौटुम्बिक सुख में वृद्धि करेगा।

पितृकारक सूर्य पिता के स्थान से एकादश होने के कारण पिता को सम्पत्ति देगा, पिता से लाभ दिलाएगा। भागीदार एवं सरकारी क्षेत्र में भी जातक की स्थिति लाभप्रद रहेगी।

निशानी—जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा एवं उसका जन्म सायंकाल में होगा।

विशेष—सूर्य की यह स्थिति दाम्पत्य जीवन के लिए ठीक नहीं। जीवन साथी से टकराव-तकरार होता रहेगा। जातक के धंधे में परेशानी आती रहेगी।

दृष्टि—यहां सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि में चन्द्रमा की कर्क राशि में प्रथम भाव को देख रहा है। ऐसे जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। जातक अपने प्रभाव से धन व प्रतिष्ठा को बराबर प्राप्त करता रहेगा।

दशाफल—सूर्य की दशा अच्छी जाएगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**—सूर्य के साथ चन्द्रमा होने से जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को सूर्यास्त के समय होगा। यहां लग्नेश चन्द्रमा लग्न को देखेगा। फलतः जातक को पुरुषार्थ व परिश्रम का पूरा-पूरा लाभ मिलेगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक धनी होगा।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल होने से **'रुचक योग'** की सृष्टि होगी। ऐसे में सूर्य का अशुभत्व नष्ट हो जाएगा। मंगल जातक को राजातुल्य प्रभावशाली एवं ऐश्वर्यवान बनाएगा।
3. **सूर्य+बुध**—सूर्य के साथ बुध यहां **'बुधादित्य योग'** बनाएगा। यह वस्तुतः धनेश सूर्य के साथ पराक्रमेश की युति होगी। जातक महान पराक्रमी होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ नीच का गुरु जातक को भाग्यशाली बनाता है। जातक को उत्तम गृहस्थ सुख प्राप्त होगा। जातक पराक्रमी होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—धनेश सूर्य के साथ सुखेश व लाभेश शुक्र केन्द्रवर्ती होने से जातक अपने कुल-कुटम्ब का नाम रोशन करेगा एवं सुखी जीवन जीयेगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी एवं ससुराल व्यापार वर्गी तथा उत्तम होगा।
6. **सूर्य+शनि**—सूर्य के साथ शनि होने से **'शशयोग'** की सृष्टि होगी। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा। परन्तु सही अर्थों में भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु गृहस्थ सुख में बाधक है। जातक का जीवनसाथी जातक के हाथों में जायेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु गुप्त बीमारी देगा। जातक के जीवन में गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

सप्तम भाव के सूर्य का उपचार–

1. रात को रोटी आदि पकाने के बाद आग गैस, चूल्हा, स्टोव पर दूध बहाएं या छींटें दें।
2. रविवार के दिन जमीन में तांबें के टुकड़े दबाने चाहिए।
3. भोजन करने के पूर्व भोजन के कुछ अंश आहुति के रूप में अग्नि में डालें तो सूर्य का दोष कम होगा।
4. माणिक सहित शुद्ध स्वर्ण–पत्र पर मण्डित सूर्य की मूर्ति गले में धारण करें।
5. उत्तम गृहस्थ सुख की प्राप्ति हेतु **'सूर्यार्या स्तोत्र'** का नित्य पाठ करें।

कर्क लग्न में सूर्य अष्टम भाव में

धनेश सूर्य कुम्भ राशि में शत्रुक्षेत्री होकर आठवें स्थान में जाने से जातक को धन व कुटुम्ब सम्बन्धी तकलीफों का सामना करना पड़ेगा।

धनहीन योग–धनेश सूर्य आठवें जाने से यह योग बना। जातक कितना भी रुपया कमाए पर उसमें बरकत नहीं होगी। बैंक बैलंस (Bank Balance) सदैव कमजोर रहेगा।

विशेष–पितृकारक सूर्य पितृस्थान से बारहवें होने के कारण पिता का सुख कमजोर होगा। पिता छोटी आयु में गुजर जाएगा। अथवा यदि जीवित हो तो जातक के साथ सम्बन्ध अच्छे नहीं होंगे। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी, मिल भी जाए तो उसका कोई उपयोग न होगा।

दसवें भाव का कारक होकर सूर्य आठवें जाने से जातक को **परिश्रम** का पूरा फल नहीं मिलेगा।

रोग–सूर्य निर्बल होने में नेत्र शक्ति कमजोर होगी। दाईं आंख नकली हो सकती है। दांत कमजोर एवं मोटापे का रोग सम्भव है। यदि मंगल भी निर्बल हो द्वितीय स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो 'जातक पारिजात' के अनुसार ऐसे जातक की मृत्यु पित्त विकार से होती है।

दृष्टि–यहां सूर्य सातवीं दृष्टि से स्वराशि सिंह को द्वितीय भाव में देख रहा है। जातक को पेट में रोग हो सकता है तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ न कुछ कमी रहेगी।

दशाफल–सूर्य की दशा खराब जाएगी। अचानक रोग में वृद्धि हो सकती है।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ चन्द्रमा होने से जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को सायं 5 बजे के लगभग होगा। **लग्नभंग योग** के कारण जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

2. **सूर्य+मंगल**–मंगल की युति से कुण्डली '**मांगलिक**' कहलायेगी। साथ ही '**पुत्रहीन योग**', '**राजभंग योग**' की सृष्टि होगी। ऐसे जातक का जीवन दिक्कतों से भरा होता है।
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य बुध युति से यहां '**बुधादित्य योग**' बनेगा। '**पराक्रमभंग योग**' भी बनेगा परन्तु व्ययेश बुध छठे होने से विपरीत राजयोग बनेगा। ऐसा जातक धनी होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु होने से जहां '**भाग्यभंग योग**' बनता है। वहीं षष्टेश के अष्टम में जाने से विपरीत राजयोग बनता है। ऐसा जातक धनी होगा। भाग्योदय बहुत कठिन परिश्रम से होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–शुक्र के कारण '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनेगा। जातक को स्त्री के द्वारा धोखा मिलेगा। वाहन दुर्घटना भी संभव है।
6. **सूर्य+शनि**–अष्टमेश अष्टम में होने से '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। जातक धनी होगा। जातक का गृहस्थ जीवन थोड़ा कष्टमय हो सकता है। यदि विवाह विलम्ब से हो तो योग का बुरा फल नष्ट हो जाता है।
7. **सूर्य+राहु**–जातक बीमार रहेगा। दाएं पांव में चोट पहुंच सकती है। दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **सूर्य+केतु**–जातक किसी षड्यंत्र का शिकार होगा। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहना चाहिए।

अष्टम भाव के सूर्य का उपचार–

1. दक्षिण दिशा में दरवाजे वाले मकान में नहीं रहना चाहिए।
2. मकान का प्रवेश द्वार पर वास्तुदोष नाशक गणपति लगाएं।
3. ससुराल के घर में न रहें।
4. बड़े भाई और गाय की सेवा करने से सूर्य का अशुभत्व नष्ट होगा।
5. सूर्य का स्वर्णफूल गले में धारण करें।
6. चोरी ठगी से दूर रहें अन्यथा नुकसान उठाना पड़ेगा।
7. शत्रुनाश हेतु आदित्य हृदय-स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

कर्क लग्न में सूर्य नवम भाव में

धनेश सूर्य मीन में यहां मित्रक्षेत्री है। यह सूर्य उच्चाभिलाषी होकर नवम भाव में स्थित होने से उत्तम लाभ देगा। जातक अपने पिता से अधिक नाम व पैसा कमाएगा।

पितृकारक तरीके पितृस्थान में सूर्य स्थित होने के कारण, जातक को पिता का सुख पूरा नहीं मिल पाएगा। पिता अल्पायु होगा अथवा किन्हीं कारणों से जातक पिता से दूर रहेगा।

दशम भाव का कारक होकर दशम भाव में बारहवें स्थान पर अव्यवस्थित होने के कारण धन्धा तो ठीक चलेगा पर सरकार द्वारा वांछित लाभ नहीं मिल पाएगा।

तीसरे भाव पर मित्र दृष्टि होने से जातक साहसी होगा। भाइयों के साथ अच्छे सम्बन्ध रहेंगे। मित्र एवं भाई विपत्ति में, मददगार साबित होंगे। व्यापार में भागीदारी निभ जाएगी।

दृष्टि–यहां सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि से बुध को कन्या में तृतीय भाव को देख रहा है। अत: जातक को भाई-बहनों का सुख मिलता है। ऐसे जातक का जनसम्पर्क बहुत तेज रहेगा। मित्रों से लाभ होता रहेगा।

दशाफल–सूर्य की दशा उत्तरोत्तर उत्तम फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ चन्द्रमा होने से जातक का जन्म चैत्र माह में कृष्ण पक्ष अमावस्या के दिन को तीन बजे के आस-पास होता है। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। उसे पैतृक व्यवसाय में लाभ रहेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–ऐसा जातक धनी होगा। व्यापार व ठेकेदारी से उसे लाभ होगा। जातक का सही भाग्योदय प्रथम पुत्र संतति के बाद होगा।
3. **सूर्य+बुध**–इस युति से '**बुधादित्य योग**' बनेगा। जातक महान पराक्रमी होगा एवं मित्रों की मदद से आगे बढ़ेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–गुरु यहां त्रिकोण में स्वगृही होगा। धनेश सूर्य के साथ इसकी युति राजयोग कारक है। ऐसा व्यक्ति सही अर्थों में धनी होगा। जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**–शुक्र यहां उच्च का होगा। धनेश सूर्य की लाभेश+सुखेश शुक्र के साथ यह युति भाग्यवर्धक साबित होगी। जातक को माता-पिता का धन मिलेगा।
6. **सूर्य+शनि**–धनेश सूर्य की सप्तमेश+अष्टमेश शनि के साथ यह युति ससुराल से धन दिलायेगी। साथ ही 32 वर्ष की आयु तक जातक का जीवन संघर्षमय भी बनायेगी।
7. **सूर्य+राहु**–भाग्योदय में बाधक है। जातक को पैतृक सम्पत्ति में फायदा नहीं है।
8. **सूर्य+केतु**–भाग्य स्थान में सूर्य के साथ केतु संघर्षकारी स्थिति को बताता है।

नवम भाव के सूर्य का उपचार–

1. भोजनशाला में पीतल के बर्तनों का प्रयोग करें।
2. सुवर्ण-पत्र पर सूर्य देव की मूर्ति बनाकर गले में धारण करें।
3. सूर्य भगवान को नित्य अर्घ्य दें।
4. आदित्य हृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
5. पिता की सेवा करें।
6. शीघ्र भाग्योदय हेतु 'सूर्य अथर्वशीर्ष' उपनिषद् पढ़ें।

कर्क लग्न में सूर्य दशम भाव में

धनेश सूर्य यहां उच्च का होकर केन्द्रस्थ है। जातक खूब पैसे वाला होगा। उसे कुटुम्ब का सुख भी उत्तम मिलेगा।

पितृकारक होकर सूर्य उच्च का होने से जातक का पिता धनवान एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक को पिता की स्थाई सम्पत्ति मिलेगी एवं पिता के साथ उसके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। पिता के बड़े नाम का जातक को लाभ मिलेगा।

जातक को नौकरी, धंधे या व्यापार में सरकारी मदद मिलेगी। जातक यशस्वी होगा क्योंकि दशम स्थान का कारक होकर सूर्य उच्च का है।

दृष्टिफल–सूर्य द्वारा यहां सातवीं दृष्टि से तुला राशि के चौथे स्थान देखने के कारण माता का सुख पूर्ण, वाहन का सुख श्रेष्ठ, नौकर का सुख श्रेष्ठ रहेगा। शिक्षा अच्छी मिलेगी। यह सूर्य उच्च पद दिलाने में सहायक है।

दशा–सूर्य की दशा जातक का परम भाग्योदय कराएगी। 'फलदीपिका' अ. ख/पृ. 375 के अनुसार ऐसी दशा में जातक धनी होगा परन्तु गुरु की दशा मारक होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो **'भास्कर योग'** बनेगा। यहां चन्द्रमा उच्चाभिलाषी होगा। सूर्य की इससे बढ़िया कोई स्थिति हो ही नहीं सकती। यदि साथ में मंगल भी हो तो जातक करोड़पति एवं सर्वप्रभुत्व सम्पन्न होगा। यदि गुरु भी यहां साथ बैठकर चतुश्ग्रह युति बनाए तो कर्क लग्न के लिए यह 'परम योगप्रद' स्थिति है। ऐसे जातक का जन्म वैशाख माह कृष्ण पक्ष अमावस्या को दोपहर 12 बजे के आस-पास होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–वहां पर यदि मंगल हो तो **'किम्बहुना योग'** बनेगा। अर्थात् सूर्य उच्च का एवं मंगल स्वगृही एक साथ हो तो इससे अधिक और क्या हो? यह उत्तम राजयोग है। ऐसा जातक राजातुल्य प्रभुत्व एवं ऐश्वर्य को भोगेगा।
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य बुध की युति से **'बुधादित्य योग'** बनता है। उच्च के सूर्य के साथ केन्द्र में यह युति ज्यादा खिलेगी। जातक धनवान व महान पराक्रमी होगा एवं रविकृत राजयोग के कारण सरकारी कार्यों में उसे लाभ मिलेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ भाग्येश गुरु होने से जातक परम भाग्यशाली होगा। जातक आस्तिक बुद्धि वाला एवं धर्मध्वज होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र जातक को अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला एवं उच्च वाहन का स्वामी बनाएगा।
6. **सूर्य+शनि**–सूर्य शनि की यह युति यहां पर **'नीचभंग राजयोग'** की सृष्टि करेगी। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रम यशस्वी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।

7. **सूर्य+राहु**–यह युति जातक को राजकाज में बाधा पंहुचायेगी। जातक को पिता का सुख कम मिलेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु सरकारी कार्यों में बाधक है।

दशम भाव के सूर्य का उपचार–

1. ऐसा जातक नीले, काले कपड़े न पहने न ही इस रंग के रुमाल भी पास में रखे।
2. पैतृक मकान में हैण्डपम्प लगवाएं।
3. भूरी भैंस या भूरा बछड़ा पालें।
4. नंगा सिर न रहें। शिखा रखें या लाल, सफेद, पीले रंग की टोपी या साफा बांधें।
5. नेवला पालें।
6. राजनीति में ऊंचे पद की प्राप्ति हेतु 'सूर्ययाग' करें।
7. नवरत्न जड़ित 'सूर्ययंत्र' गले में धारण करें।

कर्क लग्न में सूर्य एकादश भाव में

धनेश सूर्य लाभस्थान में अपने घर से दशम होने के कारण पूर्णतः लाभदायक है। जातक को खूब आर्थिक लाभ मिलेगा। जातक को मित्रों, भाई–बहनों द्वारा अकल्पनीय लाभ मिलता रहेगा।

पितृकारक तरीके पितृस्थान से तीसरे पर होने के कारण पिता से सम्बन्ध अन्छे रहेंगे। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

दशम भाव का कारक होकर दशम भाव से दूसरे स्थान में होने के कारण धंधा खूब चमकेगा। सट्टा, लॉटरी, शेयर में भी धन मिलेगा। मेहनत का पूरा–पूरा फल मिलेगा।

एक पुत्रयोग–पंचम भाव पर पूर्ण दृष्टि होंने के कारण जातक का एक तेजस्वी पुत्र होगा।

दृष्टिफल–यहां सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में पंचम भाव को देखता है। ऐसे जातक को विद्या एवं सन्तान पक्ष से लाभ होगा।

दशा–सूर्य की दशा खूब अच्छा फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री है। यदि सूर्य के साथ चन्द्रमा हो अथवा चन्द्र लग्न में हो तो **'भोज-संहिता'** के अनुसार **'अमरकीर्ति योग'** बनता है। जातक दानी, प्रसिद्ध एवं खूब यशस्वी होगा। ऐसे जातक को मरणोपरान्त भी उसके कुटुम्बीजन एवं समाज के लोग

व प्रशंसक याद करते रहते हैं। ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष अमावस्या को दिन के 10 बजे के लगभग होगा।

2. **सूर्य+मंगल**—यहां सूर्य+मंगल की युति जातक को परिश्रम का लाभ दिलायेगी। जातक के तीन से चार पुत्र होंगे। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
3. **सूर्य+बुध**—इस युति से '**बुधादित्य योग**' बनता है। जातक पराक्रमी होगा एवं उद्योगपति भी होगा। जातक की व्यापार में प्रवृत्ति ज्यादा रहेगी।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु की युति धनेश, भाग्येश की युति कहलायेगी। जातक भाग्यशूर होगा। उसके पुत्र संतति अधिक होगी। जातक उच्च शिक्षा आर्जित करेगा एवं सभ्य होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ स्वगृही शुक्र जातक को उत्तम वाहन, सभी प्रकार के सुख देगा। जातक सम्पन्न होगा। पुत्र एवं कन्या दोनों प्रकार की सन्तति होगी।
6. **सूर्य+शनि**—ऐसे जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है। पत्नी कमाऊ होगी या ससुराल से धन मिलेगा। पिता की मृत्यु के बाद जातक का स्वतंत्र भाग्योदय विशेष रूप से होता है।
7. **सूर्य+राहु**—ऐसे जातक को व्यापार-व्यवसाय में आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जातक के अध्ययन में रुकावट भी आ सकती है।
8. **सूर्य+केतु**—जातक को संतति संबंधी चिन्ता रहेगी। एकाध गर्भपात संभव है।

एकादश भाव के सूर्य का उपचार—

1. शराब, मांस-मछली खाना छोड़ दें।
2. सुवर्ण-पत्र पर सूर्य की मूर्ति बनवाकर गले में धारण करें।
3. मूली का दान रात्रि में सिरहाने रखकर सुबह मंदिर में भेट करें।
4. 40-43 दिन रेत के बिस्तर पर सोना।
5. झूठा खाना व झूठ बोलना दोनों से परहेज रखें।
6. जीवित बकरा कसाई से छुडाएं। जीवनदान करें।

कर्क लग्न में सूर्य द्वादश भाव में

धनेश सूर्य बारहवें मिथुन राशि में होने के कारण जातक की आर्थिक स्थिति विषम होगी। जातक परिश्रमपूर्वक कमाया हुआ सारा धन खर्च कर देता है परन्तु यह खर्च मांगलिक व शुभ होता है।

पितृकारक तरीके सूर्य बारहवें होने से पिता का सुख कमजोर रहेगा। ऐसी गृह स्थिति वाले जातक को स्वतन्त्र धंधा

या व्यापार करना चाहिए। लग्नेश की स्थिति यदि अच्छी न हो तो धन का संग्रह दूसरों के नाम से करना चाहिए।

विशेष–

1. सूर्य यहां नेत्रपीड़ा देता है।
2. धनेश सूर्य बारहवें होने से '**धनहीन योग**' की सृष्टि होती है। जातक के पास रुपया आएगा एवं खर्च होता चला जाएगा।

दृष्टिफल–यहां सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि में गुरु की धनु राशि, षष्टम भाव को देख रहा है। ऐसा जातक फिजूल खर्च होता है तथा शत्रु का परास्त करने में सफलता प्राप्त करता हैं।

दशाफल–सूर्य की दशा खर्च और चिन्ता बढ़ाएगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ माह कृष्ण पक्ष प्रात: 8 बजे के लगभग होता है। **लग्नभंग योग** के कारण जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता।
2. **सूर्य+मंगल**–यह कुण्डली मांगलिक कहलाएगी। जिसके कारण संततिहीन योग व **राजभंग योग** भी बनता है। खासकर पुत्र संतति की चिंता रहेगी। सरकारी परेशानी एवं पुरुषार्थ का लाभ नहीं होगा।
3. **सूर्य+बुध**–यदि यहां बुध हो तो '**बुधादित्य योग**' बनेगा। व्ययेश व्यय स्थान में स्वगृही होने से विपरीत राजयोग बना। जातक निसंदेह धनवान होगा। यात्राएं अधिक करेगा। यात्राओं से लाभ रहेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–भाग्येश बारहवें जाने से '**भाग्यभंग योग**' बना परन्तु षष्टेश का व्यय भाव से जाने से विपरीत राजयोग भी बना। ऐसा जातक निसंदेह धनवान होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र होने से '**लाभभंग योग**', '**सुखहीन योग**' बनता है। पर द्वादश शुक्र राजयोग कारक माना गया है। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। यात्राएं अधिक होंगी। नेत्रपीड़ा अवश्य होगी। आंखों का ऑपरेशन कराना पड़ेगा।
6. **सूर्य+शनि**–सप्तमेश बारहवें जाने से विलम्ब विवाह गृहस्थ सुख में बाधा की अनुभूति होगी। परन्तु अष्टमेश के द्वादश में जाने से **विपरीत राजयोग** भी बनेगा। जातक धनवान होगा पर शत्रु परेशान करेंगे।
7. **सूर्य+राहु**–राहु के साथ सूर्य यात्रा में दुर्घटना कराएगा। जातक को राजभय रहेगा। बुरे सपने आयेंगे। आर्थिक संघर्ष जीवन पर्यन्त रहेगा।
8. **सूर्य+केतु**–जातक आध्यात्मिक विचारों वाला होगा। जो सपने आयेंगे, सच हो जायेंगे। अचानक बोलेगा तो सच हो जायेगा। दुर्घटना होगी पर बचाव भी होगा। अन्तिम समय घर के बाहर रहेगा।

द्वादश भाव के सूर्य का उपचार–

1. मशीनरी के काम न करें।
2. मकान के आंगन जरूर रखें एवं सूर्य की रोशनी आनी चाहिए।
3. भूरी चींटी को कीडी नगरा दें।
4. बिजली का सामान मुफ्त न लें, बिजली चोरी न करें।
5. गले में सूर्य का सुवर्णफूल पहनें।
6. रविवार को नियमित व्रत करें।
7. माणिक्य युक्त 'सूर्य यंत्र' गले में पहनें।
8. गुड़ की 11 डलियां रविवार के दिन चलते पानी में बहाएं।
9. घर का आंगन खुला रखें तो सूर्य देवता प्रसन्न रहेंगे।
10. रविवार के दिन चारपाई या पलंग के पायों में सात तांबें की कील लगाएं। नींद अच्छी आएगी।
11. नेत्र पीड़ा की निवृत्ति हेतु **'नेत्रोपनिषद'** का पाठ करें।
12. धन प्राप्ति हेतु शिवप्रोक्त **'सूर्याष्टकम्'** का नित्य पाठ करें।

❑❑❑

कर्क लग्न में चन्द्रमा की स्थिति

कर्क लग्न में चन्द्रमा प्रथम भाव में

लग्नेश चन्द्र प्रथम भाव में स्थित होने से ऐसा जातक माता-पिता द्वारा तरस कर ली गई संतान होती है। जातक माता-पिता की विलम्ब से प्राप्त संतति होती है।

निशानी–ऐसा स्त्री या माता की सलाह पर काम करने वाला, चांदी के बर्तन में भोजन करने वाला होता है। चन्द्रमा लग्न में होने से स्वगृही होता है। ऐसे जातक का मन मजबूत एवं पत्नी सुन्दर होती है। जातक शास्त्रज्ञ होता है।

यामिनीनाथ योग–स्वगृही चन्द्रमा केन्द्र में होने से '**यामिनीनाथ योग**' बनता है। ऐसा व्यक्ति आनन्दी स्वभाव एवं दीर्घायु वाला होगा। मातृकारक चन्द्रमा, मातृस्थान से दसवें होने के कारण जातक का माता के साथ अच्छा संबंध होगा।

यदि यह चन्द्रमा पूर्णिमा का हो तो जातक अकेला ही समस्त शत्रु बलों को नष्ट करने वाला ऐश्वर्यशाली राजा होता है।

दृष्टि (Vision) –यहां चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रु दृष्टि से शनि की मकर राशि को एवं सप्तम भाव को देखता है। अतः जातक को सामान्य असंतोष के साथ स्त्री तथा भोग की प्राप्ति होती है। पत्नी का पूर्णसुख सप्तमेश शनि की स्थिति पर निर्भर करता है।

विशेष-यदि इस कुण्डली में सूर्य मीन राशि में हो तो 'जातक पारिजात' अ.-7/श्लोक 58 के अनुसार जातक राजा होता है।

बुद्धि एवं शिक्षा–ऐसा जातक पढ़ा लिखा, बुद्धिमान, परोपकारी, राज-दरबार में प्रतिष्ठा पाने वाला, माता का सेवक, बहुत बहनों वाला, स्त्री/माता की बात मानकर चलने वाला, चालचलन का नेक, शुद्ध दन्तावली वाला, प्रसिद्ध नेता एवं प्रभावशाली व्यक्ति होता है।

दशाफल–चन्द्रमा की दशा जातक को अच्छा फल देगी। गुप्त लाभ होगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+गुरु**–लग्नस्थ चन्द्रमा की यदि गुरु के साथ युति हो तो '**किम्बहुना योग**' बनेगा। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहता है।

2. **चन्द्र+मंगल**–चन्द्रमा के साथ मंगल होने से '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। ऐसा जातक धनवान होगा। उसके राज्य एवं सन्तान सुख दोनों उत्तम होंगे।
3. **चन्द्र+शनि**–यहां चन्द्रमा के साथ शनि होने से '**निष्ठुरभाषी योग**' बनेगा। जातक की वाणी अप्रिय होगी।
4. यदि चन्द्रमा के साथ राहु या केतु में से कोई ग्रह हो तो '**ग्रहण योग**' बनेगा। जातक मानसिक तनाव में रहेगा।
5. **चन्द्र+सूर्य**–चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो व्यक्ति का जन्म श्रावण की पूर्णिमा को सुबह जल्दी सूर्योदय के समय होगा। ऐसा जातक अपने स्वयं के पराक्रम व पुरुषार्थ से अच्छा रुपया कमाएगा। आयु के 24वें वर्ष में उसका भाग्योदय हो जाएगा। ऐसा जातक राजा होता है।
6. **चन्द्र+बुध**–चन्द्रमा के साथ बुध लग्नस्थ होने पर जातक अपने कुटुम्ब का नाम अच्छे कार्य से दीपक के समान रोशन करेगा। जातक की पत्नी सुन्दर (रुप की रानी) होगी।
7. **चन्द्र+शुक्र**–चन्द्रमा के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र होने से जातक उत्तम वाहन का स्वामी होगा। पत्नी रूप की रानी एवं कामक्रीड़ा में जातक को संतुष्टि प्रदान करने वाली होगी। विवाह के बाद ही जातक की किस्मत जागेगी।
8. **चन्द्र+राहु**–ऐसा जातक सौम्य स्वभाव का होते हुए भी थोड़ा लड़ाकू किस्म का होगा। जातक को विचारों में अस्थिरता बनी रहेगी।
9. **चन्द्र+केतु**–ऐसा जातक धर्म ध्वज एवं समाज में यश-कीर्ति प्राप्त करने वाला व्यक्ति होगा परन्तु पत्नी का सुख कमजोर रहेगा।

प्रथम भाव के चंद्रमा का उपचार–

1. चांदी के बर्तन में खाना-पीना करें तो भाग्य पलटेगा।
2. वट के वृक्ष को सोमवार-सोमवार पानी डालें।
3. माता की सेवा करें एवं माता से आशीर्वाद रूप में चावल, चांदी लें।
4. विवाह 24 वर्ष के बाद ही करना चाहिए।
5. यदि मानसिक तनाव ज्यादा हो तो पलंग के चारों पायों में चार तांबें की कीलें सोमवार को लगा दें तो जातक को अच्छी नींद आएगी।
6. नव मोती युक्त चन्द्र यंत्र गले में धारण करें।
7. मोतियों की माला पहनें।
8. सफेद वस्त्र पहनने पर अधिक जोर दें।

कर्क लग्न में चन्द्रमा द्वितीय भाव में

लग्नेश चन्द्र द्वितीय भाव में स्थित होने से यह जातक शुभ संतति वाला, हंसमुख, रोते हुए को हंसाने वाला, मीठा बोलने वाला, भाई-बहनों से युक्त, पिता व ससुराल दोनों ही स्थानों

से धन-संपत्ति पाने वाला होता है।

व्यवसाय का चयन–सफेद वस्तुओं के व्यापार से लाभ पाने वाला।

निशानी–ऐसे जातक को 18 वर्ष की आयु में ही सही लाइन मिल जाती है।

दृष्टि (Vision)–यहां से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रु दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि, अष्टम भाव को देखता है। अत: आयु के संबंध में कुछ परेशानियां आती हैं।

जीवन में प्रतिष्ठा एवं सफलता–जातक जाति व समाज में सम्मान पाने वाला, स्वपराक्रम से धन अर्जित करने वाला, सफल व्यक्ति होता है।

परिवर्तन योग–सूर्य+चन्द्र के परस्पर **'परिवर्तन योग'** के कारण जातक स्वयं के पुरुषार्थ, पराक्रम से यथेष्ट धन कमाएगा। जातक **'लक्षाधिपति'** होगा।

दशाफल–चन्द्रमा की दशा मध्यम फल देगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–यदि चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक खुद के परिश्रम से खूब रुपया कमाएगा तथा उसका जन्म भाद्र माह की अमावस्या को सूर्योदय के एक घंटे पूर्व होगा।
2. **चन्द्र+मंगल**–चन्द्रमा के साथ यदि मंगल हो तो लग्नेश व पंचमेश+दशमेश की यह युति विद्या द्वारा, ठेकेदारी एवं राजकार्य द्वारा धन प्राप्ति की सूचना देती है। जातक नि:संदेह धनवान होगा।
3. **चन्द्र+बुध**–लग्नेश, तृतीयेश+खर्चेश की युति धनस्थान में धन का अपव्यय करायेगी। यथेष्ट धन संग्रह के प्रति जीवन संघर्षमय रहेगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–भाग्येश+षष्टेश गुरु की लग्नेश चन्द्र के साथ धनस्थान में युति **गजकेसरी योग** के कारण धनदायक है। ऐसे व्यक्ति को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक धर्म-कर्म से पैसा कमायेगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**–चन्द्रमा के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र होने से जातक धनवान होगा एवं विलासिता में रुपया खर्च करेगा। जातक कला-संगीत, नृत्य-अभिनय, फोटोग्राफी में रुचि रखेगा।
6. **चन्द्र+शनि**–सप्तमेश+अष्टमेश शनि की युति लग्नेश चन्द्र के साथ धनस्थान में होने से व्यक्ति का धन औरत, बच्चों की देखरेख एवं बीमारी के रखरखाव में खर्च होगा। आर्थिक संघर्ष की स्थिति रहेगी।
7. **चन्द्र+राहु**–धन स्थान में राहु शत्रुक्षेत्री है व अपने शत्रु के साथ है। फलत: धन के घड़े में छेद है। धन संग्रह नहीं होगा। जातक की वाणी में विश्वसनीयता नहीं रहेगी।

8. **चन्द्र+केतु**–धनस्थान में केतु भी शत्रुक्षेत्री है। ऐसे जातक को दन्त रोग रहेगा। वाणी कपटपूर्ण होगी।
9. यहां चन्द्रमा के साथ यदि कोई पाप ग्रह हो तो विद्या में रूकावट और यदि शुभ ग्रह हो तो 'धनयुते बहुविद्यावान्' जातक विद्यावान एवं धनवान होगा।

द्वितीय भाव के चंद्रमा का उपचार–

1. माता का आशीर्वाद पैरी पैना कहकर लें।
2. माता की सेवा करके, माता से चावल, चांदी लेकर पास रखें।
3. घर में घंटी, शंख न रखें।
4. मकान की नींव में चांदी का सिक्का दबाएं।
5. मानसिक तनाव ज्यादा हो तो मोती के साथ 'चंद्र यंत्र' पहनें।

कर्क लग्न में चन्द्रमा तृतीय भाव में

लग्नेश चन्द्र तृतीय भाव में स्थित होने से चन्द्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसा व्यक्ति राज्य सरकार द्वारा सम्मानित होता है। जातक लम्बी आयु वाला, बहुत यात्राएं करने वाला, भाई-बहन व परिवार को पालने वाला होता है, परन्तु परिवार वालों से उसे यश नहीं मिलता।

निशानी–जातक शतरंज, तैराकी का शौकीन होता है पर जलभय का खतरा बना रहता है।

दृष्टि (Vision)–यहां से चन्द्रमा सातवीं मित्र दृष्टि से नवम भाव को गुरु की मीन राशि में देखता है। अत: जातक की भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में उन्नति होती है।

जीवन में प्रतिष्ठा एवं सफलता–24 वें वर्ष से भाग्योदय होगा। गाय-भैंस या वाहन के रख-रखाव पर बहुत खर्च होगा अथवा ज्योतिष या साहित्य के रख-रखाव में रुपया खर्च करेगा।

दशाफल–चन्द्रमा की दशा भाग्योदय कराएगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चंद्रमा के साथ सूर्य होने से ऐसे जातक का जन्म आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस्या की रात्रि को 2 बजे के लगभग होता है। ऐसा व्यक्ति महान पराक्रमी होता है। जातक अपने भाग्य का द्वार स्वयं के कठिन परिश्रम से खोलता है।
2. **चन्द्र+मंगल**–चंद्र+मंगल की युति से **लक्ष्मी योग** बनता है। जातक के भाई-बहन होंगे। कुटुम्बीजन एवं मित्रों कमी नहीं होगी। परन्तु रिश्तेदारों में जातक के प्रति ईर्ष्या की भावना रहेगी।

3. **चन्द्र+बुध**–यहां बुध उच्च का होगा जो कि खर्चेश भी है। जातक महान पराक्रमी एवं कीर्तिवान होगा। जातक अपनी शान-शौकत के रख-रखाव में काफी रुपया खर्च करेगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–यहां गुरु की युति से **गजकेसरी योग** बनेगा। जातक भाग्यशाली होगा। जीवन में विशिष्ट सफलता 32 वर्ष की आयु बाद मिलेगी।
5. **चन्द्र+शुक्र**–शुक्र यहां नीच राशि में होगा पर सुखेश+लाभेश शुक्र की लग्नेश के साथ युति होने से जातक को अपनी स्वयं की स्त्री एवं अन्य स्त्रियों से लाभ होगा। जातक पराक्रमी होगा। बहनों की संख्या अधिक होगी।
6. **चन्द्र+शनि**–सप्तमेश+अष्टमेश की युति लग्नेश के साथ **विष योग** की सृष्टि करेगी। जातक के परिजन, मित्र षड्यंत्रकारी होंगे। अपकीर्ति का योग अधिक है।
7. **चन्द्र+राहु**–चन्द्रमा के साथ यदि राहु हो तो आयु के 24 वें वर्ष में राजदण्ड से भय रहेगा। जीवन में सरकारी परेशानी आएगी। ऐसे जातक की माता की मृत्यु छोटी उम्र में होती है। मित्रों से दगा मिलेगा। परिजनों से भारी मनमुटाव का संकेत देता है। मुकदमेबाजी की नौबत आ सकती है।
8. **चन्द्र+केतु**–जातक कीर्तिवन्त व यशस्वी होगा पर उसकी पीठ पीछे सदैव बुराई होती रहेगी। जातक के परिजन विश्वास योग्य नहीं होंगे।

तृतीय भाव के चंद्रमा का उपचार–

1. लड़की के जन्म पर चन्द्र की चीजों दूध, चावल, चांदी का दान करें।
2. घर आए मेहमान को दूध पिलाएं।
3. लड़के के जन्म पर सूर्य की चीजों कनक, गुड़, तांबा का दान करें।
4. कुंवारी कन्याओं का पूजन करें।
5. बहन, लडकी का कन्यादान करें।

कर्क लग्न में चन्द्रमा चतुर्थ भाव में

लग्नेश चन्द्र चतुर्थ भाव में स्थित होने से जातक माता का आज्ञाकारी, जमीन/जायदाद एवं वाहन सुख वाला होता है, उस पर कुछ गर्वीला होने से किसी का अहसान नहीं मानता है। जातक बुजुर्गों की धन-सम्पत्ति को कम करता है तथा प्राय: आत्मीय जनों की आलोचना से दु:खी रहता है, पर राजनीति में पूर्ण सफल होता है।

यामिनीनाथ योग–चन्द्रमा केन्द्र में होने से यह योग बना। ऐसा व्यक्ति आनन्दी स्वभाव का एवं दीर्घायु वाला होता है। मातृकारक चन्द्रमा मातृस्थान में होने से जातक का माता एवं मातृपक्ष से अच्छा सम्बन्ध होता है।

निशानी–ऐसा जातक 'राज्यभिषिक्त: अश्वदान्' राज्य दरबार में शामिल होता है तथा अच्छे वाहन का स्वामी होता है।

दृष्टि (Vision)–यहां चन्द्रमा सातवीं मित्र दृष्टि से मंगल को मेष राशि में दशम भाव को देखता है। अत: जातक के पिता स्थान की उन्नति होती है।

दशाफल–चन्द्रमा की दशा में जातक को नौकरी मिलेगी। नए वाहन एवं सुख की प्राप्ति होगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चन्द्रमा के साथ सूर्य होने से जातक का जन्म कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की मध्य रात्रि को होगा। ऐसा जातक अपने पुरुषार्थ से यथेष्ट धन कमायेगा पर सरकारी नौकरी लगते-लगते रह जाएगी।
2. **चन्द्र+मंगल**–यदि चन्द्रमा के साथ मंगल हो तो जातक **'लक्ष्मी योग'** के कारण लक्षाधिपति होगा एवं उसके जीवन में धन की कोई कमी नहीं रहेगी।
3. **चन्द्र+बुध**–यदि यहां बुध हो तो माता एवं मातृपक्ष से विवाद बना रहेगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–यदि चन्द्रमा के साथ गुरु हो तो **'गजकेसरी योग'** के कारण जातक अत्यधिक भाग्यशाली होगा एवं जीवन में उसका कोई कार्य रुका हुआ नहीं रहेगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**–चन्द्रमा के साथ यदि शुक्र हो तो **'मालव्य योग'** बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक श्रेष्ठ वाहन एवं श्रेष्ठ बंगले का स्वामी होगा तथा व्यापार से खूब रुपया कमाएगा।
6. **चन्द्र+शनि**–यहां शनि उच्च का होने से **'शशयोग'** बनेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा। विवाह के बाद एवं शनि की दशा में जातक की किस्मत चमकेगी। परन्तु गुप्त शत्रु भी जातक के बहुत रहेंगे।
7. **चन्द्र+राहु**–यहां राहु जातक की माता को कष्ट पहुंचायेगा या अचानक वाहन दुर्घटना कराएगा।
8. **चन्द्र+केतु**–यहां केतु के कारण जातक की माता बीमारी से तकलीफ उठायेगी। वाहन दुर्घटना भी होगी पर बचाव हो जायेगा। राजा से दण्ड का भय रहेगा।

चतुर्थ भाव के चंद्रमा का उपचार–

1. सुबह काम करते समय दूध का कुम्भ रखना।
2. दूध का दान दें या घर आए मेहमान को दूध या घी खिलाएं।
3. दूध न बेचे, डेयरी का काम बिल्कुल न करें।
4. माता के साथ हिस्सादारी में व्यापार करना।
5. मंत्रपूत, 'चंद्रयंत्र' मोती जड़ा हुआ गले में पहनें।

असुविधा की अवस्था में लेखक से सम्पर्क कर सकते हैं।

कर्क लग्न में चन्द्रमा पंचम भाव में

लग्नेश चन्द्र पंचम भाव में स्थित होने से चन्द्रमा नीच का होगा तथा उसकी दृष्टि अपनी उच्च राशि पर होगी। ऐसा व्यक्ति राजा की किस्मत वाला, न्याय मूर्ति, राजदरबार में विजय पाने

वाला, लम्बी आयु, प्राय: प्रथम संतति कन्या वाला होता है तथा उसकी संतान बहुत तरक्की करती है।

निशानी–पहली संतति कन्या होगी। जुड़वां बच्चे भी संभव हैं। जातक खट्टा स्वाद पसन्द करेगा। जातक की छाती पर लांछन होता है। पंचम भाव में यदि पुरुष ग्रह हो तो फलादेश बदल सकता है।

ऐसा व्यक्ति किसी के आगे नहीं झुकेगा। अन्य शुभ योग हों तो जातक राजनीति में बहुत बड़ा पद प्राप्त करेगा। ऐसे जातक की स्त्री प्रजावान, रूपवती किन्तु कुछ व कोपवती होगी।

दृष्टि–यहां से चन्द्रमा सातवीं उच्च दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में एकादश भाव को देखता है। अत: जातक आर्थिक-लाभ के लिए अपनी मानसिक तथा शारीरिक शक्तियों एवं गुप्त युक्तियों का प्रयोग करता है और उसमें उसे सफलता प्राप्त होती है। विशेष सफलता मंगल की स्थिति पर निर्भर है।

धार्मिक एवं आध्यात्मिक सोच–धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ व देवताओं की निरन्तर पूजा करने से इसकी शक्ति प्राप्त होगी।

दशाफल–चन्द्रमा की दशा सफलता देने वाली होगी।

परिवर्तन योग–लग्न में मंगल हो चन्द्र+मंगल के परस्पर **परिवर्तन योग** से जातक विद्यावान, उत्तम सन्तति युक्त, व्यापार प्रिय एवं धनवान होगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चन्द्रमा के साथ सूर्य होने से जातक का जन्म मार्गशीर्ष माह के कृष्ण पक्ष में अमावस्या की रात्रि 10 बजे के आस-पास होता है। धनेश+लग्नेश की इस युति से जातक विद्यावान एवं तेजस्वी होगा। जातक को पुत्र एवं कन्या संतति दोनों की प्राप्ति होगी।
2. **चन्द्र+मंगल**–यदि चन्द्रमा के साथ मंगल होगा तो **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। ऐसे में अशुभ फल कम होकर चन्द्र+मंगल युति से **'लक्ष्मी योग'** बनता है। जातक आर्थिक रूप से सम्पन्न होगा तथा भूमि ठेकेदारी एवं विद्या के माध्यम से धन कमाएगा।
3. **चन्द्र+बुध**–चन्द्रमा के साथ तृतीयेश+खर्चेश बुध पंचम भाव में होने से जातक विद्या अध्ययन के लिए जन्म स्थान से दूर जायेगा। विदेश भी जा सकता है। अध्ययन संघर्षपूर्ण रहेगा। फिर भी सफलता मिलेगी।
4. **चन्द्र+गुरु**–चंद्रमा के साथ गुरु होने से **'गजकेसरी योग'** बनेगा। जातक भाग्यशाली होगा एवं व्यापार मार्ग से आगे बढ़ता हुआ, उत्तम उद्योगपति भी बन सकता है। उसे प्रथम पुत्र होगा। कन्याएं भी होंगी।
5. **चन्द्र+शुक्र**–चन्द्रमा के सामने शुक्र स्वगृही हो तो जातक कला प्रेमी होगा पर कन्या संतति अधिक होगी।

6. **चन्द्र+शनि**–चन्द्रमा के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि की युति कष्टदायक है। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा। विदेश जाने के अवसर भी उसे मिलेंगे पर ऐन वक्त पर विद्या धोखा देगी। विष भोज्य का भय रहेगा।
7. **चन्द्र+राहु**–मातृशाप, पितृदोष से पुत्र संतति में बाधा संभव है। पुत्र यदि है तो उसकी उन्नति में बाधाएं रहेंगी। विद्या में रुकावट निश्चित है।
8. **चन्द्र+केतु**–गर्भपात, शल्यचिकित्सा से संतति की प्राप्ति कष्ट साध्य होगी। विद्या में निरन्तर संघर्ष का संकेत है।

पंचम भाव के चंद्रमा का उपचार–

1. जंगल-पहाड़ की सैर करें तो उत्तम रहेगा।
2. कोई भी नया काम प्रारम्भ करने से पहले परिपक्व व्यक्ति से सलाह लेकर काम करें।
3. मोती युक्त **'चंद्र यंत्र'** धारण करें।

कर्क लग्न में चन्द्रमा षष्टम भाव में

लग्नेश चन्द्र षष्टम भाव में स्थित होने से ऐसे जातक के पेट में खराबी एवं व्यापार में बार-बार तबदीली आती है। ऐसा व्यक्ति तड़पते के मुंह में पानी डालने वाला, हर एक का हमदर्द होता है पर इसके गुप्त शत्रु बहुत होते हैं।

विशेष–लग्नेश होकर चन्द्रमा के छठे स्थान में जाने से **'लग्नभंग योग'** बना। ऐसे जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ता है।

निशानी–आयु के 36 वें वर्ष में अपने से बड़ी या विधवा स्त्री से संसर्ग के योग बनेंगे।

दृष्टि (Vision)–यहां से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि में बुध की मिथुन राशि, द्वादश भाव को देखता है। अत: जातक को खर्च अधिक रहता है। बाहरी यात्राओं में सम्मान मिलता है।

जीवन में प्रतिष्ठा एवं सफलता–माता के लिए इसका जन्म नेष्ट होता है और ऐसा जातक सदैव मानसिक परेशानी से त्रस्त रहेगा।

दशाफल–चन्द्रमा की दशा नेष्ट फल देगी।

परिवर्तन योग–यदि गुरु लग्न में हो तो परस्पर **परिवर्तन योग** एवं 'हंसयोग' के कारण **लग्नभंग योग** नष्ट होकर चन्द्रमा का अशुभत्व नष्ट हो जाएगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चंद्रमा के साथ सूर्य होने से जातक का जन्म पौष माह में कृष्ण पक्ष की अमावस्या को रात्रिकाल 8 बजे के लगभग होगा। सूर्य छठे जाने से **'धनहीन योग'** बनेगा। जातक को पुरुषार्थ का लाभ नहीं मिलेगा एवं धन प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।

2. **चन्द्र+मंगल**—यहां चन्द्र+मंगल की युति **'लक्ष्मी योग'** होते हुए भी ज्यादा सार्थक नहीं है। मंगल छठे जाने से **राजभंग योग**, **संततिहीन योग** भी बनता है। जातक को आजीविका हेतु, योग्य संतान की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **चन्द्र+बुध**—पराक्रमेश छठे जाने से एक बार पराक्रम भंग होगा परन्तु व्ययेश का छठे जाने से **'विपरीत राजयोग'** बनेगा। जातक धनवान होगा। निजी मकान, निजी वाहन का सुख है पर जीवन संघर्षपूर्ण रहेगा।
4. **चन्द्र+गुरु**—चन्द्रमा के साथ यदि गुरु हो तो जातक के भाग्योदय में निरन्तर बाधा आती रहेगी पर **'गजकेसरी योग'** के कारण कोई काम अटका हुआ नहीं रहेगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**—सुखेश+लाभेश शुक्र छठे जाने से **सुखहीन योग** एवं **लाभभंग योग** बना। ऐसे जातक को स्त्री सुख में कुछ न कुछ कमी महसूस होती रहेगी। जिसके कारण मानसिक शान्ति भंग होगी।
6. **चन्द्र+शनि**—शनि छठे होने से **विलम्ब विवाह योग** बनता है। गृहस्थ सुख विवादित रहेगा परन्तु अष्टमेश छठे जाने से **विपरीत राजयोग** भी बनेगा। जातक धनवान तथा उच्च श्रेणी का व्यापारी होगा।
7. **चन्द्र+राहु**—जातक की माता को लम्बी बीमारी या दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **चन्द्र+केतु**—जातक के पांव में चोट पहुंच सकती है अथवा पांव में जहरीला फोडा होगा।
9. यदि चन्द्रमा राहु या केतु के साथ है तो—'राहुकेतुयुते अर्थहीन' जातक सदैव अर्थाभाव में संघर्ष करता रहेगा।

षष्टम भाव के चंद्रमा का उपचार—

1. अपना भेद किसी को न बताओ।
2. घर में ख़रगोश की पालना करें।
3. मंत्रपूत मोती जड़ा हुआ 'चंद्र यंत्र' सहित गले में धारण करें।
4. 'चंद्रकवच' का पाठ करें।
5. रात्रि को दूध न पीएं।

कर्क लग्न में चन्द्रमा सप्तम भाव में

लग्नेश चन्द्र सप्तम भाव में स्थित होने से यह जातक अपने पराक्रम से आगे बढ़ता है। ऐसा जातक धन-दौलत की कमी न पाने वाला, कट्टर स्वाभिमानी होता है तथा किसी के आगे हाथ नहीं फैलाता।

निशानी—जातक की स्त्री सुन्दर व शुभ लक्षणों से युक्त

होती है। जातक ज्योतिषी, कवि, लेखक या योगाभ्यासी होता है। '**यामिनीनाथ योग**' के कारण जातक आनन्दी एवं विनोदी स्वभाव का होता है एवं सकारात्मक विचारों वाला होता है।

विशेष–लग्नेश के लग्न को देखने के कारण '**लग्नाधिपति योग**' बना। ऐसा जातक अपने स्वयं के परिश्रम व पुरुषार्थ से खूब आगे बढ़ता है। जातक सुखी, धनी, सुन्दर एवं विलासी होता है।

जीवन में प्रतिष्ठा एवं सफलता–जातक की स्त्री धन की देवी, सुन्दर व शुभ लक्षणों से युक्त होती है। ऐसा जातक नित नए विषयों की खोज करने वाला, ज्योतिष, तंत्र-मंत्र में सफलता पाने वाला, जलीय वस्तुओं व यात्राओं से कीर्ति कमाने वाला, अपनी मौत के समय घर पर ही होता है। सत्ता-पक्ष का साथ देने से जातक को प्रमुख पद मिलता है।

दृष्टि (Vision)–यहां से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी कर्क राशि के प्रथम भाव को देखता है। अत: जातक को शारीरिक सौन्दर्य, मनोबल आध्यात्मिक शक्ति एवं लौकिक कार्यों में सफलता मिलती है।

विशेष अनुसंधान एवं दृष्टान्त–चन्द्रमा की दशा में तरक्की होगी।

दशाफल–चन्द्रमा की दशा तरक्की देगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–यदि चन्द्रमा के सामने सूर्य हो तो जातक एक पत्नी व्रत का पालन करने वाला सैद्धान्तिक आदमी होता है। ऐसे जातक का जन्म श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को प्रात: काल सूर्योदय के समय होता है।
2. **चन्द्र+मंगल**–चन्द्रमा के साथ यदि मंगल हो तो '**महालक्ष्मी योग**' बनता है। जातक ठेकेदारी, भूमि-भवन, व्यवसाय में खूब रुपया कमाता है। ऐसी ग्रह स्थिति में यदि सूर्य द्वितीय स्थान में हो तो जातक करोड़पति होता है।
3. **चन्द्र+बुध**–चन्द्रमा के साथ तृतीये+खर्चेश बुध सप्तम भाव में होने से पत्नी को लेकर खर्चा होता रहेगा। जातक अपने ससुराल वालों की सेवा में धन लुटायेगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी।
4. **चन्द्र+गुरु**–लग्नेश एवं भाग्येश गुरु की युति यहां सफल **गजकेसरी योग** की सृष्टि करेगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक की पत्नी सुन्दर, पतिव्रता व धार्मिक होगी। जातक कुल का नाम रोशन करेगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**–चन्द्रमा के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र सप्तम भाव में होने से जातक की पत्नी अत्यधिक सुन्दर (रूप की रानी) होगी। पत्नी से जातक को पूर्ण सुख एवं शान्ति मिलेगी। पत्नी के नाम से किया गया व्यापार फलेगा।
6. **चन्द्र+शनि**–यदि चन्द्रमा के सामने शनि हो तो परस्पर '**परिवर्तन योग**' अत्यन्त सुखद होगा। शनि अपने घर को देखेगा। लग्न एवं प्रतिष्ठा तथा वैवाहिक जीवन दोनों सुखमय हो जाएंगे।

7. **चन्द्र+राहु**–यहां पर राहु की स्थिति जीवन साथी से बिछोहदायक है। जातक के गृहस्थ सुख में न्यूनता बनी रहेगी। वैचारिक विषमता संभव है।
8. **चन्द्र+केतु**–चन्द्रमा के साथ केतु होने से जातक का अपने जीवन साथी के साथ वैचारिक मतभेद रहेगा।
9. यदि चन्द्रमा के साथ सूर्य व शनि हो तो जातक दो स्त्री वाला होता है। जातक का जन्म श्रावण मास की अमावस्या का होगा।

सप्तम भाव के चंद्रमा का उपचार–

1. विवाह के दिन ससुराल से पत्नी के वजन के बराबर दूध, पानी या चावल लाएं या पहले लाएं।
2. चांदी के बर्तन में खाना-पीना शुभ रहेगा।
3. क्लेश दूर करने के लिए 'चंद्र यंत्र' धारण करें।

कर्क लग्न में चन्द्रमा अष्टम भाव में

लग्नेश चन्द्र अष्टम भाव में स्थित होने से ऐसा जातक बुजुर्गों की संपत्ति को बर्बाद करता है। खराब समय में राजदरबार से हानि पाता है। ऐसा जातक अपनी किस्मत को आप चमकाता है।

विशेष–लग्नेश चन्द्रमा यहां अष्टम स्थान में होने के कारण **'लग्नभंग योग'** बना। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता तथा उसे भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ता है।

निशानी–जातक का जन्म ननिहाल के लिए शुभ होता है। जातक को क्षय रोग होने की संभावना अधिक रहेगी।

जीवन में प्रतिष्ठा एवं सफलता–ससुराल ननिहाल के लिए शुभ। ससुराल संबंध में किस्मत चमकेगी। ऐसा जातक अपने कर्त्तव्य पालन के प्रति ज्यादा सतर्क रहता है। ऐसा व्यक्ति कूटनीति में सफल हो सकता है पर राजनीति में कुछ समय ही सफल रह पाएगा।

दृष्टि (Vision)–यहां से चन्द्रमा सातवीं मित्र दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में द्वितीय भाव को देखता है। अत: जातक कठिन शारीरिक श्रम द्वारा धन की प्राप्ति करता है।

दशाफल–चन्द्रमा की दशा संघर्ष कराएगी

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चन्द्रमा के साथ यहां सूर्य होने पर ऐसे जातक का जन्म फाल्गुण माह के कृष्ण पक्ष की अमावस्या को सायं 5 बजे के आस-पास होगा। सूर्य के कारण **धनहीन योग** बनेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। आर्थिक संकट रहेगा।

2. **चन्द्र+मंगल**–मंगल चन्द्रमा के साथ होने से **'सन्ततिहीन योग'** एवं **राजभंग योग** की सृष्टि होती है। यहां **लक्ष्मी योग** ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक को विद्या प्राप्ति हेतु बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। आजीविका के साधान प्राप्ति हेतु भी संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **चन्द्र+बुध**–बुध अष्टम में जाने से **पराक्रम भंगयोग** बनेगा। एक बार जातक की प्रतिष्ठा गिरेगी, परन्तु व्ययेश आठवें होने में **विपरीत राजयोग** बनेगा। जातक धनवान होगा। गाड़ी, बंगले का योग है परन्तु मानसिक तनाव में, शल्य चिकित्सा से मुक्ति नहीं होगी।
4. **चन्द्र+गुरु**–चन्द्रमा के साथ यदि गुरु हो तो 'जातक पारिजात' अ. 5/श्लोक 89 के अनुसार जातक की मृत्यु क्षयरोग से होगी।
5. **चन्द्र+शुक्र**–चन्द्र के साथ शुक्र होने से **'लाभभंग योग'** एवं **सुखहीन योग** बनता है। जातक की माता एवं सासु बीमार रहेंगी। जिसकी वजह से जातक को परेशानी उठानी पड़ेगी। वाहन दुर्घटना का भी भय है। अत: तेजगति से वाहन स्वयं न चलाएं।
6. **चन्द्र+शनि**–चन्द्रमा के साथ यदि शनि हो तो **'विषयोग'** बनेगा। ऐसे जातक का दाम्पत्य जीवन तनावपूर्ण रहेगा। जातक प्राय: **'निष्ठुर भाषी'** होगा।
7. **चन्द्र+राहु**–दुर्घटना का भय, प्राणों पर अचानक संकट आयेगा। राहु व चंद्रमा की दशा में सावधान रहें। महामृत्युंजय का जाप कराएं।
8. **चन्द्र+केतु**–शल्य चिकित्सा का योग बनता है। दाएं पांव में चोट लगने का भय है।
9. चन्द्रमा के साथ यदि राहु या केतु हो तो **'ग्रहण-योग'** बनेगा। जातक को मानसिक परेशानी के साथ धन का अभाव बना रहेगा।

अष्टम भाव के चंद्रमा का उपचार–

1. श्राद्ध या बुजुर्गों के नाम पर दान देना।
2. पनीर/दूध के पानी का इस्तेमाल करें, दूध पीना निषेध।
3. अस्पताल या श्मशान में कुआं या हैण्डपैम्प लगाना।
4. 'चन्द्र यंत्र' धारण करना।
5. बच्चों व बुजुर्गों के पांव धोए।
6. चन्द्रकवच का नित्य पाठ करें।

कर्क लग्न में चन्द्रमा नवम भाव में

लग्नेश चन्द्र नवम भाव में स्थित होने से ऐसा व्यक्ति जन्म से गरीब और फिर धनवान होता है एवं कीचड़ में कमल की तरह भाग्योदय की ओर आगे बढ़ता है। ऐसा व्यक्ति ईमानदार, सामाजिक कार्यकर्त्ता, जननेता एवं धर्मार्थ कार्य में रुचि लेने वाला होता है तथा जनप्रिय होता है। ऐसा व्यक्ति विदेशी कार्य एवं विदेश यात्रा से लाभ कमा सकता है। चन्द्रमा

क्षीण, मध्य व उत्तमबली होने के अनुपात से इनके भाग्यशाली होने का निर्णय लिया जाता है।

निशानी–'तडाक-गोपुरादि-निर्माण पुण्यकर्त्ता' ऐसा जातक बुजुर्गों का नाम रोशन करता है तथा तालाब, प्याऊ, मन्दिर एवं धार्मिक कार्यों के निर्माण में रुचि लेकर पुरखों का नाम रोशन करता है।

दृष्टि–यहां से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से बुध की कन्या राशि, तृतीय भाव को देखता है। अत: जातक को भाई बहन का सुख प्राप्त होता है तथा उसके पराक्रम में वृद्धि होती है।

दशाफल–चन्द्रमा की दशा शुभ फल देगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चन्द्रमा के साथ यदि सूर्य हो तो जातक का जन्म चैत्र माह, कृष्ण पक्ष अमावस्या को दिन के तीन बजे के आस-पास होगा। जातक धनवान होगा। परिश्रम का लाभ मिलेगा।
2. **चन्द्र+मंगल**–चन्द्रमा के साथ मंगल की युति राज्येश+पंचमेश की लग्नेश से युति भाग्य स्थान में कहलायेगी। यह बहुत उत्तम राजयोग कारक युति है। जातक महान पराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय आयु के 28वें वर्ष में हो जाएगा।
3. **चन्द्र+बुध**–चन्द्रमा के साथ पराक्रमेश+खर्चेश बुध की युति जातक को पराक्रमी बनायेगी। बुध यहां नीच का होगा। जातक अपनी उन्नति हेतु, व्यक्तित्व विकास एवं निजी शौक की पूर्ति हेतु बहुत रुपया खर्च करेगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–चन्द्रमा के साथ गुरु हो तो प्रबल **'गजकेसरी योग'** बनता है। जातक राजतुल्य ऐश्वर्य का भोगता है। उसका कोई काम साधन के अभाव में अटका हुआ नहीं रहता। जातक परम भाग्यशाली होता है क्योंकि गुरु स्वगृही है।
5. **चन्द्र+शुक्र**–शुक्र यहां उच्च का होगा। लग्नेश चन्द्र के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र की युति परम सौभाग्यशाली साबित होगी। जातक के पास अनेक वाहन होंगे। उत्तम भवन भी होगा।
6. **चन्द्र+शनि**–चन्द्रमा के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि भाग्य स्थान में होने से मिले-जुले मिश्रित परिणाम मिलेंगे। जातक को ससुराल से मदद मिलेगी। जातक पराक्रमी होगा एवं जीवन में उतार-चढ़ाव के साथ उच्च उपलब्धियों को स्पर्श करेगा।
7. **चन्द्र+राहु**–भाग्य स्थान में मीन का राहु राजयोग बनाएगा।

नवम भाव के चंद्रमा का उपचार–

1. धर्म-कर्म और तीर्थ यात्रा में रुचि लें।
2. 'चन्द्र यंत्र' धारण करें।

कर्क लग्न में चन्द्रमा दशम भाव में

लग्नेश चन्द्र दशम भाव में स्थित होने से उच्चाभिलाषी होकर बैठा हो तो व्यक्ति भंवर में फंसी नाव को पार लगाने वाला, कुल-कुटुम्ब को तारने वाला, बूढ़े-बुजुर्गों की सेवा करने

वाला, अनेक प्रकार के कार्यों से धन कमाने वाला, समाज का सेवक, जनता का प्रिय जननेता होता है। अन्य शुभ योगों के साथ जातक को राजनीति में आशातीत सफलता मिलती है।

निशानी—जातक विद्यावान होगा एवं रहस्यमय विद्याओं का ज्ञाता होगा।

दृष्टि—यहां से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में चतुर्थ भाव को देखता है। अतः जातक के सुख में वृद्धि होगी।

यामिनीनाथ योग—ऐसा जातक आनन्दी एवं विनोदी स्वभाव का होता है। मातृभवन पर दृष्टि होने से माता एवं मातृपक्ष से अच्छा सम्बन्ध होता है।

दशाफल—चन्द्रमा की दशा राज्य में तरक्की एवं सुख में वृद्धि करेगी। नए वाहन की प्राप्ति एवं प्रमोशन की संभावना रहेगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**—चन्द्रमा के साथ सूर्य होने से ऐसे जातक का जन्म वैशाख माह के कृष्ण पक्ष में दिन को 12 बजे के लगभग होता है। **रविकृत राजयोग** के कारण जातक महाधनी होगा।
2. **चन्द्र+मंगल**—चन्द्रमा के साथ मंगल हो तो क्रमशः **'महालक्ष्मी योग'** एवं **'मालव्य योग'** तथा **'पद्मसिंहासन योग'** की सृष्टि होगी। ऐसा जातक साक्षात राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगने वाला परम पराक्रमी होता है। जातक को भूमि से लाभ होगा।
3. **चन्द्र+बुध**—चन्द्रमा के साथ तृतीयेश+व्ययेश बुध होने से राजपक्ष में खराब रहेगा। जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
4. **चन्द्र+गुरु**—चन्द्रमा के साथ गुरु होने से **गजकेसरी योग** बनेगा। जातक धनवान एवं सौभाग्यशाली होगा। ऐसा जातक समाज में, राजनीति में प्रभावशाली व्यक्ति होगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**—यहां शुक्र सुखेश+लाभेश होकर दशम भाव में लग्नेश चन्द्रमा के साथ होने से राजयोग बनाता है। जातक महाभाग्यशाली होगा। उसके पास एक से अधिक वाहन होंगे। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी।
6. **चन्द्र+शनि**—यहां चन्द्रमा के साथ शनि सप्तमेश+अष्टमेश होने के कारण कष्टकारक होगा। शनि नीच का **'विष योग'** बनाएगा। जातक को राजदण्ड का भय रहेगा। गुप्त शुत्र रहेंगे।
7. **चन्द्र+राहु**—चन्द्रमा के साथ राहु सरकारी भय उत्पन्न करेगा। राजदण्ड सम्भव है। कोर्ट-केस में पराजय सम्भव है।
8. **चन्द्र+केतु**—चन्द्रमा के साथ केतु सरकारी कारोबार से नुकसान पहुंचायेगा।

दसम भाव के चंद्रमा का उपचार–

1. रात को दूध ना पीना, क्योंकि यह दूध जहर का काम करेगा।
2. फौरन 'चन्द्रयंत्र' धारण करें।

कर्क लग्न में चन्द्रमा एकादश भाव में

लग्नेश चन्द्र एकादश भाव में स्थित होने से लग्नेश चन्द्रमा उच्च का होगा। जातक माता व संतान से युक्त, दूरदर्शी, दूध/पानी व सफेद वस्तुओं से लाभ पाने वाला होता है।

निशानी–जातक की प्रथम संतति कन्या होगी। यदि पंचम भाव में पुरुष ग्रह हो तो फलादेश बदल सकता है।

दृष्टि–यहां से चन्द्रमा सातवीं नीच दृष्टि से भिन्न मंगल की वृश्चिक राशि में पंचम भाव को देखता है। ऐसे जातक की बुद्धि उर्वरक होगी। जातक प्रजावान एवं विद्यावान होगा।

जीवन में प्रतिष्ठा एवं सफलता–जातक को स्व मकान व स्व वाहन का सुख अवश्य होता है। जीवन की यौवन अवस्था में कदम रखते ही ऐसे जातक उत्तम धन व यश को प्राप्त करने लग जाते हैं। यदि शुक्र की स्थिति शुभ हो तो कहना ही क्या? ऐसा व्यक्ति उच्चवर्गीय राजनेता होता है।

बुद्धि एवं शिक्षा–जातक उच्च शिक्षाधिकारी, वकील, राज्याधिकारी व सामाजिक कार्यकर्ता होता है। जातक पुत्र–पौत्रादि संतान से युक्त होता है तथा उसकी संतान सद्‌गुणी होती है।

दशाफल–चन्द्रमा की दशा उत्तम फल एवं सन्तति देगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–यदि यहां चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक अकेला ही सब शत्रुओं को नष्ट करने वाला राजा होता है।
2. **चन्द्र+मंगल**–चन्द्रमा के साथ पंचमेश व दशमेश मंगल होने से जातक **'महालक्ष्मी योग'** के कारण धनवान होगा। टैक्नीकल, मैकेनिकल कार्य का जानकार होगा एवं बड़ी भूमि का स्वामी होगा।
3. **चन्द्र+बुध**–चन्द्रमा के साथ पराक्रमेश एवं खर्चेश बुध होने से जातक महान पराक्रमी होगा तथा व्यापार में प्रवृत्त होता हुआ धीरे-धीरे बहुत आगे बढ़ जाएगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–चन्द्रमा के साथ गुरु हो तो बहुत ही उत्तम श्रेणी का **'गजकेसरी योग'** होता है। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता है। जातक परोपकारी होता है तथा पुण्यार्थ में धन खर्च करता है, उस पर शुक्र की पूर्ण कृपा रहती है।
5. **चन्द्र+शुक्र**–यहां चन्द्रमा के साथ यदि शुक्र हो तो **'किम्बहुना योग'** की सृष्टि होगी। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता है। उसे मां का सुख, उत्तम वाहन, नौकर एवं श्रेष्ठ भवन का सुख मिलता है। कन्या संतति की बहुलता रहेगी।
6. **चन्द्र+शनि**–चन्द्रमा के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि पत्नी (ससुराल) पक्ष से चिन्ता कराएगा। जातक अपनी मेहनत से आगे बढ़ेगा एवं स्वाभिमानी होगा।

7. **चन्द्र+राहु**–चन्द्रमा के साथ राहु लाभ में बाधा पहुंचाएगा, जातक को व्यापारिक चिन्ता होगी।

8. **चन्द्र+केतु**–चन्द्रमा के साथ केतु जातक को उद्योग से लाभ पहुंचाएगा।

एकादश भाव के चंद्रमा का उपचार–

1. भैरों के मंदिर में दूध देना।
2. बच्चों को 121 पेडे या रेवड़ी बराबर बांटना।
3. नवमोती युक्त 'चन्द्रयंत्र' धारण करें।
4. स्फटिक की माला गले में धारण करें, इससे राजयोग व उत्तम संतति की प्राप्ति होगी।

कर्क लग्न में चन्द्रमा द्वादश भाव में

लग्नेश चन्द्र शत्रुक्षेत्री होकर द्वादश भाव में होने से शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक दीवाना, बातूनी, बुजुर्गों की सम्पत्ति बरबाद करने वाला, बीते हुए समय को याद करके रोने वाला होता है।

लग्न भंग योग–लग्नेश चन्द्रमा बारहवें स्थान में होने से यह योग बनता है। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता तथा उसके जीवन में संघर्ष की स्थिति बनी रहती है।

निशानी–जातक का शरीर दुबला-पतला होगा। यात्राएं अधिक होंगी।

विशेष–'व्ययभाव गते चन्द्र वामचक्षु: विनश्यति' बारहवें घर में शत्रुक्षेत्री चन्द्रमा जातक की बाईं आंख को नुकसान पहुंचाता है। समदंडी ग्राम के एक वैद्यराज की कुण्डली मेरे सामने आई उनकी कुण्डली में यह योग था। वे सरकारी वैद्य थे तथा स्वस्थ थे। उन्होंने मेरी भविष्यवाणी को हंसी में टाल दिया। एक बार वे पड़ोस के गांव जेठन्तरी में मरीज देखने मोटर-साइकिल पर गए। पूर्णिमा की रात थी और चन्द्रमा पूर्ण यौवन पर था। गांव में कच्चे रास्ते में एक खड्ढा आया। मोटर-साइकिल उछली और हैण्डल पर लगा कांच उछल कर दूर जा गिरा परन्तु हैण्डल वैद्यराज के बाईं आंख में घुस गया। बाईं आंख हमेशा के लिए नष्ट होकर विकृत हो गई वे ज्योतिष शास्त्र के अनन्य भक्त बन गए।

जीवन में प्रतिष्ठा एवं सफलता–जातक जबान का कच्चा, ससुराल को डुबोने वाला अनेक कष्ट व दिक्कतों के साथ आगे बढ़ने वाला होता है। राजनीति में इन्हें प्राय: धोखा मिलता है। जातक यात्राएं बहुत करेगा।

दृष्टि–यहां से चन्द्रमा सातवीं मित्र दृष्टि से षष्ठ भाव को गुरु की धनु राशि में देखता है अत: जातक गुप्त शत्रुओं से पीड़ित रहेगा।

दशाफल–चन्द्रमा की दशा मध्यम फल देगी। यात्राओं में धनहानि व धोखा होगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चन्द्रमा के साथ सूर्य होने से ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की अमावस्या को होगा। जातक का जन्म प्रातः काल 8 से 10 बजे के मध्य होता है। सूर्य के कारण धनहीन योग बनेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
2. **चन्द्र+मंगल**–चन्द्रमा के साथ पंचमेश+दशमेश मंगल होने से **'विद्याभंग योग'**, **'राजभंग योग'** बनेगा। ऐसे जातक को विद्या प्राप्ति में बाधा आएगी। सरकारी कार्य में बाधा आएगी।
3. **चन्द्र+बुध**–चन्द्रमा के साथ पराक्रमेश+व्ययेश बुध होने से एक बार पराक्रम भंग होगा। व्ययेश के व्यय स्थान में स्वगृही होने से विपरीत राजयोग बना। फलतः जातक धनी होगा। उसके पास निजी वाहन, निजी भवन होगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–चन्द्रमा गुरु के साथ होने से **'गजकेसरी योग'** बना परन्तु भाग्येश बारहवें **'भाग्यभंग योग'** बनाता है। षष्टेश बारहवें होने से **'विपरीत राजयोग'** भी बना। जातक धनवान होगा तथा निजी भवन एवं निजी वाहन का स्वामी होगा जीवन में संघर्ष रहेगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**–चन्द्रमा बारहवें और शुक्र यदि द्वितीय स्थान में हो तो जातक की दोनों आंखों की रोशनी चली जाएगी।
6. **चन्द्र+शनि**–सप्तमेश बारहवें स्थान पर होने से **'विलम्ब विवाह योग'** बनेगा। अष्टमेश व्यय भाव में होने से **'विपरीत राजयोग'** बनेगा। ऐसा जातक धनी होगा। निजी भवन, निजी गाड़ी वगैरह होगी पर मानसिक उद्विग्नता रहेगी। यहां चंद्रमा का अशुभत्व बढ़ेगा।
7. **चन्द्र+राहु**–चन्द्र+राहु की युति से यात्रा योग विशेष रहेगा। यात्रा में कष्ट होगा। दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **चन्द्र+केतु**–चन्द्र+केतु की युति से ज़ातक तीर्थयात्राओं, धार्मिक व परोपकार के कार्यों में रुचि लेगा।

द्वादश भाव के चंद्रमा का उपचार–

1. चावल, चांदी, दूध आदि का दान करना।
2. सच्चा मोती (दूध रंग) धारण करना, मोती के अभाव में चांदी धारण करें या चंद्र यंत्र पहनना।
3. दूध का बर्तन रात को सिरहाने रखकर सुबह वटवृक्ष में डालना।
4. सोमवार का व्रत रखना।
5. शिवजी की उपासना करना।

कर्क लग्न में मंगल की स्थिति

कर्क लग्न में मंगल प्रथम भाव में

कर्क लग्न में मंगल परम योगकारक ग्रह होता है। लग्न में स्थित होने के कारण यह नीच राशिगत हो जाएगा। पंचमेश एवं दशमेश होने के कारण विद्वान लोग मानते हैं कि कर्क लग्न में मंगल नीच का फल नहीं देता। सन्तान उत्तम होगी।

निशानी—ऐसा जातक **'इंसाफ की तलवार'** होता है। अपने वचन के लिए जातक मर मिटता है। उसकी जबान से निकला शब्द पत्थर की लकीर होता है। छोटे-बड़े भाइयों की शर्त नहीं। पर अकेला भाई नहीं होगा। चेहरे पर लाल मस्सा, शस्त्र द्वारा चोट या चेचक के निशान होंगे।

जातक की माता बीमार रहती है। ऐसे जातक की किस्मत 29 वर्ष की आयु के बाद चमकती है और जातक अपनी किस्मत आप चमकाता है। ऐसे जातक दृढ़-निश्चयी व साहसी होते हैं तथा युद्ध में शत्रु को परास्त करने में पूर्ण सक्षम होते हैं।

मंगल की यह स्थिति कुण्डली को मांगलिक बनाती है। ऐसे जातक के जीवनसाथी की कुण्डली भी मांगलिक होनी चाहिए, तभी वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+चन्द्र**—यदि मंगल के साथ चन्द्रमा हो तो **'नीचभंग राजयोग'** एवं **'लक्ष्मी योग'** की क्रमशः सृष्टि होगी। इससे मंगल का नीचत्व समाप्त होकर उसकी सकारात्मक शक्ति बढ़ जाती है। जातक धनाढ्य होगा।
2. **मंगल+सूर्य**—धनेश सूर्य की योगकारक मंगल के साथ युति शुभ है। जातक परम भाग्यशाली एवं धनवान होगा। जातक स्वयं के पराक्रम पुरुषार्थ से आगे बढ़ेगा।
3. **मंगल+बुध**—तृतीयेश बुध लग्न में शत्रुक्षेत्री होगा। जातक पराक्रमी होगा पर शरीर में रोग रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**—यदि मंगल के साथ गुरु हो तो **'नीचभंग राजयोग'** एवं **'हंस योग'** की क्रमशः सृष्टि होती है। ऐसे में मंगल का नीचत्व समाप्त होकर उसकी सकारात्मक शक्ति बढ़ जाएगी। जातक राजा के सामान प्रभुत्त्व सम्पन्न एवं ऐश्वर्यशाली होगा।

5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ सुखेश शुक्र की युति लाभदायक रहेगी। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे। जातक कुल का नाम रोशन करेगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ सप्तमेश शनि होने से जातक की पत्नी से कम पटेगी। शत्रुओं से लड़ता रहेगा पर अंत में विजयी होगा।

कर्क लग्न में मंगल द्वितीय भाव में

मंगल पंचमेश व दशमेश होकर दूसरे भाव में स्थित होने पर जातक अपने छोटे बहन-भाइयों को पालता है। यह मंगल मित्रक्षेत्री है पर सिंह (अग्नि) राशि में होने से जातक की भाषा कठोर एवं अप्रिय होगी।

निशानी—जातक की प्रथम संतति पुत्र होता है तथा जातक विवाह के बाद तरक्की को प्राप्त करता है। जातक **"दूसरों को पालने वाला"** होता है।

पंचमेश होकर मंगल दूसरे भाव में स्थित होकर अपने घर को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। यह उत्तम सन्तति देगा परन्तु एक-दो गर्भपात या सन्तान की अपरिपक्व अवस्था में मृत्यु हो सकती है।

विद्याध्ययन में रुकावट, लापरवाही होते हुए भी जातक विद्या पूरी करेगा। जातक को पिता से ज्यादा लाभ नहीं होगा।

दशमेश मंगल दशम भाव से कोण (पांचवें) में होने से जातक को अच्छी नौकरी मिलेगी।

अष्टम भाव पर दृष्टि होने से शरीर में गुप्त रोग हो सकता है। खराब दशा या अशुभ गोचर में यह मंगल अकस्मात् रोग देगा।

जातक का छोटा भाई नहीं होगा यदि होगा भी तो उससे सम्बन्ध अच्छे (मधुर) नहीं होंगे।

दशाफल—मंगल की दशा अच्छी जाएगी। मंगल की महादशा में सूर्य या शनि का अन्तर कष्टदायक होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+चन्द्र**—मंगल के साथ चन्द्रमा धन स्थान में **'लक्ष्मीयोग'** बनाएगा। जातक अपने पुरुषार्थ से खूब धन कमायेगा।
2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य स्वगृही होगा। ऐसा जातक विद्या के द्वारा, संतान के द्वारा धन व यश कमायेगा।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध जातक को पराक्रमी एवं खर्चीले स्वभाव का बनाएगा।
4. **मंगल+गुरु**—भाग्येश गुरु की मंगल के साथ युति जातक को पैतृक सम्पत्ति दिलायेगी।
5. **मंगल+शुक्र**—यहां मंगल के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र की युति धन स्थान में जातक को माता की सम्पत्ति दिलाती है। जातक धनवान होगा।

6. **मंगल+शनि**–यहां मंगल के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि की युति धन स्थान में होने से पत्नी से मनमुटाव करायेगी। जातक की वाणी दूषित होगी।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु धन के घड़े में छेद का काम करेगा। जातक की वाणी दम्भी होगी।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु धन खर्च में बढ़ोतरी करेगा। व्यर्थ के रुपये खर्च होते रहेंगे।
9. मंगल दूसरे भाव में एवं तीसरे भाव में शनि हो तो जातक के सन्तान होने की सम्भावना क्षीण हो जाती है।

द्वितीय भाव के मंगल का उपचार–

1. ऋणमोचन मंगल स्तोत्र का पाठ करें।
2. लाल या नारंगी रंग का सुगन्धित रुमाल जेब में रखें।

कर्क लग्न में मंगल तृतीय भाव में

कर्क लग्न में तृतीय भाव में मंगल कन्या राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर मंगल छठे भाव, नवम भाव एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। यह मंगल व्यक्ति को दुस्साहसी बनाता है। जातक को छोटे भाई बहन का सुख कम प्राप्त होगा।

पंचमेश होकर पंचम भाव से ग्यारहवें स्थान में स्थित होने के कारण सन्तान के लिए यह मंगल उत्तम फलदायक है। संतान को लेकर जातक का धन खर्च होगा।

दशमेश होकर दशम भाव से छठे स्थान पर स्थित होने के कारण नौकरी अच्छी मिलेगी पर परिश्रम ज्यादा करना पड़ेगा।

मंगल की नवम भाव पर दृष्टि होने के कारण जातक के अपने पिता से अच्छे सम्बन्ध होंगे। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

निशानी–चिड़ियाघर का कैदी, शेर जिसको अपनी ताकत का पता नहीं।

दशा–मंगल की दशा, अंतर्दशा अच्छी जाएगी।

विशेष–यदि तृतीयस्थ मंगल के साथ राहु हो तो जातक के बाएं पैर में दोष होगा या वहां बड़ा निशान होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–मंगल के साथ चन्द्रमा की युति से '**लक्ष्मी योग**' बनेगा। जातक अपने पराक्रम से यथेष्ट धन कमाएगा। भाई बहनों से पटेगी।

2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य की युति भाइयों से एवं स्वयं के हुनर तथा विद्या (बुद्धि) बल से जातक आगे बढ़ेगा। जातक को भाई-बहनों का सुख मिलेगा। जातक पराक्रमी होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ उच्च का बुध जातक को साहसी पत्रकार, सम्पादक, लेखक एवं जनसम्पर्क अधिकारी बनाएगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु जातक को बड़े भाई का सुख देगा। वृद्ध जनों की सहायता-सलाह जातक के लिए सार्थक रहेगी।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ नीच का शुक्र जातक को अय्याश बनाएगा। स्त्री-मित्र व सौन्दर्य प्रसाधन पर जातक ज्यादा रुपया खर्च करेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि तृतीय स्थान में होने से कुटुम्ब में मतभेद की स्थिति बनाएगा। मित्रों में मतभेद रहेंगे।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु की युति जातक को पराक्रमी बनाती है परन्तु भाइयों से विवाद रहेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक को शत्रुंजयी बनाता है, पर कुटुम्बीजनों से मनमुटाव की स्थिति बनाए रखेगा।

तृतीय भाव के मंगल का उपचार–

1. मंगल नामावली स्तोत्र का पाठ करें।
2. भौम ग्रह शान्ति विधान का प्रयोग करें।

कर्क लग्न में मंगल चतुर्थ भाव में

कर्क लग्न में मंगल चतुर्थ भाव में तुला राशि का होकर सप्तम भाव, दशम भाव एवं एकादश भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेगा।

चन्द्रमा मातृकारक है तथा मंगल का मित्र है फलत: जातक की माता उत्तम होगी। मंगल जातक को जमीन एवं (बांध कांम) निर्माण, ठेकेदारी से लाभ देगा। जातक का निजी बंगला आलीशान होगा तथा उसे खेती या भूमि के क्रय-विक्रय से भी लाभ होगा।

निशानी–आप चाहे जन्म से छोटा हो मगर अपनी 28 वर्ष की आयु तक बड़ा हो जाएगा।

विशेष–ऐसे जातक की कुण्डली मांगलिक कहलाएगी क्योंकि मंगल चौथे भाव में है। ऐसे व्यक्ति के जीवनसाथी की कुण्डली भी मांगलिक होनी चाहिए, तभी वैवाहिक जीवन सुखमय होगा।

पंचमेश होकर पांचवें भाव से बारहवें स्थान में मंगल जातक को सन्तान नहीं होने देता। यदि सन्तान हो भी जाए तो जातक के साथ सम्बन्ध अच्छे नहीं होंगे।

दशमेश होकर दशम भाव से सातवें स्थान पर होने के कारण जातक का निजी उद्योग-धन्धा एवं व्यापार होगा। जातक अपने धंधे में प्रगति करेगा।

मंगल की सातवीं दृष्टि के कारण जातक को गुप्त रोग हो या गुप्तांग की बीमारी हो सकती है। जीवनसाथी से सम्बन्ध तनावपूर्ण होंगे तथा जातक का जीवनसाथी उससे पहले गुजर जाएगा।

दशाफल–मंगल की दशा अच्छी जाएगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–मंगल के साथ चन्द्रमा '**लक्ष्मी योग**' की सृष्टि करता है। ऐसे जातक को माता का सुख व भौतिक सम्पत्ति का सुख मिलता है।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य की युति जातक को भूमि लाभ, भूमि से धन लाभ दिलाती है।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध की युति जातक को उत्तम वाहन सुख, भूमि का सुख दिलाती है।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ भाग्येश गुरु जातक को भाग्यशाली बनाता है। जातक को पिता की सम्पत्ति तथा वाहन का सुख मिलेगा। जातक कुल का दीपक होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ स्वगृही शुक्र होने से '**मालव्य योग**' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगी। जातक बड़ी भूमि, भवन एवं वाहन का स्वामी होगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि उच्च का होगा। फलत: '**शशयोग**' बनेगा। जातक राजा-महाराजा की तरह पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा। जातक को घर का उत्तम मकान, उत्तम सुख मिलेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु माता की अकाल मृत्यु कराएगा। जातक को भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना पड़ेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु माता को दीर्घ बीमारी देगा। जातक को वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

चतुर्थ भाव के मंगल का उपचार–

1. श्री मंगल अष्टोतर शतनामावली का पाठ करें।
2. त्रिरत्न का त्रिगुणात्मक लॉकेट धारण करें।

कर्क लग्न में मंगल पंचम भाव में

कर्क लग्न में पंचमस्थ मंगल स्वगृही होगा तथा पंचम भाव में स्थित होकर आठवें भाव, एकादश भाव एवं द्वादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

जातक को उत्तम सन्तति की प्राप्ति होगी। सन्तति अल्प होगी। अपने भाई-बहनों के साथ जातक के अच्छे सम्बन्ध होंगे।

दशम भाव का स्वामी होकर दशम भाव से आठवें होने के कारण जातक को धंधे व्यापार में काफी मेहनत करनी पड़ेगी।

मंगल की अष्टम दृष्टि जातक के जीवन में अचानक योग कराती है। यह मंगल पति-पत्नी के बीच मनोमालिन्यता उत्पन्न करता है।

मंगल की एकादश भाव पर दृष्टि जातक को सुन्दर मित्रों से लाभ देती है।

निशानी–रईसों का बाप-दादा।

दशाफल–मंगल की दशा उत्तम फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–यदि मंगल के साथ चन्द्रमा हो तो **'नीचभंग राजयोग'** की सृष्टि होगी। साथ ही चन्द्र+मंगल युति से **'लक्ष्मी योग'** भी बनेगा। यहां चन्द्रमा का नीचत्व भंग होकर यह जातक को अपार धन दिलाने में सहायक भूमिका निभाएगा। (गुरु, सूर्य)
   (क) तृतीय भाव में यदि पुरुष ग्रह (गुरु, सूर्य) हों तो चार भाई होंगे।
   (ख) तृतीय भाव में यदि स्त्री ग्रह (चन्द्र, शुक्र) हों तो तीन भाई होंगे।
   (ग) तृतीय भाव में पाप ग्रह (शनि, राहु) हों तो पांच भाई होंगे।
   (घ) तृतीय भाव में बुध हो तो दो भाई होने चाहिए।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को राजकीय कृपा से धन लाभ देगा। जातक को सरकारी खजाने से वजीफा व धन मिलेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध पराक्रम में वृद्धि कराएगा तथा जातक को दो कन्या संतति भी देगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु पांच पुत्रों का योग बनाता है। जातक धैर्यवान होगा तथा नैतिक नियमों-परम्पराओं के निर्वाह के प्रति जागरुक होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र व्यापार से लाभ देगा। जातक को पुत्र के साथ कन्या संतति भी अवश्य होगी।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि की युति विद्या में रुकावट दिलाएगी। एकाध गर्भपात संभव है।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु विद्या तथा संतान में बाधा दिलाएगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु गर्भस्राव कराता है। संतान शल्यचिकित्सा से हाथ लगती है।

9. **मंगल+राहु**–पंचमस्थ मंगल के साथ राहु हो तो स्त्री जातक का मासिक धर्म रुकावट के साथ अनियमित आता है।

पंचम भाव के मंगल का उपचार–

1. त्रिरत्न त्रिगुणात्मक लॉकेट पहने।

कर्क लग्न में मंगल षष्टम भाव में

कर्क लग्न में छठे स्थान पर स्थित मंगल धनु राशि में मित्रक्षेत्री होगा जहां बैठकर वह भाग्य भवन, व्यय स्थान एवं लग्न स्थान को देखेगा। यह स्थिति जातक को रोग-शत्रु एवं कर्ज पर विजय दिलाती है।

विद्याभंग योग–पंचमेश मंगल छठे जाने से यह योग बना। ऐसे जातक के विद्याध्ययन में रुकावट जरूर आती है।

पुत्रहीन योग–यदि पंचम भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो, तो यह योग बन जाता है। जातक को पुत्र सन्तति नहीं होती। यह मंगल पंचम भाव से दूसरे स्थान पर होने से कुछ शुभ फल भी देगा।

दशमेश मंगल दशम भाव से कोण (नवें) में होने के कारण नौकरी अच्छी मिलेगी। नौकरी में प्रमोशन होता रहेगा। कम परिश्रम पर भी अधिक लाभ मिलने का योग है।

नवम भाव पर मंगल की दृष्टि पिता की सम्पत्ति के निमित्त शुभ नहीं मानी गई है। जातक व्यसनी होगा तथा फालतू कामों के लिए रुपया खर्च करेगा। जातक भाई-बहनों का शुभचिन्तक होगा।

लग्न स्थान (प्रथम भाव) पर मंगल की दृष्टि जातक को उग्र स्वभाव वाला स्वामिभानी बनाती है। जातक के चेहरे पर गंभीर चोट का निशान होना चाहिए।

निशानी–साधु-संन्यासी स्वभाव जो अपने आपको कष्ट दे। जातक आप अकेला धार्मिक होगा तथा माता-पिता के द्वारा तरस कर ली गई सन्तान होगा।

दशाफल–मंगल की दशा अच्छा फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–मंगल के साथ चन्द्रमा **'लग्नभंग योग'** बनाएगा। ऐसे जातक को जीवन में आगे बढ़ने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ेगा। किसी भी कार्य में प्रथम प्रयास में सफलता नहीं मिलेगी।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य होने से **'धनहीन योग'** बनेगा। ऐसे जातक के पास बहुत परिश्रम करने पर भी धन इक्ट्ठा नहीं होगा। सरकारी नौकरी छूट जाएगी।

3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध होने से **पराक्रमभंग योग** बनता है। साथ ही विपरीत राजयोग भी बनता है। ऐसा जातक धनी होगा। जातक को उत्तम वाहन का सुख मिलेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु जहां '**भाग्यभंग योग**' बनाता है वहां षष्टेश अष्टम में स्वगृही होने से विपरीत राजयोग बनाता है। जातक धनी तथा उत्तम वाहन, भवन के सुख से युत होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र होने से '**लाभभंग योग**' एवं **सुखहीन योग**' बनते हैं। जातक को गुप्त बीमारी एवं रोग की संभावना रहेगी।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि होने से जहां '**विवाहभंग योग**' बनता है वहीं अष्टमेश छठे होने से '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। जातक धनी होगा। वाहन सुख भरपूर पर दुर्घटना का भय रहेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु जातक का शत्रु संघर्ष में विजय दिलाता है परन्तु दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु पांव में चोट पहुंचाएगा। जातक को ऑपरेशन का भय रहेगा।

षष्टम भाव के मंगल का उपचार–

1. भौम के तांत्रिक मंत्रों का प्रयोग करें।
2. अंगारक स्तोत्र का पाठ करें।
3. मंगल जातक मंगलागौरी व्रत करें।
4. विवाह में विलम्ब या बाधा महसूस होने पर घट विवाह का प्रयोग करें।

कर्क लग्न में मंगल सप्तम भाव में

कर्क लग्न में मंगल परमराजयोग कारक होकर सप्तम भाव में उच्च का स्थित होने से '**रुचक योग**' की सृष्टि होती है। धन-यश-कीर्ति व सत्ता के लिए यह सबसे उत्तम योग है। ऐसा जातक मजबूत कद-काठी वाला व बलवान होकर राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। ऐसा जातक राज्याधिकारी होता है तथा इंसाफ को तौलने वाला होता है।

निशानी–जातक अपने कुटुम्बी-परिवार को विष्णु की तरह पालने वाला प्राणी होता है। रोते को हंसाने वाला एवं खुद के पुरुषार्थ से दो मंजिला नया मकान बनाने वाला होता है।

मंगलीक–मंगल सातवें होने के कारण यह कुण्डली प्रबल रूप से मांगलिक हो गई है। ऐसे जातक का जीवनसाथी भी मांगलिक होना चाहिए तभी दाम्पत्य जीवन में सुन्दरता आती है। यद्यपि उच्च का मंगल मंगलदोष को कम करता है फिर भी पति-पत्नी के मध्य संघर्ष रहेगा।

पंचमेश सातवें भाव में उच्च का होने के कारण जातक की सन्तान पराक्रमी तथा बुद्धिशाली होगी एवं सन्तान के माध्यम से जातक का भाग्योदय होगा।

दशमेश मंगल दशम भाव से दसवें स्थान पर होने से नौकरी-व्यापार उत्तम। जातक की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। मंगल की द्वितीय भाव पर दृष्टि होने के कारण दाईं आंख में दोष, वाणी रौबीली रहेगी क्योंकि द्वितीय भाव वाणी का है।

दशाफल–मंगल की दशा भाग्योदयकारी होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–मंगल के साथ चन्द्रमा **'महालक्ष्मी योग'** बनाएगा। लग्नेश के लग्न को देखने से जातक को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। अल्प प्रयास का बहुलाभ होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य विवाह से धन दिलाएगा। विवाह के बाद जातक की किस्मत चमकेगी। जातक का भाग्योदय तीन किश्तों में होगा। प्रथम 28वें वर्ष में, दूसरा विवाह के बाद, तीसरा प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को अत्यधिक पराक्रमी बनाएगा। जातक पत्नी व गुप्त कार्यों में अधिक धन खर्च करेगा।
4. **मंगल+गुरु**–यदि मंगल के साथ गुरु हो तो **'नीचभंग राजयोग'** की सृष्टि होगी। गुरु का नीचत्व समाप्त होकर वह शुभ फलदाई होकर जातक के भाग्य निर्माण में सकारात्मक भूमिका निभाएगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक को माता की सम्पत्ति दिलाएगा। सभी भौतिक सुख व ऐश्वर्य देगा। व्यापार-ठेकेदारी में लाभ होगा। जातक कुल का नाम रोशन करेगा।
6. **मंगल+शनि**–यदि मंगल के साथ शनि हो तो **'किम्बहुना योग'** बन जाता है। शनि स्वगृही और मंगल उच्च का, इसमें अधिक और क्या? जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद हो जाता है। उसका ससुराल धनवान होता है। यदि ऐसी ग्रह स्थिति में चन्द्रमा भी इनके साथ हो जातक स्वयं लखपति होता है तथा विवाह के बाद करोड़पति हो जाता है क्योंकि चन्द्र+10 मंगल में **'महालक्ष्मी योग'** की सृष्टि होती है।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु विवाह में समस्या पैदा करेगा। जातक अन्य स्त्रियों से भी शारीरिक सम्पर्क रखेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक में धूर्तता के लक्षण उत्पन्न करेगा। जातक विपरीत लिंगियों के प्रति सहज ही आकर्षित होगा।

सप्तम भाव के मंगल का उपचार–

1. त्रिरत्न त्रिगुणात्मक लॉकेट पहनें।
2. भौम मंगल स्तोत्र का प्रयोग करें।
3. विलम्ब विवाह या अविवाह की स्थिति में घर विवाह का प्रयोग करें।